रनकौं नवहिं पइये ॥ इतिश्रीतरा । अथश्रीरामोगाः ॥
परम पुनीत प्रीति रीतिको जानहीं दृढ करि चरण
कमल जोगहिये ॥ कौन स्वामी गिरि धरन श्रीवि
ठल पहि निधि छांडि अब कहो जो जइये ॥
रागिनी रामकली ताल ३ जमुनाकेपद ॥
चित्तमें जमुना निस दिन जो राखो ॥ इतिश्रीस्याई

भोग: ॥ तन मन धन सब लाल गिरि धरनकौं दे
करि बरण जब चितहिं लावे ॥ छीत स्वामी गिरि
धरन श्रीविठल नैननि प्रकट लीला दिखावे ॥
रागिनी रामकली ताल २ जमुनाके पद ॥ गुण
अपार एक मुख कहां लौं कहिये ॥ इतिध्रुस्याई ॥
तजो साधन भजो नाम जमुनाजीकौ लाल गिरि ध

के झूले ॥ इतिअस्थाई ॥ लुब्ध मकरंदके बस
भए भ्रमर जे रवि उदै देषि मानौ कमल फूले ॥
इंतरा । अथआभोगः ॥ करत गुंजार मुरली
लेके सांवरो व्रज वधू सुनत तन सुधि जो भूले ॥
चतुर्भुज दास जमुना प्रेम सिंधुमे लाल गिरिध
रन अब हरषि फूले ॥ रागिनी रामकली ताल

भक्तके वस कृपा करतहैं सर्वदा ऐसो जमुनाजी को
है जो साको ॥ इंमेतता । ग्रपयग्राभोगः ॥ जाहि म
वैनै जमुनैनै नाम यह उचरै संग कीजे ग्रव जाइ ता
को ॥ चतुर्भुज दास ग्रव करतहै सवनसौं तातैं ज
मनैं जमनैं जो भाको ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ जमुनाके पद ॥ प्रागपति विहरत जमुना

रा॰रा॰
५.
९०

रसमैं भीजे ॥ रागिनी रामकली ताल ३ जमु
नाके पद ॥ हेत करि देत जमुनैं वास कुंजे ॥ ३
नित्य रस्याई ॥ जहां निसि वासर रासमैं रसिक ब
र कहालौं बर निये प्रेम पुंजे ॥ ३ इन्यनरा ॥ श्रुप
श्रीभोगः ॥ थकित सलिला नी रथ किन ब्रज व
धू भीर कोउ वन पवन धीर मुरलि धुनि जे ॥ व

जमुनाके पद ॥ बार बार जमुनें गुण गान
कीजे ॥ इतिश्रम्याइ ॥ एहि रसना तैं जो नामर
स अमृत भागय जाके सोई जो लीजे । रत्यंश्रुतरा:
श्रयश्रामोगा: ॥ भोंन तनया दया अतिहि करु
णा मया इनकी करे श्रामया सदा जीजे ॥ चन
भुज दास कहे सोई पिय पास रहैं जोई जमुनाके

रा॰ रा॰
९२
91

कौ रूप अद्भुत देत आप जैसौ ॥ नंददास जो जा
नि दृढ चरण गहे एक रसनी कहा कहूं विसैसी
रागिनी रामकली ताल ३ जमुनाजी के पद ॥
नेह कारन जमुनै प्रथम आई ॥ इतिश्रुस्याई ॥ भ
क्त के चित्त की वृत्ति सब जानहीं ताहितें अतिहीं
आतुर जो धाई ॥ इंगतरा ॥ अपुष्टमोक्षः ॥ जै

त्रिभंज दास जमुनैं जो पंकज जानि मधुप कीना
ई चित लाइ गुंजे ॥ रागिनी रामकली ताल
जमुनाके पद ॥ भक्त पर करी कृपा जमुन ऐसी
इतिश्रम्याई ॥ छांडि निज धाम विश्राम भूतल
कियो प्रकट लीला दिखाई जो तैसी ॥ इत्येतरा
थ्रयश्राभोगः ॥ परम परमारथ करत हैं पवनि

नरा ॥ अथआभोग: ॥ सकल सुख देन हार तातें
करो उच्चार कहत हौं बार भूलि जिनि जावो ॥
नंददासको आस जमुनें सरन करी तातें कहे
घरी घरी चित लावो ॥ रागिनी रामकली ताल
गं जमुनाजी के पद ॥ भाग्य सौभाग्य जमुनें
जो देई ॥ इतिअस्थाई ॥ तान लौकिक तजे श्रेष्ट

सौ जाके मन हतौ मन इच्छया ताहि तैसो साधु जो
पुजाई ॥ नंददास प्रभु नाथ ताहि परवी ऊत जो
ई जमुना जूके गुण जो गाई ॥ रागिनी रामकली
ताल ॐ जमुनाजीके पद ॥ जमुनैं जमुनैं जमु
नैं जो गावो ॥ इतिश्रुस्याई ॥ सेस सहस्र मुख गा
वत निस दिन पार वेही पावत नाहि पावो ॥ उंप

ग·ग·
९३
93

मर्यादा रिक राखे लईं इष्टि कौं इष्टि पति निजैस्मानौं
अंग्नंतरा । अथ आभोगः ॥ स्वाति जल बूंद जब पर
तहै जाहिमें नाहिमें होनते मोजो वानो ॥ जमुनैं रू
पा जान सिंधुजल वहिमान सूर ग्रा सूरकहे लो व
खानौं ॥ रागिनी रामकली ताल जमना
पद ॥ भक्तकौं स्याम जमुनैं श्याम ओरे ॥ इतिश्रस्या

जमुनैं भजे लाल गिरिधरनकौं ताहि वर मिलेगी
रंगीनता ॥ अथ रागभैरौः ॥ भगवदी सेवा करि वात
उनकी ले सदा सान्निध्य रहै केली मेरी ॥ नंददास
के जाहि वल्लभ कृपा करे ताके जमुने सदा वस होरे
री ॥ रागिनी रामकली ताल ५ जमुनाजीके पद
नाम महिमा ऐसी जो जानैं ॥ इतिश्रस्थाई ॥

रा॰गा॰
९४

94

देखिहूं नहीं सुनी नाहि कहि आपनी ताकी यह बा
नकोऊ कैसे मानैं ॥ इतंनरा । अथआभोगः ॥ ता
हीके हाथ निरमोल नगादी जिये जोई नीकें करि प
रखि जानैं ॥ सुरकहि हूरने हरवसिये सदा जमुन
कौं नाम लीजे जो कहानैं ॥ रागिनी रामकली ता
ल जमुनाके पद ॥ चर्चरी ॥ जमुनैं पति दास

ई ॥ ग्यानहीन्हात ग्रंथ जानत ताके सकल जगमह रहत
ताहि हाथ जोरै ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः प्रेमभकी
विना प्रेम भव कहा ज्ञान हीं जाकौं छिमा नहीं चित
चोरै ॥ प्रेमके सिंधुकौं मर्म जान्यौं नहीं स्वर कहि कहा
भयो देह चोरै ॥ रागिनी रामकली ताल जमता
पद ॥ फलफलित होत फल रूप जातें । इति गुरुस्थाई

गा॰रा॰
९५

95

नाऊं ॥ इतिश्रुस्थाई ॥ ऐसी महिमा जानि भक्तकी
ख्यावदानि जोई मांगों सोईजो पाऊं ॥ इंयेतरा ॥ अ
थश्राभोगः ॥ पतित पावन करन नाम लीनैं नर
न हरुकरि गहे चरण कहुन जाऊं ॥ ॐभन दा
स गिरि चरण मबल निरावैं पही वाहन नहीं
पलक लाऊं ॥ रागिनी राम कली ताल ८ जम

के चिन्ह प्यारे ॥ इति श्रस्थाई ॥ भगवदीकौं भगवद
सेवा मिलि रहे ताके वसन हीयें आए प्यारे ॥ इत्यंतरा
अथ आभोगः ॥ गद्य जसवैं वात जोई अव जानहीं ता
के मन मोहन नैन तारे ॥ स्हर स्याव मार निहारिवे पा
वैंही जापरहोय वलभ कृपारे ॥ रागिनी रामकली
ताल ॐ जसनापद ॥ जसवैं रस खानकौं सीस

रा॰रा॰
९६

96

रागिनी रामकली ताल ३ जमुनापद ॥ जमुनैं
पर तन मन प्राण वारौं ॥ हरिप्रिय प्याई ॥ जाकी
कीरति विसद कौंन पुर कहि सके नाहि नैननतैं
नैनें डटावौं ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ चरण
कमल इनके जो चिंतन रहौं निस दिन नाम मुख
तैं उचारौं ॥ प्रेमधन दास कहे लाल गिरि धरन म

नाकेपद ॥ जमुनैं ग्रवानित गुण गनैं न जाही ॥
रतिचुम्याई ॥ जमुना नट रैंन शतनैं होय वेन उ
नकी सुख देनकी कहे बडाई ॥ इसेनग ॥ ग्रथ
ग्राभोग: ॥ भक्त मांगत जोई देत ते सो छिन सोई
ऐसी करे कौन प्रण निवाही ॥ ऊँभन दास वि
रि धरन सुख निरखतैं कहो कैसे कर मन सचाई ॥

रा०रा०
९०
97

भन दास जो प्रभु कौ मुख देखत पहि जिय लेखत
जमनैं जो भरना ॥ रागिनी रामकली ताल ३ ॥
जमुना पद ॥ रामरस सागरे जमुन जानी ॥ इति
प्रस्याई ॥ प्रति छिन उनन बहत धारा नैनैं राखत
अपने उर मा ऊठानी ॥ इंतरा ॥ अथ आभोगः
भक्त कौ सहे भार देत प्राण अधार अतिहि बोलत

खे इनकी कृपा भई तो निहारौं ॥ रागिनी रामक
ली ताल जमुना पद ॥ भक्त इच्छा पूरन ज
मने जो करना ॥ इनि गुसाईं ॥ विनहि मांगे देत
कहें लौं कहूं देत जैसे काहू को कोऊ होय भरना
इतेतना । ग्रथनाभोगनः ॥ जमुना पुलिन रास ब्र
ज वधू लीयें पास मेंटमेंट हास मन जो हरना ॥ के

रा.गा.
५८

जैसें गावत जननी पुत्र वारे ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन
सेवा विहरतैं भक्त को एक छिनना विसारे ॥
रागिनी राम कली ताल जमनाजी के पद ॥
कौन पैं जात जस वैनै जो वरनी ॥ इति अस्थाई ॥ स
वहिन को मन मोहन हरत सो पीय को मन एजो
हरनी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ इन विना एक

मधुर मधुर बानी ॥ श्रीविठल गिरिधरन वर बस

कीये कौन पैजात ममहिमा बखानी ॥ रागिनी

रामकली ताल ३ जमुनापद ॥ भक्तप्रति पा

लि जंजाल टारे ॥ इतिअस्थाई ॥ अपने रस रंगमें म

गरावत मदा सर्वदा जोई जमुने उधारे ॥ इत्यंतरा॥

अथआभोगः ॥ इनकी कृपा अब कहांलो वरनिये

रस परम प्रीतिहि दुर्लभ परम ह्लादि सवारे करम
प्रेम पागे ॥ श्रीविठ्ठल गिरिधरन सोंनिधि अबभ
क्तकों देतहों बिनहि मांगे ॥ रागिनी रामकली
ताल ३ जमुनाको पद ॥ जमुनें तुमसों एक कहो
जु तुमहीं ॥ इतिध्रुवस्थाई ॥ करि कृपा दरस नि
सि बासर दीजिये तिहारे गुण गानको रहे उद्यमहीं

छिन रहेन जीवन धन ब्रज चंद मन आनंद करनी ॥
श्रीविठल गिरिधरन सहित आय भक्त के हेत अव
तार धरनी ॥ रागिनी रामकली ताल जमुनापद
जमुना जो नाम लेसो सभागी ॥ इति श्रम्याई ॥ सो
ई रस रूपको सदा चिंतन करे नेक नहि कलपरे
जाहि लागी ॥ इअंतरा ॥ अथआभोगः ॥ उहि मा

रा॰रा॰ गिनी जिनके ऐसे धनी सुंदर श्याम ॥ इत्येनरा ॥

१००

अथश्रा भोगः ॥ देन संजोग रस ऐसी पीयहै जो

बस सुनन सजस नीहारे पूरे सब काम ॥ कु

ल दास निकरहे भक्तकै कारनै जमन एक छिन

नहीं करे विश्राम ॥ रागिनी राम कली ताल

जमना पद ॥ जमनेके नाम अब हर भाजे ॥

हस्यैतरा ॥ अथ छाछभोगः ॥ तुमसजपावैते सकल नि
धि पावैंही चरण कमल चित भ्रमर भ्रमैंही ॥ कृ
ष्णदास निकरे कौंन यह तप कियो तिहारे छग र
हत हेलता डुमैंही ॥ रागिनी रामकली ताल
जमुनाके पद ॥ ऐसी केजी कृपा लीजिये नाम
रतिश्रम्याई ॥ जमुनैं जग वेदनी गुणन जात जो ।

रा॰रा॰
९८

जमनैंके नामनेंई जोलेहैं ॥ इतिप्रस्थाई ॥ जिन
की लगन लागी नंदलालसों सरवस देकें निकटरैहैं
इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ जिनहि स्याम जानवा
त मनमें वांनि विना पहि वांनि कैसें जोपैहैं ॥ कृ
स दासनि जमने नामनौका भक्त भव सिंधुतें यों
जोनरैहैं ॥ रागिनी राम कली ताल जमनाप

इतिश्रीस्थाई ॥ जिनके गुण सुनिके लाल गिरिधर
न पिय आय मन भाव ताकैं विराजे ॥ इसेनरा ॥
अथआभोगः ॥ नेछिनका जनोके जोमगरे सर
न जाइकैं मिलत व्रजवधू समाजे ॥ कृसदास
निकहै नाहिं अब कौंन डर जाके ऊपर जमुनैसी
गाजे ॥ रागिनी रामकली ताल जमुनापर

रा॰रा॰
१०२

102

लीनाल जमुनापद ॥ जमुनैं हाव कारनी प्राण पतिकौं ॥ इति स्थाई ॥ पीयजे भलन जिन्हैं हाथ करि देत तिन्हैं कहालौं कहिये अति हि इन के हितकै ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ पिय संग गौन करैं अति रस उमगि भरे देत नारी करैं लेत जिनकै ॥ दास परमानंद पाय अब ब्रज चंद

द ॥ जमुनैंकी आस अब करत है दास ॥ इतिअस्था

ई ॥ मनक्रम बचन कर जोरिकैं मांगत निसदिना

राखिये अपनैंही पास ॥ इंतरा ॥ अथआभोगः

जहां अब रसिकबर रसिकनी राधिके दोउ जन संग

मिलि करत हैं रास ॥ दास परमानंद पाय अब ब्रज

चंद देखि सिरानें नैंन मंद हासें ॥ रागिनी राग क

रा॰रा॰
१०३
103

परमानंदपाय अब ब्रज चंद राखे अपने शरण
रहे जो जान ॥ रागिनी रामकली ताल
जमनापद ॥ जबतें पियकों बदननम जो कीनें
इति अस्थाई ॥ प्रेमके फंदनें बोरा राखे निकट
पैसे निरमोल नग मोल लीन ॥ इत्यंतरा ॥ अथ
आभोग: ॥ नम जो पढावत नहीं अब पावत

परि जोनन अति प्रेम रानिके ॥ रागिनी राम क
ली ताल ३ जमनापद ॥ जमनेके साथ अब फि
रतहैनाथ ॥ इति अस्थाई ॥ भक्तके मनके मनोर
थ हरत सबे कहालौं कहिये अब इनको जो साथ
इतेनरा ॥ अथआभोग: ॥ त्रिविध स्रंगार भूषन
अंग अंग सजे बरनीन जातसो भावतो गात ॥ दास

रा॰रा॰
१०४

104

जाके भजनतें हरि हीयमें बसैं करैं कृपा सर्वदा अप
नी पितसाथ॥ कहत ब्रज पति नाम सबनसों स
मझाय परो इनके चरण और नाहि अपार॥
रागिनी रामकली ताल ८ जमनाके पद॥
एकरसना गुण अपार कैसो करि बरनों॥ इति श्र
स्याई॥ मायन सबे तजो भजो इनके नाम जाके ब

निस दिना तिहारे रस रंग भीने ॥ दास परमानंद

पाय अब ब्रज चंद परम उदार जमुनें जो दीने ॥

रागिनी राम कली नाल १ जमुनाजी के पद

जग मैं यही सार भजि ले बारं बार ॥ इति अस्थाई

श्रीजमुना जी कौ नाम जप निस दिना जाते उतरे

गो भव सागर पार ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥

रा॰ना॰
१०५

105

सिंधुमे प्रतिदिं हरषित भई कमलज्यों फूलनरवि
प्रकासे ॥ इत्यंतरा ॥ अथआभोगः ॥ ननैं मन
नैं श्रवणनैं सर्वदा करति हैं हरि सेवा मङ्गल हासे ॥
कहत ब्रजपति नम सबनसौं समझाय मिटे ज
मत्रास इनहीं उपासैं ॥ रागिनी रामकली ताल
जमनापद ॥ जमनासी नाहीं कोउ इगवकी

मिरन नैंकु सोनरनौं ॥ इत्येनरा ॥ अथ आसोगः

एकमनमैं निरधार करिके करो सदा नट इनके

निकट रहनौं ॥ कहन ब्रजपति नाम सबनसौं स

मझाय जपो हरि नाम और कछुकरनौं ॥ रागि

नी रामकली ताल ३ जमनतापद ॥ पिय मेरा

हेरा भरि करि विलासे ॥ इति अस्थाई ॥ स्वरनरम

रा॰रा॰
१०६

106

श्रीजमुनाजी तिहारो दरसहो पाउं ॥ इतिश्रुपाई ॥
श्रीगोवर्द्धन श्रीवृंदावन व्रज रज अंग लगाउं ॥ इत्ये
तरा ॥ अथग्रामोरा: ॥ दिन दस पांच रहें श्रीगोकुल
ठकुरांनी घाटन्हाउं ॥ दासन ऊपर करो कृपा निज
संतनके संग आउं ॥ रागिनी रामकली ताल
जमनाके पद ॥ जगतमें श्रीजमनाजी परम कृपा

हरनी ॥ इतिग्रस्थाई ॥ जाके स्नानतें मिटेतहे सब
पाप होतहे आनंद सबकी करनी ॥ इतिअंतरा ॥
अथआभोगः ॥ महिमाअगाय अपार इनके गुण स
कल जस वेद पुराण बरनी ॥ कहत ब्रजपति न
मसबनसों समझाय छूटे जम डरजो आवे इनकी
शरनी ॥ रागिनी रामकली ताल ॥ जमनापर

रा॰रा॰
५८

107

ततथै ततथै तता ॥ इति धुरपाई ॥ मृदंगाय मृदु
मृदु मतालउ पेग मिलि झति देत मधुप मधु मता ।
इंगेतता ॥ अथ आभोगः ॥ टिपारो सिर पीत अति
लाल काछनी बनी किंकिनी किनि किनि गति
लेत गावत स्वर समा ॥ गोविंद प्रभु गोप बालक
जयजय प्रेम प्रबरता ॥ रागिनी रामकली ताल

ल ॥ इति श्रुस्थाई ॥ बिनती करत नरत ह्रनि लीनी

भएहैं मोपै दयाल ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥

जोकोउ भजन करत निरंतर ताकै उरत जमकाल ॥

ब्रजपतिकी अति प्यारी कालिंदी ह्सिमरत होत नि

हाल ॥ रागिनी रामकली ताल जमुनापद ॥

चर्चरी ॥ हमरत मोहन रसिक सावन सहित ग्रग्रना

ग॰गा
१०८
त
108

जे सुंदर वरकी ॥ इति चुपाई ॥ नंद किसोर जसोदा
नंद नागरनंद वलं लाछन महरकी ॥ इतिचंतगा ॥ अथ
आभोगः ॥ नव विसाल मृदुहास मनोहर श्रवण सु
धा सुख मोहन करकी ॥ विहारी दास लोचन चको
र नित प्रेम पिया भज परकी ॥ रागिनी रामकली
ताल जमनापद चर्चरी ॥ सुभग श्यामके सेत

जमुनापद ॥ आरति कीजे श्याम सुंदरकी ॥ इति
अस्थाई ॥ नंद कुमार राधिका वरकी ॥ इत्यंतरा ॥
अथ आभोगः ॥ भक्ति करि दीप प्रेम करि बाती ॥
साधु संगति करि अनु दिन राती ॥ आरति ब्रजजुव
ती मन भावे श्याम लीला हित हरि वंश गावे ॥
रागिनी रामकली ताल ३ जमुनापद ॥ आरतिकी

जमनापट ॥ चर्चरी हारिमानी नाथ अंबर दीजै नंद
नंदन कुंवर रसिक वर मन हरन मनज गिरिवर धर
न नीत कीजे ॥ इति अस्थाई ॥ सकल ब्रज नागरी
हासिनभरी सदा नैन मोक सीन अति होत भीजे ॥
इंपतरा ॥ अथ आभोगः ॥ छीत स्वामी अमित गु
ण गणानि आगरे विनती करति सबै मानि लीजे ॥

राधिका विराजे ॥ इति गुण्याई ॥ नैन आलस भरी
सकल निसि सव करी केह हरि भज परी काम ला
जे ॥ इंदेनरा ॥ अथ आभोगः ॥ मनक कंचन तनी
पीक हगासें सबै अति हीर समें सनी रूप भाजे ॥ छबी
नस्वामी गिरि पवनके मन वसी मनहीं मनहसी
स्वव दीयो साजे ॥ रागिनी रामकली ताल ॥

जमनापट ॥ करत कलेउ मोहनलाल ॥ इतिश्रुरुया
ई ॥ सोंवेन मिश्री दूध मिलाई मेवा परम रसाल ॥
इत्यंतरा ॥ अथश्रामोगः ॥ दधि ओदन पकवांन
मिठाई खात खवावत ग्वाल ॥ कौन स्वामि बन
गाइ चरावन चले लटकि पशु पाल ॥

रागिनी राम कली ताल ३ जमनापद ॥ राधिका
स्याम सुंदरको प्यारी ॥ इति अस्थाई ॥ नाव सिख से
ग अनूप विराजत कोटि चंद दुति वारी ॥ एक छिन
संगन छाडत मोहन निरखि निरखि वलिहारी ॥
छीत स्वामि गिरिधर वस जाके सो वृष भान दुलारी
इति आभोगः ॥ रागिनी राम कली ताल ॥

रा॰रा॰
॥।

वनमें रास रच्यो है मोहन मुरली वजावै ॥ सूरदास
प्रभु निहारे मिलनकों वेद विमल जस गावै ॥ ॥
रागिनी रामकली ताल चर्चरी ॥ नमोदेवि
यमुने नमोदेवि यमुने हरकृस मिलानंतराय ॥
इति अस्थाई । निज नाथ मार्गदायिनि कुमारी का
म सूरके कुल भक्तिराय ॥ ध्रुवं । अंतरा । ग्रह्य ।

रागिनी राम कली ताल ४ षटपदी जमनाजीके

श्रीजमुनाजी निहारे दरस मोहि भावे ।। इतिश्रम्या

ई श्रीगोकुलके निकट बहत है लहरनकी छबि

आवे ।। इत्येतरा श्रश्चशाभोवा॰ सुखकरनी दुःखहर

नी श्रीजमुना जो जन प्रात उठि न्हावे ।। मदन मो

हन जुकी खरी पियारी पटरानी जो कहावे ।। हेदा

ल कमला रुणा युति रुणउ परि मिलित जल भरेणाश्रु
ना ॥ व्रज युवति जव जंभ जंजमारुणा मरः स्मारय
सि मार पितर धुना ॥ अथिर जनि हरि विहरति मी
हिते जलनया मिथस्व भगानयना म्रशानि नवषे ॥
नयन युगा मल्प मिति वङ्गन गागाव नागनि रसिक
नानिथिनया करुषे ॥ रजनि जागार जनिन गागारे

आभोगः ॥ मधुप कुल कलित कमला वली व्याप

देश यापित श्रीकुल धृत भक्त हृदये ॥ सतत मति

शयित हरि भावना जानतनस्ता रूप्य गादित निज

हृदये ॥ निज कुल भव विविध तरु कुसुम धृत की

र शोभया विलस दलि हृंदे ॥ स्मार यामि गोपी हृंद

यजित सरसमी शाव धृत नंद केंदे ॥ उपरि वल दम

गी·गो
११३

113

नाटक वलन मनि रस संगीत युत मद मदिन मधु
प क्रत विनोदे ॥ निज ब्रज जना वना याम गोवर्द्धे
ने राधिका हृदय गत हय कर कमले ॥ रति मति श
यित रस विटल स्याम क्रुरु वेद निनदा ज्ञान सरले ॥
रागिनी राम कली ताल ॐ छटुपदी ॥ प्रिय सं
ग भरि रंग करि कलोले ॥ रति अस्याई सवन कौ

जित नयन पंकजै वहति हरि मीनमे ।। मकरंद भर
मिषेणानंद दृशिता सतत मिहहर्ष्याश्रु मेवसे ।। तट
गता नेक हंसक सारिका भ्रमति गणस्तत विविध गु
ण सिंधु सागरे ।। संगता सतत मिह भक्तजननाप
हति राजसेरी सरस सागरे ।। रतिभर श्रम जलो दि
न कमल परि मल अज पवनि जल विहति मोदे ।।

रा·गो· ऐसी जमुना जानि तुम करो गुणगान रसिक प्रीत
११४ म पायजेगा मूले ॥ रागिनी राम कली ताल
114 कहन हावे सार निहोर करके ॥ इनिष्ट्रमस्याई ॥
इन विना ऐसी कौन करि है सखी हरन डाव देद
वरषे ॥ इस्यंतरा । अथप्राभोगः ॥ ब्रह्म सेवेय
जब करत हैं जीको नव हि इनकी कोमभुजा फरके

सुख दैन पियको करत सैन चितन परत बेनजब

हिवोले ॥ इमनरा । अथ श्राभोराः ॥ अतिहि वि

ख्यात सब बोत इनके हाथ नामलेनहि कृपा करि

अनोले ॥ दरस करि परस करि ध्यांन हियमें धरें

सदा ब्रज नाथ इन संग डोले ॥ अतिहि सुख करत

दुख सबको हरन यह लीनोहै परन हिजहो कूले ॥

अज्ञान अंध हरि करि जाहि मिल बत पीय और प्या
री ॥ इमेतत्। अथयज्ञाभोगः ॥ जिनहि संदेह करो
बात जियमें धरो उहि पथ अब सरो सबवे जो कारी॰
प्रेमके पुंजमें रास रस केजमे पहि रावति प्रति रे
गा भारी ॥ जमन अरु प्राण पति और सब प्राण ह
त बहैं जन जीव पर दया विचारी ॥ कौन स्वामी

दोरि करि सोर करि जाय पियसो कहें अतिहि आन
द मनमें जु हरषें ॥ नाम निर्मोलन गले कोऊ नाम
को भक्त गावेत हियें हार करषें ॥ रसिक प्रीतम
को होत जापर कृपासोई जमुना जूको रूप परषें ॥
रागिनी रामकली ताल षटपदी ॥ धनजम
ने निधि देन हारी ॥ इतिश्रस्याई । करत गुणगान

निकट वहत मंदे ॥ जाके नट निकट हरिदास
मंडल रच्यो नहो निर्तन नना थेई थेदे ॥ जयति
कलिंद गिरि नंदनी देति आनंदनी भक्तके हेर
सब डार दंदे ॥ जिनमैं ध्यान धर मदिन ब्रज
पति कहैं जयति जमुनै जयति नंद नंदे ॥
रागिनी राम कली ताल ध्रुपदै जमुनाके

गिरिधरन श्री विठल प्रीति की लीयें यह मं प्रदारी

रागिनी रामकली ताल षट्पदी ॥ चंचेरी ॥

जयति भानु तनया चरण युगल वंदे ॥ इति प्रस्ता

ई ॥ जयति व्रजराज नंदन प्रिये सर्वदा देहि आनंद

पो शरद वंदे ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः ॥ जयति

सकल सुख कारनी हरन मनो हारनी श्री गोकुल

रा॰रा॰
११७
117

मेरा मोहि सप नैन दीजो भोगन नैनन रोई ॥
गारत पांन उारन श्रेसरनमें विषया रसमें मोई ॥
रसिक कहन दीनकी जाहे लहरि समद समोई
रागिनी राम कली ताल घटपदी ॥ श्री
जैना जीहीन जोनि मोहि दीजे ॥ इनिद्रयाई ॥
नंदको लाल सदा बरमांग सब गोपिनकी दासी

श्रीजमुनैं नमसौ औरन कोई ॥ इतिअस्थाई ॥ क
रो कृपा निज दीन जांनिकैं व्रज निज वासो होई ॥
रंगंनरा ॥ अथआभोगः ॥ ताको चरण शरणन
रनि तनया जनम आपदा खोई ॥ इह संसारस
धनैं स्वारथकौं सुत पतिसु गोत कोई ॥ प्रेम भ
जनमैं करत विबनता संत संताप सोई ॥ ताको

नाथ अति रस भरे जल क्रीडा सुख कारी ॥ मनो
तारा मध्य चंद विराजत भरि भरि छिरकति नारी ॥
रानी जू के पाइ लागि विनती करि मदन को कार
ज सब कीजे ॥ परमानंद प्रभु सब सुख दाता
रह रस नैंन भरि पीजे ॥ रागिनी रामकली
ताल ८ अष्टपदी ॥ श्रीजमुनाजी यह विन

कीजे ॥ इंतनरा । अथग्राभोगः ॥ तुम हो परम

उदार कृपा निधि संत जनन सुखकारी ॥ निहा

रे बस बरनन राधा वर नट खेलें गिरिधारी ॥

सब सखियन मिलि हर संग खेलें अद्भुत रास

विलासी ॥ निहारे अलिन मध्य निकट कुंज उ

म कमल अह पहे सुवासी ॥ श्रम जल सहित

ल लालके उछ वादने उरिये ।। त्रिविध दोष हरि

हो कालिंद्री नेक कृपा करि ढरिये ।। गोविंद स

दा इहै वर मांगं तुम्हरे चरण शरन सरिये ।। रागि

नी राम कली ताल ३ षट्पदी ।। श्रीजमुना

भुवनपावनी धा

जी प्रथम उदारनी मैं जांनी ।। इति अस्थाई ।। गो

पन संग श्याम घन सुंदर नीर त्रिभंगी दोनी ।। इते

नी बिन परिये ॥ इति श्री गुसाई ॥ गिरि धर लाल गु
पाल बिंद रति जन्म जन्म मोहि के दिये ॥ इमनरा ॥
ग श्री भोगः ॥ विष सागर संसार विषम अति वि
षय संगते डरिये ॥ काम क्रोध अज्ञान तिमर अ
ति उर अंतरतें हरिये ॥ तुम्हारे निकट बसों निज
जन संग रूप देखि मन भरिये ॥ गावे गुन गोपा

गी·गी·
१२
120

जो पतित पावन कह्यो ॥ इतिप्रथमध्याई ॥ प्रथमही
जब दरस दीनौं सकल पापजु हर्यो ॥ इत्येतना ॥
प्रथमध्याभोगः ॥ भज नरेगन परम कीनें पय पो
नंदे सुख भर्यो ॥ नाम लेतहि गई दुरमति हृस
रस बस न र्यो ॥ गोप कन्या कीये मजन लाल
गिरिधर वर्यो ॥ सूर श्रीगोपाल तिर खेत सकल

नरा ॥ अथश्लोकः ॥ गंगा चरण परम ते पावन

हर सिर विकार समानी ॥ ग्यान सनक सेदि जस भ

गिनी हरि नाव सिरवल परोनी ॥ आलिंगन खेव

न रस विलसत प्रेम पुंज ठकुरानी ॥ गोविंद प्रभ

रवि तनया प्यारी भक्ति मुक्ति की खानी ॥ ॥

रागिनी रामकली ताल षटपदी ॥ श्रीजय

रा·रा
१२२

(121)

जे उग्र वैराग जाके विवि लावन शरन ॥ सूर हरि
के भक्त दाता विघ्न तारण नरन ॥ रागिनी राम
कली ताल १ षट्पदी ॥ गाउं रसिक नट भवा
ल गुण अने तन पारकमल नयन पियजसोदा ड
लाकु ॥ प्रतिअस्थाई ॥ प्रकट पुरुष साकु पृथ्वी
तल हरे भार जानन महिमा जाके उरहि उरगहारु·

कारज सर्यो ॥ रागिनी रामकली ताल २ षट
पदी ॥ श्रीजमुनाजी पतित पावन करन इतिश्र
स्थाई ॥ प्रथमही जाको दरस पायो कोटि कल
मल हरन ॥ इत्यंतरा ॥ प्रथमआभोगः ॥ पेठत
ही भज तरंग परसत मिटत जियकी जरन ॥
नाम उचरत श्रवनानी उध्यणपोषन भरन ॥ ३१

रा॰रा॰
१२३
122

प्रभु हरि सर्व सहा नाह ॥ रागिनी रामकली ताल ३
अष्टपदी ॥ राम रस गोविंद करत विहार ॥ इतिअ
ष्टपदी ॥ सर सताके ललित रम्य मंहे हले कुंद मे
दार ॥ अंतरा ॥ अथध्रुवाभोगः ॥ शरद भवन शीत द
ल विकसित कोमल सकलित कुमुद कल्हार ॥
मलय पवन वहे शारद सरण चंद मधप झंकार ॥

रंगतरा। अथ आभोगः॥ राम कली एकताल नाचे
अमोव विहारु कालिंदी पुलिन सखी लोचन निहा
रु॥ उत्तम भूषन धारु तन लेपि चंदन सारु वृंदावन
चंद चंद्र दिसि उजियारु॥ मोहन नंद कुमार श्रृंगा
श्रृंगार सुकुमारु गिरिवर धर जस त्रिलोक विस्तारु॰
उभय कर उदारु व्रज भामिनि सिंगारु कमल दास

रा॰ रा॰
१२३
123

नि भेद मिल वन वेणु स्वरनि वेधान ॥ इमेनरा ॥
प्रथमाभोगः ॥ नरनिजा कर लहर विरचित पु
लिनकेलि वेधांन ॥ शारद रजनी विमल उडपति
मलय पवन सुठोन ॥ राग वारि समुह नोउव ला
स्य कला निधांन ॥ व्रज वधूसंग स्वदिन नोंचन
लेन सब चरनांन ॥ वसी कृत राग सिह स्वर रा

सुघर राइ संगीत कला निधि मोहन नंद कुमार ॥ ब

जभामिन संगाश्रम दित नाचत नव चर्चित छन सार०

उभय स्वरूप सु भगनासी वे को ककला सुरव सार०

कृस्न दास स्वामी गिरिधर पिय पहरे रसमय हार ॥

रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ गोविं

द करत मोहन गान ॥ इति अस्थाई ॥ सप्त स्वर गा

रा.गा.
१२४
124

मेरे प्राण जीवन धन गोरस मोतें दूर डुरावे ।। वेनो
खीर खांड पकवांन ले विविध ले प्रातहि मोहि जगा
वे ।। तेल सुगंध लगाइ प्रीतिसों न्हांने नीरन हू वा
वे ।। भूषन वसन विविध मन भाए पलटि पलटि
पहिरावे ।। नैना आंजि तिलक म्रग मद करि द
र्पन मोहि दिखावे ।। षटरस विंजन मोहि जेंवावे

ण्य किन व्योम विमान ॥ कृस्नदास बिल सरस गिरि धवन सब गुन जान ॥ रागिनी रामकली ताल २ धमार पदी ॥ रसोमोहि श्री वल्लभ गृह भावे इनि श्रम पाई ॥ नवनि मैया नेमोउर मांखन हूय दहो जो छुपावे ॥ अंतरा ॥ प्रथम आभोग ॥ नेनो कह ताकि तिन कहा कहे तिन उर मोहि वि जावे ॥

दिवस आवन जब मेरो आंगन चोक आवे ॥ बाजे ब
हु विधि द्वारैं बाजे वंदन वार बंधावे ॥ मेरे गृग गृनि
जनैं पै मोको सम खानि जो खवावे ॥ हरदी हूव
अछत दधि कुंम कुंम मंगल कलस भरावे ॥ यैन
दिवावैं द्विज जनकों मोपैंसु भगा असीस पढावे ॥
कैतिक बानक हैंहैं तिनकी मोपैं कही यत आवे ॥

हितसौंवो गावबावे ॥ भंवरा चकई विविध रवि
लौंनो लेकरि मोहि खिलावे ॥ विविधि कुसुमय
पनै कर गुहि लैले माला उर लावे ॥ खावद पर्यंक
संवारि मंडल अतिना पर मोहि खवावे ॥ डोल झु
लावे रथ वैठावै हिंडोरा पलना झुलावे ॥ रितव
संत जानि जीय अपनैं लैं खरंगा छिर कावे ॥ जनम

रा॰रा॰
१२६
126

मिटावै ॥ मेरे लीयें पविजा राखी अति सुंदर जो बना

वै ॥ सबै भांति प्रीति ब्रज जन की श्रायें करि जो

सि खावै ॥ दसमी विजे जानि रघुवर कों जब श्रेक्र

व सीस धरावै ॥ बहु विधि पाक संवारि मोहि दि

न मणि दीप दोनहुं दिखावै ॥ शारद सुन्यों रास

दिन मेरो नट वर भेष बनावै ॥ मोर मुकट पीतो

मेरे प्राडुर्भाव दिवस दिन आनंद उरन समावे ॥ न
न दिनन प्रभोग करि मोकौं हितसौं भोग लगावे ॥
घसि गुलाब के नीर में चंदन लेक रसौं बसावे ॥
सीतल वारि बयार अति सीतल देसै तामो हि रिझा
वे ॥ सीतल नीर सुगंध सुवासित करि अपि वास
न लावे ॥ भरि भरि जल जनाय सीस परमोतन नाय

रा॰रा॰
१२८
127

जन वृथा जन्म गवावे ॥ रसिक कहे श्रीवल्लभ क
रुणा विनु इह फल कवहूं न पावे ॥ रागिनी राम
कली ताल ध्रुपद ॥ चर्चरी कुंवरि राधि
का नव सकल सौभाग्य सीवया वदन परकोटिश
त वेदवारो ॥ रतिश्रमप्यारी ॥ विजन कुंरंग शतको
टि नैननि उपर वारने करत जीयमें विचारो ॥ इतो

वर काछनी मुरलीकर हि गहावे ॥ सुरभी वरदनों
ति कुहूकी निसि फनि फनि लाडलडावे ॥ सुरप
ति मांन भंग प्रति पदनव यो गिरि राज पुजावे ॥
कातिक सुदि एकादशिके दिन कुंज महल जो व
नावे ॥ पाट सुरंग वसन पहिरावन श्रव्रो धनो प
रव मनावे ॥ प्रति मति मेट करम जड कलि प्रग

रा॰रा॰

रहो ॥ नाग शत कोटि वेनी ऊपर कपोत शत को
टि ग्रीव पर वारि हरि सारो ॥ कमल शत कोटि क
र जुगल पर वार नैना छिन कोउ लोक उपमां जथा
रें ॥ दास ज्रेभन स्वामिनी सनख सिख श्रेग श्रद
भुत सदोन कह्यो लगि सं भारों ॥ लाल गिरिवर
धरन कहत मोहिनी हि लौं स्वख जो लौं वह रूप

नरा ॥ अथ आभोगः ॥ कदली शत कोटि जंघन उ
पर सिंह शत कोटि कटि पर न्यौछावर उतारौं ॥
मत्त गज कोटि शतचाल पर जंभ शत कोटि इन
जोबन पर वारि डारौं ॥ कीर शत कोटि नासा उपर
कुंद शत कोटि दसननि उपर करि हिन पारौं ॥ पंक
केहव वंधूक शत कोटि अधरनि उपर वारि हचिगर्भ

गा·गा·
१२९
129

श्यामश्यामोगाः ॥ ब्रज सुंदरी वयस्य सहभी सुंदर
गी गाम निरुपम भावा मंगल सिंधु वयाः ॥ मं
गल मीघस्मित मुत मीतम भाषण मन्वन ना
माशुट गान मका फल वलने ॥ कोमल वल देग
लि दल संगत वेणु निनाद विमोहित वृंदा वन
भवि जाता ॥ मंगल मवि ले गोपी शिन्त्रवति मंच

छिन छिन निहारैं ॥ रागिनी रामकली ताल

२ मंगलाम्रि ॥ मंगल मंगल व्रज भुवि मंगले

इतिसुखाई ॥ मंगल मिह श्रीनंदयशोदा नामसुकी

तिनमैं नंदकिशोर संग सुलालित पालितरूप ॥

ध्रुवपद ॥ श्रीश्री कृष्ण इति स्तानि सारे नामस्मा

तेजना शायना पापह मिति मंगलगावे ॥ इत्येतरा

रा॰रा॰
१३०

130

नी ॥ छगन मगन तुम करहु कलेउ मेरे सब स
खेलोनी ॥ जननी बचन सुनि तुरत उठे हरि कह
त बात तुतरोंनी नंददास कीनों बलि हारी जसुम
ति मन हरन खोंनी ॥ रागिनी रामकली ताल
धुरुपदी चर्चरी ॥ नवकुंवर चक्र चूडानरपति सो
वरो राधिके तरुणि मनि पद रानी ॥ इति ध्रुपदाई

रगति विभ्रम मोहति रासस्थित गावे ॥ नेजय सत
ते गोवर्द्धन धर पालय निजदा सान ॥ रागिनी राम
कली ताल २ षट्पदी ॥ जगावति अपने सुत
कौं रानी ॥ इति अस्थाई ॥ उठो मेरे लाल मनोहर
सुंदर कहि कहि मधुरी बानी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ अग्र
भोगः ॥ माखन मिश्री और मिठाई दूध मलाई श्री

नी ॥ सत्यगुण पारिया काल बडुवा जहां डारिये
काम जन खङ्कन निसानी ॥ नील मकेन धरैं ऊँज
ऊस मित महल मध्य कमनीयसे पर्ठानी ॥ पलन
विछुरन होउ जान नहीं नहीं कोउ ध्यास महल नि
लियें पीक होनी ॥ रागिनी रामकली ताल ३
षट्पदी ॥ वनी वृष भान जानकी वेटी ॥ इनिश्र।

सेस महेस आदि बैकुंठ पर्यंत लो लो कथैं नबजरा
ज पांनी ॥ अंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ मेघ जप
न कोटि वारासीव नजहो खकि वारों जहो भरत
पांनी ॥ सूर ससि पहरूवा पवन परजन्य इंद्र व
रण दासी भाट निगम बोनी ॥ धर्म ऊत बालय
क सनन नारद बारू बाल सनकादि वरचारि ज्ञा

रा॰ग॰
१३२
132

रागिनी रामकली ताल गीत ध्रुवपदी ॥ दधि मथ्य

ति नंद नंदन रानी करति स्वत गुण गान ॥ इतित्रस्या

ई ॥ नील निरद श्रेणा दिव्य दुकूल वरपरि धान ॥ ने

लि करधति हरष थरकति वलय कंकन पात ॥

इंगितना ॥ अथ आभोगः ॥ स्वेदक नयान वदन वि

थुपर स्वथा विंड समान ॥ केश कुसुमनि करत म

स्याई ॥ निविड़नि कुंज कुसुम पुंजनि पर स्याम वो
म संग लेटी ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥ रति नि
सि जागी सोवत भोर किसोर कुंवरि रस रेटी ॥ पि
य के हिय मैं जिय ज्यौं राजन नाहु बाहु बल बेटी ॥
नैननि की सैननि कल मानौं मन मथ अमित खेटी
लोभि लाल स्याम की स्वामिनि कंचन रासि समेटी ॥

गीना टेक जल कनिकान ॥ पयो पर पय श्रवन
वासिक कुल पन निधारान ॥ सहस आनन करि
सके नहीं व्यास भाग वखान ॥ जगत वंदन मान
पित्र निगादा पर धरि ध्यान ॥

अथ रागिनी विभावती गीत गोविंद परिछेद माह ताल

श्लोक ॥ मेघैर्मेदुरमंबरं वनभुवः श्यामास्तमालद्रुमै

र्नक्तं भीरुरयं त्वमेव तदिमं राधे गृहं प्रापय । इत्थं नंद

निदेशतश्चलितयोः प्रत्यध्वकुंजद्रुमं । राधामाधवयो

र्जयंति यमुनाकूले रहःकेलयः १ वाग्देवताचरित

चित्रित चित्तसद्मा पद्मावती चरण चारण चक्रवर्ती ॥

श्रीवासुदेवरतिकेलिकथासमेतमेतं करोति जयदेव
कविः प्रबन्धम् २ यदि हरिस्मरणे सरसं मनो यदि वि
लासकलासु कुतूहलम् । मधुरकोमलकान्तपदावलीं
शृणु तदा जयदेवसरस्वतीं ३ वाचः पल्लवयत्युमापति
धरः सन्दर्भशुद्धिं गिरां । जानीते जयदेव एव शरणः श्ला
घ्यो दुरूहद्रुते । शृङ्गारोत्तरसत्प्रमेयरचनैराचार्यगोवर्द्ध

न स्पर्द्धी कोपि न विश्रुतः श्रुतिधरो धोयीः कविक्ष्माप
तिः ॥ ४॥ अष्टपदी ॥ प्रलय पयोधि जले धृतवानसि वेदं
विहित वहित्र चरित्र मखेदम् । केशव धृतमीन शरीर
जय जगदीश हरे । ध्रुव । १ ॥ क्षिति रति विपुलतरे त
व तिष्ठति पृष्ठे । धरणि धरण किण चक्र गरिष्ठे । केश
व धृत कच्छप रूप जय जगदीश हरे २ वसति दशन

गी-टे
गीं

षिखरे धरणी तव लग्ना। शशिनि कलंक कलेव निमग्ना

केशव धृत सूकर रूप जय जगदीश हरे।३। तव कर कम

लवरे नखमद्भुत शृंगे। दलित हिरण्य कशिपु तनु भृंगे

केशव धृत नरहरि रूप जय जगदीश हरे ४ छलयसि

विक्रमणे बलिमद्भुत वामन। पदनखनीरजनित जन

पावन। केशव धृत वामनरूप जय जगदीश हरे ॥५॥

२

क्षत्रियरुधिरमये जगदपगतपापं। स्नपयसि पयसि श
मितभवतापम्। केशव धृतभृगुपतिरूप जय जगदीश
हरे ६ वितरसि दिक्षुरणे दिक्पतिकमनीयं। दशमुख
मौलिबलिं रमणीयम्। केशव धृतरामशरीर जय जग
दीशहरे ७ वहसि वपुषि विशदे वसनं जलदाभं। हल
हतिभीतिमिलितयमुनाभम्। केशव धृतहलधररूप

गी॰टे॰
गी॰

जय जगदीश हरे ८ निन्दसि यत्तविधेरहह श्रुतिजातं। स
दय हृदय दर्शित पशुघातम्। केशव धृत बुद्धशरीर जय
जगदीश हरे ९ म्लेच्छनिवह निधने कलयसि करवालं-
धूमकेतुमिव किमपि करालम्। केशवकल्कि शरीर-
जय जगदीश हरे १० श्रीजयदेव कवेरिद मुदित मुदारं॥
शृणु सुखदं शुभदं भवसारं। केशव धृत दश विधरूप ज

य जगदीश हरे ११ श्लोक॥ वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगो

लमुद्बिभ्रते। दैत्यान्दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते·

पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते। म्लेच्छा

न् मूर्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः १२ अष्ट

पदी॥२॥ श्रितकमलाकुचमंडल धृतकुंडल। कलि

तललितवनमाल। जयजय देव हरे। ध्रुवं। १॥ दिन

गा·दे
गीं

मणि मंडल मंडन भव खंडन । मुनि जन मान स हंस जय

जय देव हरे २ कालिय विषधर गंजन जन रंजन । यदुकु

ल नलिन दिनेश जय जय देव हरे ३ मधु मुर नरक विना

शन गरुडासन । सुर कुल केलि निदान जय जय देव हरे

४ अमल कमल दल लोचन भव मोचन । त्रिभुवन भवन

निधान । जय जय देव हरे ५ जनकसुता कृतभूषण जि

त दूषण। समरशमित दशाकंठ जयजय देव हरे ६ अभि
नव जलधर सुंदर धृतमंदर। श्रीमुखचंद्रचकोर जयज
य देव हरे ७ तव चरणे प्रणतावय मिति भावय। कुरु
कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे ८ श्रीजयदेवकवेरि
दं कुरुते मुदम्। मंगलमुज्वलगीतं जयजय देव हरे ९
श्लोक॥ पद्मापयोधरतटी परिरंभलग्न काश्मीरमु

गी॰टं
गी॰

द्विजन्मरी मधुसूदनस्य। व्यक्तानुरागमिव खेलदनंगखे

दस्वेदाम्बुपूरमनुपूरयतु प्रियं वः॥२॥ वसंते वासन्तीकु

सुमसुकुमारैरवयवै भ्रमंतीं कांतारे। बहुविहितकृष्णा

नुसरणां। अमंदं कंदर्पज्वरजनितचिंताकुलतया। व

लद्बाधां राधां सरसमिदमूचे सहचरी॥२॥ अष्टपदी॥३॥

ललितलवंगलतापरिशीलनकोमलमलयसमीरे।

मधुकरनिकरकरम्बितकोकिलकूजितकुंजकुटीरे ।। १

विहरति हरिरिह सरसवसंते नृत्यति युवतिजनेन समं

सखि विरहिजनस्य दुरंते ध्रुव । उन्मदमदनमनोरथ

पथिकवधूजनजनितविलापे । अलिकुल संकुलकु

सुमसमूहनिराकुलबकुलकलापे २ मृगमदसौरभ

रभसवशंवदनवदलमालतमाले । युवजनहृदयवि

ग।वें
गी

दारणमनसिजनखरुचि किंशुकजाले ३ मदनमहीप
ति कनकदंडरुचि केसर कुसुम विकासे । मिलितशि
ली मुखपाटलि पटल कृतस्मर तूण विलासे ४ विग
लित लज्जित जगदव लोकन तरुण करुण कृतहासे ।
विरहि निकृन्त कुन्तमुखा कृति केतकि दन्तुरिताशे । ५ ॥
माधविकापरिमल ललिते नवमालिक यातिसुगंधौ

मुनिमनसामपि मोहनकारिणि तरुणाकारणबंधौ ।६।

स्फुरदतिमुक्तलतापरिरंभणमुकुलितपुलकितचूते-

वृंदावनविपिने परिसरपरिगतयमुनाजलपूते ७

श्रीजयदेवभणितमिदमुदयति । हरिचरणस्मृतिसा-

रम् । सरसवसंतसमयवनवर्णनमनुगतमदनवि-

कारम् ८ ॥ श्लोकः ॥ दरविदलितमल्लीवल्लिचंचत्परा-

ग·ख·
गी·

गप्रकटितपटवासैर्वासयन्काननानि । इह हि दहति

चेतः केतकीगन्धबन्धुः प्रसरदसमबाणप्राणवद्गन्ध

वाहः १ उन्मीलन्मधुगन्धलुब्धमधुपव्याधूतचूताङ्कु

रक्रीडत्कोकिलकाकलीकलकलैरुद्गीर्णकर्णज्व

राः । नीयन्ते पथिकैः कथं कथमपि ध्यानावधान

क्षणप्राप्तप्राणसमासमागमरसोल्लासैरमी वासराः २

अनेक नारी परिरंभ संभ्रमस्फुरन्मनो हारि विलास लाल
सम् । मुरारिमाराडुपदर्शयंत्यसौ सखी समक्षं पुनराह
राधिकाम् ३ ।। अष्टपदी ।। ४ ।। चंदन चर्चित नील कलेव
र पीत वसन वनमाली । केलि चलन्मणि कुंडल मंडि
त गंड युगस्मित शाली । हरिरिह मुग्ध वधूनिकरे वि
लासिनि विलसति केलिपरे ।१।। ध्रुव ।। पीनपयोधरभा

गा॰ दे
गी॰

रभसेन हरिं परिरभ्य सरागम् । गोपवधूरनुगायति काचिदु
दंचितपंचमरागम् । हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि
विलसति केलिपरे ॥२ कापि विलास विलोल विलोचन खे
लन जनित मनोजं । ध्यायति मुग्धवधूरधिकं मधुसूदन
वदन सरोजम् हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि वि
लसति केलिपरे ॥३ कापि कपोलतले मिलिता लपितुं

किमपि श्रुतिमूले । चारु चुचुम्ब नितम्बवती दयितं पु

लकैरनुकूले हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विल

सति केलिपरे ४ केलिकलाकुतुकेन च काचिदमुं यमु

ना जलकूले । मञ्जुल वञ्जुल कुञ्जगतं विचकर्ष करेण दु

कूले । हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलस

ति केलिपरे ५ करतल ताल तरल वलयावलि कलित

गी॰ टे॰
गी॰

कलस्वनवंशे। रासरसे सहनृत्यपरा हरिणा युवतिः प्रश

शंसे। हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति

केलिपरे ६ श्लिष्यति कामपि चुम्बति कामपि कामपि

रमयति रामां। पश्यति सस्मितचारुपरामपरामनुगच्छ

ति वामां॥ हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि विलसति

केलिपरे ७ श्रीजयदेवभणितमिदमद्भुतकेशवकेलि

रहस्यम् । विपिनविनोदकलावलिते वितनोतु शुभा
नि यशस्यम् । हरिरिह मुग्धवधूनिकरे विलासिनि वि
लसति केलिपरे ८ ॥ श्लोक ॥ विश्वेषामनुरंजनेन जन
यन्नानंदमिंदीवर । श्रेणी श्यामलकोमलैरुपनयन्नंगै
रनंगोत्सवम् । स्वच्छंदं व्रजसुंदरी भिरभितः प्रत्यङ्ग मा
लिङ्गितः । शृंगारः सखि मूर्त्ति मानिव मधौ मुग्धो हरिः

ग॰ टें
गीं

क्रीडति १ अथोत्सङ्गवसद्भुजङ्गकवलक्लेशादिवेशाचलं
प्रालेयप्लवने च्छयानुसरति । श्रीखंडशैलानिलः । किं
च स्निग्धरसालमौलि मुकुलान्यालोक्य हर्षोदया । दु
न्मीलंति कुहूः कुहूरिति कलो त्तालाः पिकानांगिरः २
रासोल्लासभरेण विभ्रमभृता माभीरवामभ्रुवा । मभ्य
र्णं परिरभ्य निर्भरमुरः प्रेमांऽधया राधया । साधुत्वद्वद

नं सुधामयमिति व्याहृत्य गीतस्तुति व्याजाउद्भटचुम्बि

तःस्मितमनोहारी हरिः पातु वः ॥ ३ ॥ विहरति वने राधा

साधारणप्रणये हरौ विगलितनिजोत्कर्षादीर्ष्याविशेन

गतान्यतः । क्वचिदपि लताकुंजे गुंजन्मधुव्रतमंडलीमु

खरशिखरे लीना दीनाप्युवाच रहःसखीम् ॥ ४ ॥ गुर्जर

री । ५ ॥ संचरदधरसुधामधुरध्वनिमुखरितमोहनवंशे

गी गो
गो

चलितदृगंचलचंचलमौलिकपोलविलोलवतंसम्।।रा
से हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरिहासं
ध्रुव।।१।। चंद्रकचारुमयूरशिखंडकमंडलवलयितके
शम्। प्रचुरपुरंदरधनुरनुरंजितमेदुरमुदिरसुवेशम्
रासे हरिमिह विहितविलासं स्मरति मनो मम कृतपरिहा
सम्।।२।। गोपकदंबनितंबवतीमुखचुंबनलंभित

११

लोभम् । बंधुजीव मधुरा धर पल्लव मुल्लसित स्मित शोभे
रासे हरिमिह विहित विलासं स्मरति मनो मम कृतपरि
हासम् ३ ॥ विपुल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव यु
वति सहस्रम् । कर चरणोरसि मणि गण भूषण किर
ण विभिन्नतमिस्रम् । रासे हरिमिह विहित विलासं
स्मरति मनो मम कृतपरिहासम् ४ जलद पटल वल

गी·गो
गी

दिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाटम्। पीन पयोधर परि
सर मर्द्दन निर्द्दय हृदय कवाटम्। रासे हरिमिह विहित
विलासे स्मरति मनोमम कृत परिहासम् ५ मणिमय
मकर मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारम्। पीन वसन म
नुगत मुनि मनुज सुरासुर वर परिवारम्। रासे हरिमिह
विहित विलासे स्मरति मनोमम कृत परिहासम्॥ ६॥

विशद कदम्बतले मिलितं कलिकलुषभयं शमयंतम्
मामपि किमपि तरंग दनंग दृशा मनसा रमयंतम् । रा
से हरिमिह विहित विलासं स्मरति मनो मम कृतपरि
हासम् ७ श्रीजयदेवभणित मति सुंदर मोहन मधुरिपु
रूपम् । हरिचरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवतामनुरूपं
रासे हरिमिह विहित विलासं स्मरति मनो मम कृतपरि

क्षामम् ८॥ श्लोक॥ गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमादपि

नेहते वहति च परीतोषं दोषं विमुंचति दूरतः। युवतिषु

वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां विना पुनरपि मनो वामं

कामं करोति करोमि किम् ९॥ अष्टपदी ९॥ निभृतनि

कुंजगृहं गतया निशि रहसि निलीय वसंतं। चकितवि

लोकित सकल दिशा रति रभस रसेन हसंतं। सखि हे के

शि मथन मुदार । रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया

सविकारम् ।ध्रुव-१। प्रथम समागम लज्जितया पटुचाटु

शतैरनुकूलं । मृदु मधुर स्मित भाषितया शिथिलीकृत

जघन दुकूलम् । सखि हे केशि मथन मुदारं रमय मया

सह मदन मनोरथ भावितया सविकारम् ।२। किस

लय शयन निवेशितया चिरमुरसि ममैव शयानम् ॥

ग॰ वे
गी॰

कृतपरिरंभणाचुम्बनया परिरभ्य कृताधरपानम् । सखि
हे केशिमथनमुदारं रमय मया सह मदनमनोरथभा
वितया सविकारम् ।३।। अलसनिमीलितलोचनया पु
लकावलिललितकपोलम् । श्रमजलसकलकलेव
रया वरमदनमदादतिलोले । सखि हे केशिमथनमु
दारं रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारं ४

कोकिलकलरवकूजितया जितमनसिजतंत्रविचारं । श्ल

थकुसुमाकुलकुंतलया नखलिखितघनस्तनभारं

सखिहे केशिमथनमुदारं रमय मया सह मदनमनोरथ

भावितया सविकारम् ५ चरणरणितमणिनूपुरया प

रिपूरितसुरतवितानम् । मुखरविशृंखलमेखलया

सकचग्रहचुम्बनदानम् । सखिहे केशिमथनमुदारम्

रा· खं·
गी·

रमय मया सह मदनमनोरथभावितया सविकारम् ॥८

रतिसुखसमयरसालसया दरमुकुलितनयनसरोजे।

निःसहनिपतिततनुलतया मधुसूदनमुदितमनोजे

सखि हे केशिमथनमुदारम् रमय मया सह मदनमनो

रथभावितया सविकारम् ७ श्रीजयदेवभणितमिदम

तिशयमधुरिपुनिधुवनशीलम्। सुखमुत्कण्ठितगोप

वधूकथितं वितनोतु सलीलम् ॥ सखि हे केशिमथन

मुदारम् रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया सविका

रम् ॥८॥ श्लोक ॥ हस्तस्रस्त विलास वंशम नृजु भ्रूव

ल्लिमद्बल्लवी वृंदोत्सारि दृगन्त वीक्षित मति स्वेदार्द्र गंड

स्थलम् । मामुद्वीक्ष्य विलक्षित स्मित सुधा मुग्धानने

कानने । गोविंद व्रज सुंदरी गणा वृतं पश्यामि हृष्यामि

गी·टी
गी

व । उग्रालोकस्तोकस्तवकनवकाशोकलतिका विका
शः कासारो पवनपवनोऽपि व्यथयति । अपि भ्राम्यद्भृंगी
रणितरमणीयानमुकुल । प्रसूतिश्चूतानां सखि शिख
रिणीयं सुखयति २ साकूतस्मितमाकुला कुलगलद्ध
म्मिल्लमुल्लासितं । भ्रूवल्लीकमलीकदर्शितभुजामूला
र्द्धदृष्टस्तनम् । गोपीनां निभृतं निरीक्ष्य गमिताकांक्षश्चिरं

चिन्तयन्नन्तस्मितमनोहरं हरतु वः क्लेशं नवः केशवः ३

कंसारिरपि संसारवासनाबन्धशृङ्खलाम्। राधामाधाय हृ-

दये तत्याज व्रजसुन्दरीः ४ इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकाम-

नङ्गबाणव्रणखिन्नमानसः। कृतानुतापः स कलिन्दने-

न्दिनीतटान्तकुञ्जे विषसाद माधवः ५॥ अष्टपदी॥ ७॥

मामियं चलिता विलोक्य वृतं वधूनिचयेन। सापराधत

रा·ख्व
गी·

या मयापि नवारितातिभयेन। हरिहरिहतादरतयागता

साकुपितेव ॥ किंकरिष्यति किंवदिष्यति सा चिरंविरहे

ण। किंधनेन जनेन किं ममजीवितेन गृहेण २ चिंतया

मि तदाननं कुटिलभ्रु रोषभरेण। शोणपद्ममिवोपरिभ्र

मताकुलंभ्रमरेण। हरिहरिहतादरतयागतासाकुपिते

व ३ तामहं हृदिसंगता मनिशंभृशं रमयामि। किंवनेनु

सतामि किं वृथा विलपामि। हरि हरि हतादरतया गता

साकुपितेव ४ तन्वि खिन्नमसूयया हृदयं तवाकलया

मि। तन्न वेद्मि कुतो गतासि न तेन तेनुनयामि॥ हरि हरि

हतादरतया गता सा कुपितेव ५॥ दृश्यसे पुरतो गतागता

मेव मे विदधासि। किं पुरेव ससंभ्रमं परिरंभणं न ददा

सि॥ हरि हरि हतादरतया गता सा कुपितेव ६ क्षम्यताम

ग·हे·
गी·

परंकदापितवेदृशंनकरोमि । देहिसुंदरिदर्शनंममम‍न्म

थेनदुनोमि । हरिहरि हतादरतया गतासा कुपितेव ७

वर्णितंजयदेवकेनहरेरिदंप्रणतेन । किंदुबिल्वसमुद्रसं

भवरोहिणीरमणेन । हरिहरि हतादरतया गतासा कु

पितेव ८ ॥ श्लोक ॥ भ्रूपल्लवोधनुरपांगतरंगितानि·

बाणागुणाः श्रवणपालिरितिस्मरेण । तस्यामनंगजय

ङ्गम देवनाथा। ब्रह्माणि निर्जित जगंति किमर्पितानि

२ हृदि विसलताहारो नायं भुजंगमनायकः। कुवलयद

लश्रेणी कंठे न सा गरलद्युतिः। मलयजरजो नेदं भस्म

यारहिते मयि। प्रहर न हरभ्रान्त्यानंगक्रुधा किमुधाव

सि २ पाणौ माकुरु चूतसायकममुं माचापमारोपय

क्रीडानिर्जितविश्व मूर्छितजना। घातेन किं पौरुषम्

ग·खं
गी·

तस्याएव मृगीदृशो मनसिज प्रेङ्खत्कटाक्षानिल । ज्वाला
जर्जरितंमनागपिमनो नाद्यापि संधुक्षते २ भ्रूचापे नि
हितःकटाक्षविशिखो निर्मातु मर्मव्यथां । श्यामात्मा
कुटिलःकरोतुकवरी भारोपिमारोद्यमं । मोहंता वदयंच
तन्वितनुतां बिंबाधरोरागवान् । सद्वृत्तस्तन मंडलस्तव
कथंप्राणैर्मम क्रीडति ४ तानिस्पर्श सुखानिनेचतरल

स्निग्धा दृशो विभ्रमा । तद्वक्त्रांबुज सौरभं स च सुधास्यंदी

गिरां वक्रिमा । सा बिंबाधर माधुरीति विषयासंगेपि मन

मानसं । तस्यां लग्न समाधि हंत विरह व्याधिः कथं वर्धते

५ तिर्यक्कंठ विलोल मौलि तरलोत्तंसस्य वंशोच्चर ॥

द्दीप्तिस्थान कृतावधान ललना लक्षैर्न संलक्षिताः । सं

मुग्धे मधुसूदनस्य मधुरे राधामुखेंदौ मृदुः । स्पंदपल

रा॰ वे॰
गी॰

लिताश्चिरं ददतु वः क्षेमं कटाक्षोर्मयः ६ यमुनातीरवा
नीरनिकुंजे मंदमास्थितम्। प्राह प्रेमभरोद्भ्रांतं माधवं रा
धिकासखी ७॥ गुर्जरी॥८॥ निंदति चंदनमिंदुकिर
णमनु विंदति खेदमधीरं॥ व्यालनिलयमिलनेन गरल
मिव कलयति मलयसमीरं। सा विरहे तव दीना माधव
मनसिजविशिखभयादिव भावनया त्वयि लीना॥ध्रु॰

अविरल निपतित मदन शरा दिव भवद वनाय विशाले
स्वहृदय मर्म्मणि वर्म करोति सजल नलिनी दलजाले
सा विरहे तव दीना माधव मनसिज विशिखभया दिव
भावनया त्वयि लीना २ कुसुम विशिख शरतल्प मन
ल्प विलास कला कमनीयम् । व्रत मिव तव परिरंभ
सुखाय करोति कुसुम शयनीयम् । सा विरहे तव दीना

गी·गो
गी·

माधव मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि लीना ३

वहति च वलित विलोचन जलधरमानन कमल मुदारं । वि

धुमिव विकट विधुंतुद दंत दलन गलितामृत धारम् ॥

सा विरहे तव दीना माधव मनसिज विशिख भयादिव

भावनया त्वयि लीना ४ ॥ विलिखति रहसि कुरंग

मदेन भवंतम समशर भूतम । प्रणमति मकर मधो वि

निधाय करे च शरं नव चूतम् ।। सा विरहे तव दीना माध

व मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि लीना ।

५ ।। प्रतिपदमिदमपि निगदति माधव तव चरणे पति

ताहम् । त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधानिधिरपि तनु

ते तनुदाहम् ।। सा विरहे तव दीना माधव मनसिज वि

शिख भया दिव भावनया त्वयि लीना ६ ।। ध्यानलये

रा एव
गी

नपुरः परिकल्प्य भवंतमतीव दुरापम् । विलपति हसति
विषीदति रोदिति चंचति मुंचति तापम् ।। सा विरहे तव
दीना माधव मनसिज विशिख भयादिव भावनया त्वयि
लीना ७।। श्रीजयदेव भणितमिदमपिकं यदि मनसा
नटनीयम् । हरिविरहाकुल वल्लव युवति सखी वच
ने पठनीयम् । सा विरहे तव दीना माधव मनसिज वि

शिवभयादिवभावनयात्वयिलीना ८॥ श्लोक॥ आवा
सोविपिनायतेप्रियसखीमालापिजालायते।तापोपि
श्वसितेनदावदहनज्वालाकलापायते।सापित्वद्विरहे
णहंतहरिणीरूपायतेहाकथं।कंदर्पोपियमायतेवि
रचयन्शार्दूलविक्रीडितम्॥ अष्टपदी॥८॥ स्तनवि
निहितमपिहारमुदारम्।सामनुतेकृशतनुरतिभारं।

गी·दे
गी·

राधिका विरहे तव केशव। ध्रु·।१। सरसमसृणमपि मल
यजपंकम्। पश्यति विषमिव वपुषि सशंकम्। राधि
का विरहे तव केशव।२। श्वसित पवन मनुपम परिणाहं
मदन दहनमिव वहति सदाहम्। राधिका विरहे तव के
शव ३ दिशि दिशि किरति सजल कण जालम्। नय
न नलिन मिव विगलित नालम्। राधिका विरहे तव के

शव ४॥ नयनविषयमपि किसलयतल्पम्। गणय

ति विहितहुताशविकल्पम्। राधिका विरहे तव केश

व ५ त्यजति न पाणितलेन कपोलम्। बालशशिन

मिव सायमलोलम्। राधिका विरहे तव केशव ६ ह

रिरिति हरिरिति जपति सकामम्। विरहविहितम

रणेव निकामम्। राधिका विरहे तव केशव ७ श्रीज

रा·वे
गी

यदेव भणितमिति गीतम्। सुखयतु केशव पदमुपनी
तम्॥ राधिका विरहे तव केशव ध्रु॥ श्लोक॥ सारोमा
चति सीत्करोति विलपत्युत्कंपते ताम्यति। ध्यायत्युद्भ्र
मति प्रमीलति पतत्युद्याति मूर्छत्यपि। एतावत्यतनुज्वरे
वरतनुर्जीवेन्न किं ते रसा। स्वर्वैद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि
त्यक्तोन्यथा हस्तकः। स्मरातुरां दैवतवैद्यहृद्य त्वदंगसं

गामरतमात्रमायया । विमुञ्चबाधां कुरुषे न राधा मधुसूद
वज्रादपि दारुणोसि २ कंदर्पज्वरसंज्वराकुलतनोराश्च
र्यमस्याश्चिरं । चेतश्चंदनचंद्रमःकमलिनीचिंतासुसंता
म्यत्यपि । किंतु क्लांतिवशेन शीतलतनुं त्वामेकमेवप्रि
यं । ध्यायंती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणाक्षणं प्राणि
ति ३ क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे । नयननिमीलन

रा·खं
गी·

ाविन्नयायपयाने। स्थितिकथमसौ रसालशाखां। विर
चिर हेला विलोका शोणिताना ग्राम् ४ दृष्टिव्याकुलगोकु
लावनवशा उद्धृत्य गोवर्धने। विभ्रद्वल्लवसुंदरीभिर
धिकानंदाच्चिरं चुंबितः। कंदर्पेण तदर्पिताधरतटी सिंदू
रमुद्रांकितो। बाहुर्गोपतनोस्तनोतु भवतां श्रेयांसि
कंसद्विषः ५ अहमिह निवसामि याहि राधामनुनय ॥

मद्वचनेन चानयेथाः। इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता स्व
यमिदमेत्य पुनर्जगाद राधाम् ८ अष्टपदी॥ वहति मलय
समीरे मदनमुपनिधाय स्फुटति कुसुमनिकरे विरहिहृ
दय दलनाय। तव विरहे वनमाली सखि सीदति॥ ध्रु॰ १२
दहति शिशिर मयूखे। मरणमनुकरोति। पतति मद
न विशिखे विलपति विकलतरोति। तव विरहे वनमा

गी·गो

ली सखि सीदति २ धनतिमपुष्प सम्हेष्णणामपि दया

ति। मनसिवलिन विरहे निशि निशि रुजमपयाति ॥

नवविरहे वनमाली सखि सीदति ३ वसति विपिनविता

ने त्यजति ललिनमपि याम। लुठति धरणिशयने बहु

विलपति तवनाम। नवविरहे वनमाली सखि सीदति

४ भणति कविजयदेवे विरहिविलसितेन। मनसि

भमविभवे। हरिरुदयतसुकृतेन। तवविरहे वनमा
ली सखि सीदति ५ श्लोक॥ पूर्वंयत्रसमंत्वयारतिपते
रासादिताःसिद्धय। तस्मिन्नेव निकुंज मन्मथमहाती
र्थे पुनर्माधवः। ध्यायंस्त्वामनिशं जपन्नपि तवैवालाप
मंत्रावलिं। भूयस्त्वत्कुचकुंभ निर्भरपरीरंभामृतं वां
छति १ अष्टपदी ११॥ रतिसुखसारे गतमभिसारे। म

गा॰टे
गी॰

दनमनोहरवेशम्। नकुरुनितंबिनिगमनविलंबनम
नुसरतंहृदयेशम्। धीरसमीरेयमुनातीरेवसतिवनेवन
मालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ।।ध्रु॰
नामसमेतंकृतसंकेतंवादयतेमृदुवेणुं। बहुमनुतेन
नुतेतनुसंगतपवनचलितमपिरेणुम् ।। धीरसमीरेय
मुनातीरेवसतिवनमालीगोपीपीनपयोधरमर्दनचंच

लकरयुगशाली २ पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकित
भवदुपयानम्। रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति
तव पंथानम्। धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली
गोपीपीनपयोधरमर्दन चंचल करयुगशाली ३ मुख
रमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलम्। चलस
खि कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नीलनिचोलम्। धीरस

गा॰ ६
गी॰

मीरे यमुनातीरे वसति वनमाली गोपीपीनपयोधरम

र्दनचंचलकरयुगशाली ४ उरसि मुरारे रुपहितहारे। घ

न इव तरलवलाके तडिदिव पीते रतिविपरीते। राजसिसु

कृतविपाके। धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वनमाली

गोपीपीनपयोधरमर्दनचंचलकरयुगशाली ५ विग।

लितवसने परिहृतरशने घटयजघनमपिधाने। कि

मलय शयने पंकज नयने विपिखिव हर्ष निधानम् ॥

धीर समीरे यमुना तीरे वसति वनमाली गोपी पीन प

योधर मर्दन चंचल कर युग शाली ६ हरिरभिमानी रजनि

रिदानीमियमपि याति विरामम् । कुरु मम वचनं सत्व

र रचनं पूरय मधुरिपु कामम् । धीर समीरे यमुना तीरे

वसति वनमाली गोपी पीन पयोधर मर्दन चंचल कर युग शाली ७

ग॰ खे
मी॰

श्रीजयदेवकृतहरिसेवे भणति परमरमणीयम् ॥ प्रमु
दितहृदयं हरिमतिसदयं नमत सुकृतकमनीयम् ॥
धीरसमीरे यमुनातीरे वसति वने वनमाली गोपीपीनपयोध
रमर्दन चंचलकरयुगशाली ।८। श्लोक ॥ विकिरति
मुहुः श्वासानाशाः पुरो मुहुरीक्षते । प्रविशति मुहुः कुं
जं गुंजन् मुहुर्बहु ताम्यति । रचयति मुहुः शय्यां पर्याकु

लेमञ्जरीर्वेगे मदनकदनक्लांतःकांते प्रियस्तववर्त्तते १
त्वद्वाम्येन समं समग्रमधुना तिग्मांशुरस्तंगतो । गोवि
दस्यमनोरथेनचसमंप्राप्तंतमःसान्द्रताम् । कोकानां
करुणस्वनेन सदृशी दीर्घामदभ्यर्थना । तन्मुग्धेवि
फलं विलंवनमसौ रम्योभिसारक्षणः २ आश्लेषाद
नुचुम्बनादनुनखोल्लेखादनुस्वांतज । प्रोद्बोधादनु

रा॰खे
गी

संभ्रमादनवरतारंभादनवीनयोः । ग्रन्यार्थिगतयोर्भ्रमा

न्मिलितयोःसंभाषणैर्जानतो । दंपत्योर्निशिकोनके

न तमसि व्रीडा विमिश्रोरसः ३ सभयचकितं विन्यस्य

न्तीं दृशं तिमिरे पथि । प्रतितरु मुहुः स्थित्वा मंदं पदा

नि वितन्वतीम् । कथमपि रहः प्राप्ता मंगैरनंगतरंगि

भिः । सुमुखि सुभगः पश्यन्स त्वामुपैतु कृतार्थतां ४

राधामुग्धमुखारविन्दमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली। ने
पथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारान्तकः। स्वच्छंदं
व्रजसुंदरीजनमनस्तोषप्रदोषश्चिरं। कंसध्वंसनधूम
केतुरवतु त्वां देवकीनंदनः ५ आर्या ॥ अध्यानंगतमश
कोविरमनवकोलना गदरेहटक्षा। नबरिते गोविंदे मन
सिजमंदे सखी याद्द ६॥ अष्टपदी।१।। पश्यति दिशि

दिशिरहसिभवंतम। त्वदधरमधुरमधूनिपिवंतम॥ ना
थहरे जयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे ॥ध्रु-॥१॥ त्वदभि
सरणरभसेन वलंती। पततिपदानि कियंतिचलंती-
नाथहरे जयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे २ विहित
विशदविसकिसलयवलया। जीवति परमिह तवरति
कलया। नाथहरे जयनाथहरे सीदतिराधावासगृहे ३

स्फुरदवलोकिन मंडनलीला। मधुरिपुरहमिति भाव

नशीला। नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधावासगृहे

५ श्लिष्यति चुंबति जलधर कल्पं। हरिरुपगत इति

तिमिरमनल्पम्। नाथहरे जयनाथहरे सीदति राधा

वासगृहे ६॥ भवति विलंबिनि विगलितलज्जा। वि

लपति रोदिति वासकसज्जा। नाथहरे जयनाथहरे सी

दति राधा वासगृहे ७ श्रीजयदेवकवेरिदमुदितम् । र
सिकजनेन तनुतामतिमुदितम् । नाथ हरे जयनाथ हरे
सीदति राधा वासगृहे ८ ॥ श्लोकः ॥ विपुलपुलकपा
लिः स्फीतसीत्कारमन्तर्जनितजडिमकाकुव्याकुलं व्या
हरन्ती । तव कितव विधायामन्दकन्दर्पचिन्तां रसजल
धिनिमग्ना ध्यानलग्ना मृगाक्षी ।१। अंगेष्वाभरणं क

रोनिवद्धःपत्रेपिसंचारिणि। प्रामेनांपरिशंकवेविन
न्नेनयाच्यांविरंच्यायनी। इन्याकल्पविकल्पतल्परच।
नासंकल्पलीलाशत। व्यासक्तापिविनात्वयावरत
नैनैषानिशांनेष्यति २ किंविश्राम्यसिकृष्णभोगि
भवनेभांडीरभूमीरुहि। भ्रातर्याहिनदृष्टिगोचर
मितःसानंदनंदास्पदम्। राधाया वचनंतदध्वगमुखा

न्नेदांतिके गोपनो। गोविंदस्य जयंति सायमतिथि प्राश
स्त्यगर्भा गिरः ३ अंशांतरेख जलदा जलवन्मेचान संजात
पातक स्वस्फुट लांछनश्रीः। हृंदावनोतर मदीपयदंशु
जालैर्दिक सुंदरी वदनचंदन बिंदुरिंदुः ४ आर्या प्रसर
निशशधर बिंबे विहित विलंबे च माधवे विधुरा विरचि
त विविध विलापं सा परितापं चकारोच्चैः ।५।। अष्ट

दी ।१३।। कथित समयेपि हरिरहह न ययौ वनम् । ममवि
फलमेतदनुरूपमपि यौवनम् । यामिहे कमिह शरणं स
खीजन वचन वंचिता ।ध्रु।।१।। यदनु गमनाय निशिग
हनमपि शीलितम् । तेनमम हृदयमिदम समशरकी
लितम् । यामिहे कमिह शरणं सखीजन वचन वंचिता
२ मम मरणमेव वरमति वितथ केतना । किमिह विष

गा· खे·
गी·

हामि विरहानलमचेतना। यामिहे कमिह शरणं सखीज
नवचनवंचिता २ मामहह विधुरयति मधुरमधुयामिनी·
कापि हरिमनुभवति कृतसुकृतकामिनी। यामिहे क
मिह शरणं सखीजनवचनवंचिता ४ अहह कलयामि व
लयादि मणिभूषणम्। हरिविरहदहनवहनेन बहुदूष
णं। यामिहे कमिह शरणं सखीजनवचनवंचिता॥ ५॥

कुसुमसुकुमारतनुमतनुशरलीलया। स्रगपि हृदि दह
ति मामति विषमशीलया। यामि हे कमिह शरणं सखी
जन वचन वंचिता ६ अहमिह निवसामि न गणित वनवे
तसा। स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा। यामि हे कमि
ह शरणं सखी जन वचन वंचिता ७ हरिचरणशरणज
यदेव कवि भारती। वसतु हृदि युवतिरिव कोमलकला

ग·वे
मी·

वनं। यामि हे कमिह शरणं सखीजनवचनवंचिता। प
श्लोक।। तत्किं कामपि कामिनीमभिसृतः किंवा क
लाकेलिभिर्बद्धो बंधुभिरंधकारिणि वनोपांते किमुद्भ्रा
म्यति। कांतः क्लांतमना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्ष
मः संकेतीकृतमंजुवंजुललताकुंजेपि यन्नागतः ।। अथा
गतां माधवमंतरेण सखीमियं वीक्ष्य विषादमूकां। वि

शंकमाना रमितेनकयापि जनार्दने दृष्टवदेनदाह २ अष्ट
पदी १३॥ स्मर समरो चित विर चित वेशा। गलित कुसु
मर विलु लित केशा। कापि चपला मधुरिपुणा विलस
ति युवति रधिकगुणा। ध्रु·१॥ हरिपरिरंभणवलित
विकारा। कुच कलशो परि तरलित हारा॥ कापि चप
लामधुरिपुणा विलसति युवति रधिकगुणा।२॥ वि

ग॰ खे
गीं

चल दलक ललिता ननवेश। तदधर पान रभस कृततेश॰
कापि चपला मधुरिपुणा विलसति युवति रधिकगुणा ३
चचल कुंडल ललित कपोला। मुखरित रशन जघन ग
ति लीला। कापि चपला मधुरिपुणा विलसति युवति र
धिकगुणा ४ दयित विलोकित लज्जित हसिता। बहु
विध कूजित रति रस भरिता। कापि चपला मधुरिपुणा

विलसति स्ववति रथिकगणा ५ विपुल पुलक पृथुवेप
थुभंगा। श्वसित निमीलित विकसदनंगा। कापिव प
ला मधुरिपुणा विलसति स्ववति रथिकगणा ६ श्रमजल
कण भर सुभग शरीरा। परिपति नोरसि रतिरणधीरा ॥
कापिव पला मधुरिपुणा विलसति स्ववति रथिकगणा ७
श्रीजयदेव भणित मति ललिते। कलि कलुषं शमयत

गी·गो·
गी·

हरिरमितम्। कापिचपला मधुरिपुणा विलसति यु
वतिरधिकगुणा ४ दशनविलोकितलो ॥ श्लोक
विरहपांडुमरारिमुखांबुज द्युतिरयंतिरयन्नपि वेदनाम्
विधुरतीवतनोति मनोभवः सुहृदये हृदये मदनव्यथां
२॥ अष्टपदी ॥ १४ ॥ समुदितमदने रमणीवदने चुंबनव
लिताधरे। मृगमदतिलकं लिखति सपुलकं। मृगमि

वधूजनीकरे । रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधु
ना । ध्रु ॥१॥ घनचयरुचिरे रचयति चिकुरे । तरलितत
रुणाननने कुरुवककुसुमं चपलासुषमं रतिपतिमृगका
नने । रमते यमुनापुलिनवने विजयी मुरारिरधुना ॥२॥
घटयति सुघने कुचयुगगगने मृगमदरुचिरूषिते ।
मणिसरममलं तारकपटलं नखपदशशिभूषितम् ॥

गा·टे
गीं

रमते यमुना पुलिन वने विजयी मुरारिरधुना ३ जितवि
सशकले मृदुभुज युगले ॥ करतल नलिनीदले मरकत
वलयं मधुकर निचयं वितरति हिमशीतले ॥ रमते यमु
नापुलिन वने विजयी मुरारिरधुना । ४ । रतिगृहजघने
विपुलापघने मनसिजकनकासने । मणिमयरशनं
तोरणहसनं विकिरति कृतवासने । रमते यमुना पुलिन

वने विजयी मुरारिरधुना ।५। चरणकिसलये कमला

निलये नखमणिगणपूजिते । बहिरपवरणं यावक

भरणं जनयति हृदि योजिते । रमते यमुनापुलिनवने

विजयी मुरारिरधुना ।६। रमयति सुभृशं कामपि सुदृ

शं खलहलधरसोदरे । किमफलमवसं वदसखि वि

रसं चिरमिह विटपोदरे । रमते यमुनापुलिनवने वि

जयो मुरारिरधुना ।७। इहरसभणने कृतहरिगुणने
मधुरिपुपदसेवके । कलियुगचरितं न वसतु दुरितं
कविनृपजयदेवके । रमते यमुनापुलिनवने विजयी
मुरारिरधुना ।८॥ श्लोक ॥ नायातः सखि निर्दयो य
दि शठस्त्वं दूति किं दूयसे । स्वच्छंदं बहुवल्लभः स रमते
किं तत्र ते दूषणम् । पश्याद्य प्रियसंगमाय दयितस्याकृ

घूमाणंगतौ। कांकंतानि भवादिव स्फुटदिदं चेतः स्वयं

यास्यति १ अष्टपदी।५॥ अनिल तरल कुवलय नयने

न। पततिन सा किसलय शयनेन। सखि या रमिता व

नमालिना। ध्रु॰।१। विकसित सरसिज ललित मुखेन॰

स्फुटतिन सा मनसिज विशिखेन। सखि या रमिताव

नमालिना।२। अमृत मधुर मृदुतर वचनेन। ज्वलति

ग॰ खे
गी॰

न सा मलयजपवनेन। सखि या रमिना वनमालिना ३
स्थलजलरुहरुचिकरचरणेन। दहति न सा हिमकरकि
रणेनँ सखि या रमिना वनमालिना ४ सजलजलदस
मुदयरुचिरेण। दलति न सा हृदि विरहभरेण। सखि या
रमिना वनमालिना ५ कनकनिकषरुचि शुचिवसनेन।
श्वसिति न सा परिजनहसनेन। सखि या रमिना वनमा

लिना।६। सकलभुवनजनवरतरुणेन। वहतिनमाक

ज्ञमतिकरुणेन। सखिययारमिता वनमालिना।७॥ श्री

जयदेवभणितरमणेन। प्रविशतुहरिरपि हृदयमनेन-

सखिययारमिता वनमालिना।८॥ श्लोक॥ मनोभवा

नंदनचंदनानिल। प्रसीदरेदक्षिणमंचवामताम॥

क्षणंजगत्प्राणविधायमाधवं। पुरोममप्राणहरोभवि

रा.हे
गी

ष्यसि १ विरहिवमलो सेवासोयं शिशिरोचहिमानिलो ।
विषमिव सुधारश्मिर्यस्मिन्दुनोति मनोगते । हृदयमदये
तस्मिन्नेवं पुनर्वलते बलात् । ज्वलयदृशौ वामः कामो
निकाममनिरंकुशः २ बाधां विधेहि मलयानिल पंचबा
णप्राणान्गृहाण नगृहं पुनराश्रयिष्ये किं ते कृतान्तभ
गिनि क्षमया तरंगैरंगानि सिंच मम शाम्यतु देहदाहः ३

सांद्रानंदपुरंदरादिदिविषद्वृंदैरमंदादरादानम्रैर्मुकुटेंद्र

नीलमणिभिःसंदर्शितेंदीवरम्। स्वच्छंदमकरंदसुंदर

गलन्मंदाकिनीमेदुरं। श्रीगोविंदपदारविंदमशुभस्कं

दायवंदामहे ४ अथ कथमपि यामिनीं विनीय स्मरश

रजर्जरितापि सा प्रभाते। अनुनय वचनं वदंतमग्रे प्र

णतमपि प्रियमाह साभ्यसूयम् ५। अष्टपदी ॥ ९ ॥

रा॰ ८ं
गी॰

रजनिजनितगुरुजागररागकषायितमलसनिमेषम्

वहति नयनमनुरागमिव स्फुटमुदितरसाभिनिवेशं

हरिहरियाहि माधव याहि केशव माधव कैतववादम्

तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादं ध्रु॰ १

कजलमलिनविलोचनचुंबनविरचितनीलिमरूपम्

दशनवसनमरुणं तव कृष्ण तनोति तनोरनुरूपम् ॥

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम्

तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ।२।

वपुरनुहरति तव स्मरसंगरखरनखरक्षतरेखम् ॥ म

रकतशकलकलितकलधौतलिपिरिव रतिजयलेखे-

हरि हरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम्

तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ३।

चरणकमलगलदलक्तकसिक्तमिदं तवहृदयमुदारं ।
दर्शयतीव बहिर्मदनद्रुमनवकिसलयपरिवारम् ॥
हरिहरि याहि माधव याहि केशव मा वद कैतववादम्
तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम् ४
दशनपदं भवदधरगतं मम जनयति चेतसि खेदम् ॥
कथयति कथमधुनापि मया सह तव वपुरेतदभेदम्

हरि हरि याहि माधव याहि केशव माधव कैतववादम्। ता

मनुसर सरसीरुह लोचनया नव हरति विषादम्॥ ५॥

वहसिव मलिनतरं तव कृष्ण मनोपि भविष्यति नूनम्।

कथमथ वंचयसे जनमनुगतमसमशरज्वरदूनम्॥

हरि हरि याहि माधव याहि केशव माधव कैतववादम्।

तामनुसर सरसीरुहलोचनया नव हरति विषादम् ६

रा· १वे
गी

भ्रमति भवान वलाकवलाय वनेषु किमत्रविचित्रम ।

प्रथयति पूतनिकैव वधूवधनिर्दयवालचरित्रम ॥

हरिहरि याहि माधव याहि केशव माधव कैतववादम ।

तामनुसर सरसीरुहलोचन या तव हरति विषादम १

श्रीजयदेवभणितमिति वंचितखंडितयुवतिविलापम ।

शृणुत सुधामधुरं विबुधा विबुधालयतोपि दुरापम ॥

हरिहरि याहि माधव याहि केशव मावद कैतववादम्
तामनुसर सरसीरुह लोचन या तव हरति विषादम् ८
स्लोकः॥ तवेदंपश्यन्त्याः प्रसरदनुरागंवहिरिव । प्रि
यापादालक्तच्छुरितमरुणच्छायहृदयम् । ममाद्यप्र
ख्यातप्रणयभरभंगेन कितव । त्वदालोकः शोकाद
पि किमपि लज्जां जनयति । आतंनीलनिचोलमञ्जुत

रा·रवे
गी·

उरःसंवीतपीतांशुके।राधायाःस्तनकिंतेविलोक्यहसति
स्वैरंसखीमंडले।ब्रीडाचंचलमंचलंनयनयोराधाय
राधानने।स्मेरस्मेरमुखोयमस्तुजगदानंदायनंदा
त्मजः २॥ आर्या। अयनोमन्मथखिन्नोरतिरसभिन्नो
विषादसंपन्नाम्।अनुचिंतितहरिचरितांकलहांतरि
तामवादसखी ३॥ अष्टपदी॥ १७॥ हरिरभिसरति

वहतिमधुपवने। किमपरमधिसुखंसखिभवने। मा

धवेमाकुरुमानिनिमानमये। ध्रु।१॥ तालफलादपि

गुरुमतिसरसम्। किंविफलीकुरुषेकुचकलशम्।

माधवेमाकुरुमानिनिमानमये।२। कतिनकथित

मिदमनुपदमचिरम्। मापरिहरहरिमतिशयरुचिरं

माधवेमाकुरुमानिनिमानमये।३। किमितिविषीद

गा·खे गी·

सिरोदिषि विकला। विहसति युवतिसभा तव सकला।

माधवे माकुरु मानिनि मानमये ४ सजल नलिनी दल

शीतलित शयने। हरिमवलोकय सफल नयने। माध

वे माकुरु मानिनि मानमये ५ जनयसि मनसि किमिति

गुरुखेदम्। शृणु मम वचनमनीहितभेदम्। माधवे

माकुरु मानिनि मानमये ६ हरिरुपयातु वदतु बहुमधु

रम्। किमिति करोषि हृदयमतिविधुरम्। माधवे मा

कुरु मानिनि मानमये ७ श्रीजयदेवभणितमतिललि

तम्। सुखयतु रसिकजनं हरिचरितम्। माधवे माकु

रु मानिनि मानमये ८॥ श्लोक॥ स्निग्धे यत्परुषासि

यत्प्रणमति स्तब्धासि यद्रागिणी। द्वेषस्थासि यदुन्मु

खे विमुखतां यातासि तस्मिन्प्रिये। तद्युक्तं विपरीतका

रा·हे
गी

सिंगानव श्रीखेड वर्कीविंषं। शीतोष्णलपनोहिमेङ्गत
वह्रःक्रीडामदोयाननाः २ श्रेतमेंह्नन मैलिहूर्गानवल
मंदारविस्रंसनः। लव्याकर्षणाहृष्टिद्दर्षणामहामेरः
ज्रंभंगीरस्याम। हण्दानव हूयमान दिविषड्वीराङुः
रिवापदे। मंशःकंसरिपोर्ष्येपोहयतवः श्रयोसिंवमी
रवः २ श्रंगनेमसरणारोषवशामसीमनिः स्वामनिः

सहमुखीं सुमुखीमुपेत्य॥ सव्रीडमीक्षितसखीवदनां
दिनांते सानंदगद्गदपदं हरिरित्युवाच ३॥ अष्टपदी॥ १९
वदसि यदि किंचिदपि दंतरुचिकौमुदी हरति दरतिमि
रमतिघोरम्। स्फुरदधरसीधवे तववदनचंद्रमा रोचय
ति लोचनचकोरं। प्रिये चारुशीले मुंचमयि मानमनि
दानम् सपदि मदनानलो दहति मम मानसं देहि मुख

गी·खे
गो·

कमलमधुपानम् । ध्रु ।।२।। सत्यमेवासियदिसुदतिम
यिकोपिनी देहिखरनयनशरघातनम् । घटयभुजबंध
नेजनयरदखंडने येनवाभवतिसुखजातम् । प्रियेचा
रुशीले २ त्वमसिममभूषणं त्वमसिममजीवने त्वम
सिममभवजलधिरत्नम् । भवतुभवतीहमयिसतत
मनुरोधिनी तत्रममहृदयमतियत्नम् । प्रियेचारुशी

४५

48

ले २ नीलनलिनाभमपि तन्वि तव लोचनं धारयति को
कनदरूपम्। कुसुमशरबाणभावेन यदि रंजयसि कृ
ष्णमिदमेतदनुरूपम्। प्रिये चारुशीले ४ स्फुरतु कुच
कुम्भयोरुपरि मणिमंजरी रंजयतु तव हृदयदेशम्॥
रसतु रशनापि तव घनजघनमंडले घोषयतु मन्म
थनिदेशम्। प्रिये चारुशीले ५ स्थलकमलगंजने

ग·हे
गी·

ममहृदयंरंजने जनितरतिरंगपरभागम्। त्वनमसृण
वाणि चरणद्वये सरसलसदलक्तकरागम्। प्रियेचारु
शीले ६ स्मरगरलखंडनं ममशिरसिमंडनं देहिपदप
ल्लवमुदारम्। ज्वलतिमयिदारुणो मदनकदनानलो
हरतुतदुपाहितविकारम्। प्रियेचारुशीले।७। इतिव
टुलचाटुपटुचारुमुरवैरिणो राधिकामधि वचनजातम्

जयति जयदेवकविभारती भूषिते मानिनी जन जनित

शातम् । प्रिये चारुशीले । ८ ॥ श्लोकः ॥ परिहर कृतातंके

शंकां त्वया सततं घन स्तन जघनयाक्रांते स्वांते । पर

नवकाशिनि विशति वितनोरन्यो धन्यो न कोपि ममां

तरं स्तन भरपरीरंभारंभे विधेहि विधेयताम् १ मुग्धे

विधेहि मयि निर्दयदंतदंशं दोर्वल्लिबंधनिबिडस्तनपी

ग·रुं
गो·

उनानि। वेडिलमेव मदमंवनपेववाण वेसलकोंउद

लनादसवःप्रयोत २ शाशिञाबि नवभानिभेशवभूर्षव

जनमोहकालकालसर्पः। नउदिनभयभंजनायए

मेन्वदयरसीप्रसयैव सिंहमंत्रः ३ व्याघयतिहयामौ

नेतलिप्रपंचय पंवमे नरुणामप्रालापैस्लापं विनो

दयदृष्टिभिः समाशिवि विमलीभावंनावहिमेवनवेव

य। स्वयमपि शायस्त्विगयो म्रगौ प्रियो हृम्रप स्थितः ४

बंधूकद्युतिबांधवोयमधरः स्निग्धोमधूकच्छविर्गंड

श्चंडिचकास्तिनीलनलिनश्रीमोचनंलोचनम्। ना

साभ्येतितिलप्रसूनपदवींकुंदाभदंतिप्रिये। प्रायस्त्व

न्मुखसेवयाविजयतेविश्वंसपुष्पायुधः ५ दृशौतव

मदालसेवदनमिंदुसंदीपनंगतिर्जनमनोरमा। विधु

गा॰ टे
गी॰

तरेभमन्हृदयम् रतिसुखकलावती हविरविश्रलेखेभुवा
वक्षोविश्लथयौवने वहसितान्विरयष्वीगता ६ श्रीतिवस्त्र
न्तो हरिः कुवलयापीडेन सार्धं रणे राधापीनपयोधरस्म
रणा कृत्कुम्भेन संभेदवान यत्र स्विद्यति मीलति क्षणम
भून्निवंतदालोकनात्कंसस्याथ जितंजितंजितमिति
व्यामोहकोलाहलः ७ सुचिरमननयेन प्रीणयित्वा

म्रगाक्षी गतवति क्रतवेषे केशवे कुंजशय्याम् । रचित
रुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फुरति निरवसादां कापि
राधां जगाद ८ ॥ अष्टपदी ॥ २१ ॥ विरचित चाटुवचनरच
ने चरणे रचित प्रणिपातम् । संप्रति मंजुल वंजुलसीम
नि केलि शयन मनुयातम् । मुग्धे मधु मथन मनुग
त मनुसर राधिके । ध्रु० ॥ घन जघनस्तन भार भरे दर

ग॰ हे
गी॰

मंथरचरणविहारम् । मुखरितमणिमंजीरमुपैहि वि

धेहि मरालनिकारम् । मुग्धे मधुमथनमनुगतमनु

सर राधिके २ शृणु रमणीयतरं तरुणीजनमोहनमधु

पविरावम् । कुसुमशरासनशासनवंदिनि पिकनिकरे भ

ज भावम् । मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसर राधिके ३

अनिलतरलकिसलयनिकरेण करेण लतानिकुरंबम्

मुग्धे मधुमथनमनुगतमनुसरराधिके ४ स्फुरितम
नंगतरंगवशादिव सूचितहरिपरिरंभम् । पृच्छमनोह
रहारविमलजलधारममुंकुचकुंभम् । मुग्धे मधुमथ
नमनुगतमनुसरराधिके ५ अधिगतमखिलसखी
भिरिदं तववपुरपिरतिरणसज्जम् । चंडिरणितरश
नारवडिंडिममभिसरसरसमलज्जम् । मुग्धेमधुमथ

रा॰ खे
मी॰

न मनुगान मनुमरागयिके ८ स्मरशरसुभगनखेन सखी

मवलेव्य करेण मलीलम् । चलवलयक्कणितैरवबोधय

हरमपि निजगतिशीलम् । सखे मधु मथन मनुगान

मनुमरागयिके ७ श्रीजयदेवभणित मधरी कृतहारमु

दासित वामम् । हरिविनिहित मनसा मधि तिष्ठतु कंठ

तटी मभिराम म् । सखे मधु मथन मनुगान मनुमरागयि

के ८ ॥ श्लोक ॥ सामोदं पश्यति वल्पति प्रियकण्ठे ग्रहेण
मालिंगनैः प्रीतिं याप्यति रसपाने सखि समागमे निवि
ताञ्चलः संतापयति केपने चलक यन्यानंदति विय
ति चन्द्रं स्तुति मूर्छति स्थिरतमः खेजे निजे प्रियः ।
श्रव्यो निंदित पंकजले श्रवणयोः साप्युच्छ्वगच्छावलिं
मूर्ध्नि श्यामसरोजदाम कुचयोः कस्तूरिकापत्रकम्

गा॰ खे॰
गी॰

र्त्तानामभिसारसत्वरहृदांविष्वङ्निकुंजेसखि। ध्वान्ते
नीलनिचोलचारुसदृशांप्रत्यंगमालिंगति २ काश्मीर
गौरवपुषामभिसारिकाणामाबद्धरेखमभितोमणिमं
जरीभिः एतत्तमालदलनीलतमंतमिस्रं तत्प्रेमहेमनि
कषोपलतांतनोति ३ हारावलीतरलकांचनकांचिदा
म केयूरकंकणमणिद्युतिदीपितस्य द्वारेनिकुंजनिल

यस्या हरिं निरीक्ष्य व्रीडावतीमथ सखी निजगाद राधाम्
४॥ अष्टपदी॥२०॥ मंजुतरकुंजतलकेलिसदने प्रविश
राधे माधवसमीपमिह विलस रतिरभसहसितवदने १
नवभवदशोकदलशयनसारे प्रविश राधे माधव स
मीपमिह विलस कुचकलशतरलहारे २ कुसुमचय
रचितशुचिवासगेहे प्रविश राधे माधवसमीपमिह वि

गा·खे
गी

लसकुसुमसुकुमारदेहे ३ चलमलयपवनसुरभिशी
ते प्रविशराधे माधव समीपमिह विलसरसवलितल
लितगीते ४ विततबहुवल्लिनवपल्लवघने प्रविशरा
धे माधवसमीपमिह विलसचिरमलिनपीनजघने ५
मधुमुदितमधुपकुलकलितरावे प्रविशराधेमाधव
समीपमिह विलसमदनरभसरसभावे ६ मधुतरल

पिकनिकरनिनदमुखरे प्रविशराधेमाधवसमीपमि

ह विलसदशनरुचिरुचिरशिखरे ७ विहितपद्मावती

सुखसमाजे कुरुमुरारे मंगलशतानिभणतिजयदे

वकविराजराजे ८ ॥ श्लोक ॥ त्वांचित्तेनचिरंवहन्नयम

ति श्रान्तोभृशंतापितः कंदर्पेणचपातुमिच्छतिसुधा

संबाधबिंबाधरम् अस्यांकंतदलंकुरुक्षणमिहभ्रूक्षे

रा॰ खं
गी॰

पतल्मीलव। कीर्तिदामश्ववोपसेवितपदांभोजेकृतं संभ्र

मः १ सा ससाध्वससानंदां गोविंदे लोललोचना। सिंजान

मंजुमंजीरं प्रविवेश निवेशनम् २॥ अष्टपदी॥ २२॥ रा

धावदन विलोकन विकसित विविध विकार विभंगम्।

जलनिधिमिव विधुमंडल दर्शन तरलित तुंग तरंगम्।

हरिमेकरसं चिरमभिलषित विलासम् सा ददर्श गुरुहर्ष

वशंवद वदन नंग निवासम् । ध्रु ।१। हारममलतरतार

मुरसि दधतं परिरभ्य विदूरम् । स्फुटतरफेनकदंब

करंबितमिव यमुनाजलगतपूरम् । हरिमेकरसं चिर

मभिलषितविलासम् सा ददर्श गुरुहर्ष वशंवद वदन

नंग निवासम् । २ । श्यामल मृदुल कलेवर मंडल मधि

गत गौर दुकूलम् । नील नलिन मिव पीत परागपटल

रा·खे
गी·

भरवलयितमूलम्। हरिमेकरसं चिरमभिलषितवि
लासम्। सा ददर्श गुरुहर्षवशंवदवदनमनंगनिवासम्
३॥ तरलदृगंचलचलनमनोहरवदनजनितरतिरागं·
स्फुटकमलोदरखेलितखंजनयुगमिवशरदितडागं॥
हरिमेकरसं चिरमभिलषितविलासम्। सा ददर्श गुरुहर
षवशंवदवदनमनंगनिवासम्।४॥ वदनकमलपरि

शीलित मिलित मिहिरसम कुंडल शोभम्। स्मितरुचि

रुचिर समुल्लसिताधरपल्लव कृतरति लोभम्। हरिमे

करसं चिरमभिलषित विलासम्। सा ददर्श गुरु हर्षव

शंवद वदनमनंग निवासम् ५ शशि किरण छुरितो

दरजलधर सुंदर सकुसुमकेशम्। तिमिरोदित विधु

मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशम्। हरिमेकरसं

ग·वे
गी·

विरमभिलषितविलासम्। सा ददर्शगुरुहर्षवशंवद
वदनमनंगनिवासम् ६ विपुलपुलकभरदंतुरितंर
तिकेलिकलाभिरधीरम्। मणिगणकिरणसमूह
समुज्वलभूषणसुभगशरीरम्। हरिमेकरसंचिरम
भिलषितविलासम्। सा ददर्शगुरुहर्षवशंवदवदन
मनंगनिवासम् ७ श्रीजयदेवभणितविभवद्विगुणी

कृतभूषणभारम्। प्रणमत हृदि विनिधाय हरिं भव

जलधि सुकृतोदयसारम्। हरिमेकरसं चिरमभिलषि

तविलासम्। सा ददर्श गुरुहर्ष वशंवदवदनमनंगनि

वासम् ८॥ श्लोक॥ अतिक्रम्यापांगं श्रवणपथपर्यन्त

गमन प्रयासेनेवाक्ष्णोस्तरल तरतारं पतितयोः॥

इदानीं राधायाः प्रियतमसमालोकसमये। पपात स्वे

ग·वे·
गी·

दांत्र प्रभरश्च हर्षीक्र निकरः १ भजेम्यालल्योने कनक
पटके हृति पिहित स्मिनेयाने गेह्नाद्दरि व हिनालीप
विजने। श्रियासंपपसंपन्याः स्मरशरवशाकूलनम्र भंगं
सलज्जालज्जापि व्यगमदिव हरे स्मरगदृथाः २ जयश्री
विन्यस्तैर्महित इव मंदारकुसुमैः स्वयं सिंहद्वारा निहिप
रणामदामद्विनइव भज्जापीडश्रीडाहतकुवलयापी

उक्करिणः प्रकीर्णाहगोविंडर्जेयतिभजंदेडेऽस्वरजितः

३ गतवति सखीवृंदे मंदत्रपाभरनिर्भर स्मरपरवशाकू

तस्फीतस्मितस्नपिताधराम् सरसमनसं दृष्ट्वा राधां मुहु

र्नवपल्लव प्रसवशयने निक्षिप्ताक्षीमुवाच हरिः प्रियाम्

४ अष्टपदी॥ २३ किसलयशयनतले कुरु कामिनि चर

णनलिनविनिवेशम्। नवपदपल्लववैरिपराभवमिद

गी·गो
मी·

मनुभवन्तसुवेशम । क्षणमधुना नारायणमनुगतम
नुसर भो राधिके । ध्रु । १ । करकमलेन करोमि चरणम
हमागमितासि विदूरम । क्षणमुप कुरु शयनोपरिम
मिव नूपुरमनुगति शूरम । क्षणमधुना नारायणमनु
गतमनुसर भो राधिके । २ । वदनसुधानिधिगलितम
मृतमिव रचय वचनमनुकूले । विरहमिवापनयामि

पयोधररोधकमुरसि दुकूलम्। रमणमधुना नाराय

णमनुगत मनसरभोराधिके ३ प्रियपरिरंभणारभस

वलितमिव पुलकितमनुरापम्। मधुरसिजवकल

शेविनिवेशय शोषय मनसिजतापम्। रमणमधुना

नारायणमनुगत मनसरभोराधिके ४ अधरसुधार

समुपनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम्। त्वयिवि

रा·ख्वे
गी·

निहितमनसं विरहनलदग्धवपुषम विलासम ॥ दा॥

मधुना नारायणा मनगत मनसरभो राधिके ५ शशिम

वि मनवेरय मणिवशना रणमनरणा कंठनिनादम ॥

मम स्फुरति युगले पिकरव विकलेशमय विरहवसादम ।

दाणामधुना नारायणा मनगत मनसरभो राधिके ॥ ६ ॥

मामति विफल रुषा विकली कृतमवलोकित मधुनेदं

मीलति लज्जित मिव नयने नव विरम विसृज रति खेदं

क्षणमधुना नारायण मनुगत मनुसर भो राधिके ॥७

श्रीजयदेव भणित मिदमनुपद निगदित मधुरिपुमो

दम्। जनयतु रसिकजनेषु मनोरम रति रस भाव विनो

दम्। क्षणमधुना नारायण मनुगत मनुसर भो राधि

के। ८॥ श्लोक॥ प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबिडाश्लेषे

ग॰ वे
गी॰

निमेषेणाच। क्रीडाकूतविलोकितेऽधरसुधापानेक
थाकेलिभिः। आनंदाधिगमेनमन्मथकलायुद्धेपि
यस्मिन्नभूत्। उद्भूतःसतयोर्बभूवसुरतारंभःप्रियंभाव
कः। दोर्भ्यांसंयमितःपयोधरभरेणापीडितःपाणिजै
राविद्धोदशनैःक्षताधरपुटःश्रोणीतटेनाहतः। हस्ते
नानमितःकचेऽधरमधुस्पंदेनसंमोहितः। कांतःकाम

पिन्तमिमापनदष्टो काममस्यवामागतिः २ मारांकेरतिके

लिसंकुलरणारंभेतयासाहस। प्रायंकांतजयायकिंचि

दुपरिप्रारंभियत्संभ्रमात्। निष्पंदाजघनस्थलीशिथि

लितादोर्वल्लिरुत्कंपितं। वक्षोमीलितमक्षिपौरुषरसः

स्त्रीणांकुतःसिध्यति ३ तस्याःपाटलपाणिजांकितमु

रोनिद्राकषायेदृशौ। निर्धौतोऽधरशोणिमाविलुलित

रा. खे.
गी.

सत्तसजोमर्द्दजाः कोचीदामदरस्तथांवलमितिशात
निस्तानैर्दृशो। रेभिः कामशरैस्तदद्भुतमहो पञ्चमेनः स्की
लितम् ४ नामसाप्यमयिस्वयंवरपरांक्षीरोदतीरोदरे ॥
शंके सुंदरि कालकूटमपिबन्मूढो मृडानीपतिः। इत्थं
पूर्वकथाभिरन्यमनसो विक्षिप्य वामांचलं। राधायाः स्त
नकोरकोपरिचलन्नेत्रो हरिः पातु वः ५ आलोलः केश

पाशस्तरलतमलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ। स्पष्टादष्टाधर
श्रीः कुचकलशरुचा हारिता हारयष्टिः कांची कांचिद्ग
ताशां स्तनजघनपदं। पाणिनाच्छाद्य सद्यः पश्यंती सत्र
पं मां। तदपि विलुलितस्रग्धरेयं धिनोति ९ ईषन्मीलि
तदृष्टिमुग्धहसितं सीत्कारधारावशा दव्यक्ताकुल
केलिकाकुविकसद्दंतांशुधौताधरम्। श्वासोत्कंपपयो

रा॰ ख्वे
गी॰

परोपरिपरिष्वंगी कुरंगीदृशो । हर्षोत्कर्षविमुक्तनिः
सहतनोर्धन्यो धयत्याननम् ॥ आर्या ॥ अथ सहसा सु
प्रीतं सुरतान्ते सा नितान्तखिन्नांगी । राधा जगाद सादर
मिदमानंदेन गोविंदम् ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ २४ ॥ कुरुयदु
नंदन चंदनशिशिरतरेण करेण पयोधरे । मृगमदप
त्रकमत्र मनोभवमंगलकलशसहोदरे । निजगाद सा य

दुनंदने क्रीडति हृदयानंदने । ध्रु । ९ ॥ अलिकुलगंज
नमंजनकं रतिनायकसायकमोचने । त्वदधरचुंब
नलंबितकज्जलमुज्ज्वलय प्रियलोचने । निजगाद सा य
दुनंदने क्रीडति हृदयानंदने ॥ नयनकुरंगतरंग वि
लासनिरासकरे श्रुतिमंडले । मनसिजपाशविलास
पाशविलासधरे शुभवेश निवेशय कुंडले । निजगाद

ए·रव
गी·

मायदुनंदनेक्रीडति हृदयानंदने। ३ भ्रमरचयंरचिरं

चयंतमुपरिरुचिरंमममसन्मुखे। जितकमलेविमले

परिकर्मय नर्मजनकमलकंमुखे। निजगादसायदुनं

दनेक्रीडति हृदयानंदने ४ मृगमदरसवलितंललितं

कुरुतिलकमलिकरजनिकरे। विहितकलंककलं

कमलाननविश्रमितश्रमशीकरे। निजगादसायदुनं

दने क्रीडति हृदयानंदने ५ मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मा

नसजध्वजचामरे । रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखंडि

शिखंडकडामरे । निजगाद सा यदुनंदने क्रीडति हृदयानं

दने ६ सरसघने जघने मम शंबरदारणवारणकंद

रे । मणिरशनावसनाभरणानि शुभाशय वासय

सुंदरे । निजगाद सा यदुनंदने क्रीडति हृदयानंदने ।७॥

गा॰ खे
गी॰

श्रीजयदेववचसि सुखदे हृदयं सदयं कुरु मंडने। हरिच
रणस्मरणामृतकृतकलिकलुषज्वरखंडने। निज
गदति सा यदुनंदने क्रीडति हृदयानंदने। ८॥ श्लोक॥
रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोर्घटय जघने
कांचीमंच स्रजा कवरीभरम्। कलय वलयश्रेणीं पाणौ
पदे कुरु नूपुराविति निगदितः प्रीतः पीतांबरोपि तथा

करोतु । पर्यंकीकृतनागनायकफणाश्रेणीमणीनां
गणे । संक्रांतप्रतिबिंबसंवलनया विभ्रद्वपुर्विक्रियां ।
पादांभोरुहधारिवारिधिसुतामक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः । का
यव्यूहमिवाचरन्नुपचितो हृद्बोहरिः पातु वः २ य
द्गांधर्वकलासु कौशलमनुध्यानं च यद्वैष्णवं । यच्छृं
गारविवेकतत्वरचनाकाव्येषु लीलायितम् । तत्सर्वं ज

ग०टी०
गी०

यदेवपंडितकवेः कृष्णैकतानात्मनः सानंदाः परिशोध
यंतु सुधियः श्रीगीतगोविंदतः २ साध्वी माध्वीक चिंता
न भवति भवतः शर्करे कर्कशासि द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वाम
मृत मृतमसि क्षीर नीरं रसस्ते माकंद क्रंद कांताधरध
रणितलं गच्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगारसारस्वतमिह
जयदेवस्य विष्वग्वचांसि ४ श्रीभोजदेवप्रभवस्य । वा।

ग्रमे परिरंभणेन ददामि । तस्मान्नामपरं कदापि
नैव दृशे न करोमि । देहि सुंदरि दर्शनेन मममन्म
थेन दुनोमि । वर्णितं जयदेवकेन हरेरिदं प्रव
णेन किंदुबिल्व समुद्र संभवरोहिणीरमणेन
६ पाणौ मा कुरु चूत सायक ममुं मा चाप मारोप
य क्रीडा निर्जित विश्व मूर्छित जना घातेन किं पौ

गी· टी·

गी·

कंठे । तस्या एव मृगीदृशो मनसिजप्रेंखत्कटाक्ष्ना

शुग । श्रेणी जर्जरितं मना गपि मनो नाद्यापि सं

धत्ते १३ हृदि बिसलता हारो नायं भुजंगमना

यकः कुवलय दल श्रेणी कंठे न सा गरल द्युतिः

मलयज रजो नेदं भस्म प्रिया रहिते मयि प्रहर न

हर भ्रांत्यानंग क्रुधा किमु धावसि १४ अष्टपदी

वहति मलय समीरे मदन मुपनिधाय स्फुटति कुसु
मनिकरे विरहि हृदय दलनाय । सखि सीदति तव
विरहे वनमाली । दहति शिशिर मयूखे मरणमनु
करोति । पतति मदन विशिखे विलपति विकलतरो
ति २ ध्वनति मधुप समूहे श्रवण मपि दधाति । म
नसि वलित विरहे निशि निशि रुजमुपयाति ३

री॰टे॰
गी॰

वसति विपिन वितानेत्यजति ललित धाम। लुठ
ति धरणि शयने बहु विपलति तव नाम ४ भण
ति कविजयदेवे विरहि विलसितेन। मनसि रभस
विभवे हरि रुदयतु सुकृतेन ५ श्लोक पूर्वं यत्र सम।
मं त्वया रति पते रासा दिताः सिद्धयस्तस्मिन्नेव नि
कुंज मन्मथ महा तीर्थे पुनर्माधवः। ध्यायंस्त्वाम

निशि जपन्नपि नैव वालाप मेखलावली भूषयत्नकवके

म तिमिरपरीरंभारंभे वोबति १० विकिरति मुहुः

श्वासा नाशाः पुरो मुहुरीक्षते प्रविशति मुहुः कुंजे गुं

जे गुंजन्मुहुर्बहु ताम्यति । रचयति मुहुः शय्याप

र्याकुलं मुहुरीक्षते मदन कदन क्लान्तः कान्ते प्रिय

स्तव वर्त्तते ११ त्वा निस्पर्शी सखा निनेच नरला स्त्र

ग॰दे॰
गीं

गयाटप्रो विभ्रमाल्लङ्कोवज मोरंभे सव सुयाल्लंडी

गिरे वक्रिमा। माविंवा यथमाथुरीति विषया संगे

यिवेश्मानसे नसालय समागिरेत विरह्यागि कथं

वर्तते १ माकुतस्मितमा कुला कलगलह्मिलु म

लासिते। भ्रूवली कमलीक दर्शिनभ्रमा मूलाई

ह्यल्तने। गोपीनाक्षि रत्न निरीक्ष्य गमिता कांन्त

स्थिरे विनयन्नेतन्मनो मनोहरो हरतु वः क्लेशान्नवः
केशवः २ यमुना तीर वानीर निकुंजे मंदमास्थितं
प्राह प्रेमभरोद्भ्रांतं माधवं राधिका सखी। वसंते
वासंती कुसुम सुकुमारै रवयवै। भ्रमंती कांतारे
बहु विहित कृष्णानुसरणां। अमंदं कंदर्पज्वरजनि
तचिंताकुलतया। वलद्बाधां राधां सरसमिद्मूचे

गी॰ टे॰
गी॰

मरुवारी अष्टपदी ॥ ललित लवंगलता परिशील
न कोमल मलय समीरे । मधुकर निकर करंबित
कोकिल कूजित कुंज कुटीरे । विहरति हरिरिह स
रस वसंते नृत्यति युवति जनेन समं सखि विरहि
जनस्य दुरंते । उन्मद मदन मनोरथ पथिक वधूज
न जनित विलापे । अलि कुल संकुल कुसुम समू

ह निराकुलवकुलकलापे २ मृगमदसौरभरभस
वशंवद नवदल मालतमाले। युवजन हृदयवि
दारण मनसिज नखरुचि किंशुक जाले। मदन
महीपति कनक दंड रुचि केसर कुसुम विकासे मि
लित शिलीमुख पाटल पटल कृतस्मर तूणवि
लासे ४ विगलितलज्जितजगदवलोकनतरु

गी. टे-
गी

णाकरुणा कान्तहासे । विरहिनि कृन्तन कुन्त मुखा
कृति केतकि दंतुरिताशे ५ माधविका परिमल
ललिते नव मालति यान सुगंधौ । मुनि मनसा
मपि मोहन कारिणि तरुणाकारण बंधौ ६ स्फुर
दति मुक्त लता परिरंभण मुकुलित पुलकि
त वृते । वृंदावन विपिने परि सर परिगत

यमुनाजलपूते। श्रीजयदेवभणितमिदमुदय

ति हरिचरणस्मृतिसारं। सरसवसंतसमयव

नवर्णनमनुगतमदनविकारं ३ अष्टपदी॥

दरविदलितमल्लीवल्लिचंचलपरागप्रकटित

पटवासैर्वासयन्काननानि। इह हि दहति चेतः

केतकीगंधबंधुःप्रसरदसमबाणप्राणवद्गंध

गा॰ टे॰
गी॰

गाढः २१ उन्मीलन्मधुगंधलुब्धमधुपव्याधूत चू
ताङ्कुर क्रीडत्कोकिल काकली कलकलैरुद्गीर्ण
कर्णज्वराः नीयंते पथिकैः कथं कथमपि ध्याना
वधानक्षण प्राप्त प्राणसमा समागमरसोल्लासैरमी
वासराः २२ उद्ग्र लोकश्लोक स्तन कन ककाशोक
लतिका विकाशः कासारो पवन पवनोयं व्यथ

यति अपि आम्यङ्गेगी रणीति रमणीयान मङ्कलप
ल्पति सुनाने सवि शिखिविणीघं सवियति। प्रह
पत्री॥ निंदति चंदन मिंदु करण मन विंदति खेद
मधीरं व्याल निलय मिलनेन गरल मिव कलय।
ति मलय समीरं॥१॥ माधव सा विरहे तव दीनाम
नसिज विशिख भया दिव भावनया त्वयि लीना

गा·टे·
गी·

अविरल निपतित मदन शरादिव भवद वनाय वि
शाले। स्वहृदय मर्म्म करोति सजल नलिनी दल
जाले २ कुसुम विशिख शरतल्प मनल्प विला
स कला कमनीयं। व्रतमिव तव परिरंभ सुखा
य करोति कुसुम शयनीयं ॥३॥ वहति च गा
लित विलोचन जलधर माननकमलमुदारं। विधु

मिव विकट विधुंतुद दन्त दलन गलितामृतधारं

४ विलिखति रहसि कुरंगमदेन भवंतम समशरभू

तं । प्रणमति मकर मधो विनिधाय करेच शरं न

व चूतं ५ प्रतिपद मिदमपि निगदति माधव तव

चरणे पतिताहं । त्वयि विमुखे मयि सपदि सुधा

निधि रपि कुरुते तनुदाहं ६ ध्यान लयेन पुरः प

ग·टे·
गी·

रिकल्प्य भवंतमतीव दुरापं। विलपति हसति वि
षीदति रोदति चंचति मुंचति तापं ७ श्रीजयदेव भ
णितमिदमधिकं यदि मनसा नटनीयं। हरि विर
हाकुलवल्लवयुवतिसखीवचनं पठनीयं ८ छव
पटी॥ श्लोक॥ आवासो विपिनायते प्रियसखी
मालापि जालायते॥ तापोपि श्वसितेन दा

17

वदहनज्वालाकलापायते। सापि त्वद्विरहेण ह
न्त हरिणीरूपायते हा कथं। कंदर्पोपि यमायते
विरचयन् शार्दूलविक्रीडितं ध्रुवपदी॥ स्तनवि
निहितमपि हारमुदारं सा मनुते कृशतनुरिव भा
रं। राधिका विरहे तव केशव। सरसमसृणमपि म
लयजपंकं पश्यति विषमिव वपुषि सशंके २ श्वसि

गी॰टे॰
गी॰

न पवनमनुपमपरिणाहे । मदनदहनमिव दहति

सदाहे ३ दिशि दिशि किरति सजलकणजालं ॥

नयननलिनमिव विगलितनाले ४ नयनविष

यमिव किसलयतल्पे । कलयति विहितहुताश

नकल्पे ५ त्यजति न पाणितलेन कपोलं । बाल

शशिनमिव सायमलोलं ६ हरिरिति हरिरिति

जपति सकामे। विरह विहित मरणे व निकामे
७ श्रीजयदेव भणित मिति गीते। सुखयतु के
शव पद मुपनीते ८ अष्टपदी॥ श्लोक॥ स्मरातु
रं दैवत वैद्यहृद्य त्वदंगसंगा मृतमात्र साध्यां। वि
मुक्त बाधां कुरुषे न राधा मुपेंद्र वज्रा दपि दारु
णोसि ॥ २५ सारो मो वनि सीत्करोति विलपन्तक

ग.टी.
गी

म्पते ताम्यति ध्यायत्युद्भ्रमति प्रमीलति पतत्युद्या
ति मूर्छत्यपि एतावत्यतनुज्वरे वरतनुर्जीवेन्न किं
ते रसात्स्वर्वैद्यप्रतिम प्रसीदसि यदि त्यक्तोन्यथा ह
स्तकः २९ कंदर्पज्वरसंज्वरातुरतनोराश्चर्यमस्या
श्चिरं। चेतश्चंदनचंद्रमःकमलिनीचिंतासु संताम्य
ति। किंतु क्लांतिरसेन शीतलतनुं त्वामेकमेव प्रियं

ध्यायंती रहसि स्थिता कथमपि क्षीणा क्षणं प्राणि
ति ॥ ४७ ॥ क्षणमपि विरहः पुरा न सेहे नयननिमी
लनखिन्नया यया ते । श्वसिति कथमसौ रसाल
शाखां चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां ॥ ४८ ॥ रा
धामुग्धमुखारविंदमधुपस्त्रैलोक्यमौलिस्थली-
नेपथ्योचितनीलरत्नमवनीभारावतारान्तकः ॥

गी॰ टे॰
गी॰

स्वछंदंव्रजसुंदरीजनमनस्तोकप्रदोषश्चिरं । कंस
ध्वंसनधूमकेतुरवतुत्वांदेवकीनंदनः ॥२९॥ अथतां
गंतुमशक्तांचिरमनुरक्तांलतागृहेदृष्ट्वा । तच्चरि
तंगोविंदेमनसिजमंदेसखीप्राह ॥१॥ अंगेष्वाभरणं
करोतिबहुशःपत्रेपिसंचारिणि । प्राप्तंत्वांपरिशं
कतेवितनुतेशय्यांचिरंध्यायति । इत्याकल्पवि

कल्पनल्पवचना संकल्पलीलाशतं । आशाकापि

विनानया वरतनुर्नैषा निशां नेष्यति ३१ विगलत ध

लकपालिः स्फीतसीत्कारशंसनर्जनितजडिमका

ऊर्वीज्ञले आहरंती । नवकि नव वियाया भेदके

दर्पविना रसजलनिधिमग्ना ध्यानलग्ना मृगयाती

३३ ॥ अष्टपदी ॥ पश्यति दिशि दिशि रहसि भवंतं

ग·टे·
गी·

तदधर मधुर मधूनि पिबेन्ते २ नाथ हरिसीदति रा

धावासगृहे । त्वदभि शरणरभसेन वलेन्ती पतति

पदानि कियेन्ति चलेन्ती २ विहित विशद बिस कि

शलय वलया । जीवति परमिह तवरति कलया

३ मुहुरवलोकित मेण्डन लीला । मधुरिपुरह

मिति भावन शीला ४ त्वरित मुपेति न कथ

मभिसारे । हरिरिति वदति सखी मनुवारं ५ श्लि
ष्यति चुंबति जलधर कल्पं । हरि रुपगत इति ति
मिर मनल्पं ६ भवति विलंबिनि विगलित लज्जा ।
विलपति रोदिति वासकसज्जा ७ श्रीजयदेवकवे
रिदमुदितं । रसिकजनं तनुता मपि मुदितं ८ श्लो
क ॥ किं विश्राम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडीर भू

गी॰टी॰
गी॰

मी कुहे। आन्तर्यामिन दृष्टिगोचरमितः स्वानंद नंदा

स्थम्। गाथाया वचने नदथग भवोन्ने दानिकेयो

पनो। गोविंदस्य जयेति सायमनिष्पिः प्राशास्य गा

भीगिरः ३३ प्रज्ञानवेव कुटला कुलवर्मपाताते

ज्ञानपातक इव स्फुटलोकनश्रीः। हेरावनोनरम

दीपय देश्वजाले ह्विकंदरी वदन चंदन विंड रिं

22

ङ्गः ३४ प्रसरति शशधर बिंबे विहित विलंबे च मा
धवे। विधुरा विरचित विविध विलापं सा परिता
पं चकारोच्चैः ३५ विरह पाण्डु मुरारि मुखांबुजद्यु
तिरयंनपि वेदनां विधुरतीव तनोति मनोभवः
सुहृदये हृदये मदनव्यथां ३६ मनोभवानंदनचं
दनानिल प्रसीद रे दक्षिण मुंच वामतां ॥ दक्षि

गा ८
गी

जगति जना विधाय माधवे ऽपि मम जना हरो भवि
भाति २७ बाधां विधेहि मलयानिल पंचबाण प्राणा
न गृहाण न गृहम्पुनराश्रयिष्ये । किंते कृतांत
भगिनि क्षमया तरंगै । रंगानि सिंच मम शाम्यतु
देहदाहः २८ । ध्रुपदी । कथितसमयेपि हरि
रहह न ययौ वनं । मम विफलमिद ममल

रूप मपि यौवने १ यामिहेक मिह शरणं सखीज

न वचन वंचिता। यदनुगामनाय निशिगामनम

पि शीलितं। तेन मम हृदय मिदमसम शरकी

लितं २ मम मरणमेव वरमति वितथकेतना ॥

किमिह विसहामि विरहानलमचेतना ३ मामह

ह विधुरयति मधुर मधुयामिनी। कापि हरिमनु

गी॰ दे॰
गी॰

भवति कृत सकृत कामिनी ४ अहह कलयामिव
लयादिमणिभूषणं । हरिविरह दहन वहनेन वहु
दूषणं ५ कुसुम सुकुमार तनु मतनु शरलीलया ।
स्रगपि हृदि हंति मामति विषमशीलया ६ अह
मिह निवसामि न गणित वन वेतसा । स्मरति म
धुसूदनो मामपि न चेतसा ७ हरि चरण शरण

जयदेवकविभारती। वसतु हृदि युवतिरिव कोम

लकलावती ८। अष्टपदी। श्लोक। नामसाप्य म

यि स्वयंवरपरां लीरोदतीरोदरे। शंके सुंदरी काल

कूटमपिबन्मूढो मृडानीपतिः। इत्थं पूर्वकथा

भिरन्यमनसो विक्षिप्य वक्षोंचले। राधायाः स्तन

कोरकोपरि मिलन्नेत्रो हरिः पातु वः। नान्तिकाम

टा॰ टी॰
गी॰

पि कामिनी मभिसृतः किंवा कलाकेलिभिर्वद्धो वंधु
भिरन्धकारिणि वनाभ्यर्णे किमुद्भ्राम्यति कांतः क्लां
तः मना मनागपि पथि प्रस्थातुमेवाक्षमः संके
तीकृतमंजुवंजुललताकुंजेपि यन्नागतः ॥ ८ ॥ अथा
गतां माधवमंतरेण सखीं प्रियं वीक्ष्य विषादमूकां
विशंकमाना रमितं कयापि जनार्दनं दृष्टवदेतदा

२५

३ ४। अष्टपदी। स्मर समरोचित विरचित वेशा गलि
त कुसुम दर विलुलित केशा १ कापि मधुरिपुणा
विलसति युवति रधिक गुणा। हरि परिरंभण व
लित विकारा। कुच कलशोपरि तरलित हारा २
विचल दलक ललिता नन चंद्रा। तदधर पान रभ
सकृत तंद्रा ३ चंचल कुंडल ललित कपोला। मुख

गा॰ टे॰
गी॰

रति रशन जघन गति लोलया ५ दर्शित विलोकितल
ज्जित हसितया। बहुविध कूजित रति रस रसितया ५
विपुल पुलक पृथु वेपथु भंगया। श्वसित निमीलि
त विकसदनंगया ६ श्रमजल कणभर सुभग शरी
रया। परिपतितोरसि रति रणधीरया ७ श्रीजयदेव
भणित हरिरमितम्। कलिकलुषं जनयतु परिश

मिनं ८ अष्टपदी। सोरठा॥ समरदिन मदने रमणी
वदने चुंबन चलितनायरे। मृगमद तिलकं लिख
ति सपुलकं मृगमिव रजनीकरे १ रमते यमुनापु
लिन वने विजय मुरारि रधुना। घनचय रुचिरे र
चयति चिकुरे तरलित तरुणानने कुरुवक कुसु
मं चपला सुखमं रतिपति मृगकानने २ घटयति सु

ग·दे·
गी·

घने कुचयुग गगने मृगमद रुचि रूषिते । मणिस
रममले तारक पटले नखपद शशि भूषिते २ जित
बिस शकले मृदु भुज युगले करतल नलिनी दले·
मरकत वलय मधुकर निचये वितरति हिम शीत
ले ३ रतिगृह जघने विपुल घने मनसिज कनका
सने । मणिमय रसने तोरण हसने विकिरति

क्रुतवासने ५ चरणकिसलये कमलानिलयेन ।
खमणिगणपूजिते । वहिरपवरण यावकभरणं
जनयति हृदियोजिते ६ रमयति भृशमपि कामपि
सुदृशं खल हलधर सोदरे । किमफलमवसं चि
रमिह विरसं वद सखि विटपोदरे ७ इह रसभण
ने मधुरिपुपदसेवके । कलियुगचरितं नवसतु

रा॰दे॰
गी॰

इति नेकविन्दप जयदेवके ८। अष्टपदी॥ अनिल
तरल कुवलय नयनेन। तपति न सा किसलय
शयनेन १ सखि या रमिता वनमालिना। विक
सित सरसिज ललित मुखेन। स्फुटति न सा मन
सिज विशिखेन २ अमृत मधुर मृदुतर वचनेन।
ज्वलति न सा मलयज पवनेन ३ स्थल जल रुह

रुचिकर चरणेन । लुठति नसाहिमकर किरणेन ४

सजल जलद समुदय रुचिरेण । दहति नसा हृदि

विरह भरेण ५ कनक निकष रुचि शुचि वसनेन ।

श्वसिति नसा परिजन हसितेन ६ सकल भुवन ।

जनवर तरुणेन । वहति न सा रुजं मतिकरुणेन ७

श्रीजय देव भणित वचनेन । प्रविशतु हरि रपि

गी॰टी॰ हृदय मनेन च अष्टपदी । श्लोक ॥ नायातः सखि
गी॰ निर्दयो यदि शठस्त्वं दूति किं दूयसे ॥ स्वच्छंदं ब
हु वल्लभः स रमते किं तत्र ते दूषणं ॥ पश्याद्य
प्रिय संगमाय दयितस्याकृष्यमाणं गुणै । रुत्कं
ठार्त्ति भरादिव स्फुट दिदं चेतः स्वयं यास्यति ५८
निभृत निकुंज गृहं गतया निशिरह सि निलीय

वसन्तं । चकित विलोकित सकल दिशावति वभस वशे

न हसन्तं १ सखिहे केशि मदन मुदारं । रमय मया स

ह मदन मनोरथ भावितया सविकारं । प्रथम समाग

म लज्जितया पटु चाटु शतै रनुकूलं । मृदु मधु रस्मि

त भाषितया शिथिली कृत जघन दुकूलं २ किसल

य शयन निवेशितया चिर मुरसिममैव शयानं ।

धु.
१५.

दा टी·
गी·

कृतपरिरंभण चुंबनया परिरभ्य कृताधरपानं ३ स्व
ल्प निमीलित लोचनया पुलकावले ललितकपोलं
। श्रम जल शकल कलेवर यावर मदन मदादनिलो
लं । कोकिल कलरव कूजितया जित मन सिज तंत्र
विचारं । श्लथ कुसुमा कुल कुंतलया नखलिखित ।
घनस्तनभारम् ५ ।। चरण रणित मणि ।

नूपुरया परिपूरित सुरत वितानं । मुखरविशृंखल

मेखलया सकच ग्रह चुंबन दानम् ६ रति सुख सम

य रसाल सया दर मुकुलित वदन सरोजं । निस्सह नि

पतित तन लतया मधुसूदन मुदित मनोजं ७ श्री

जयदेव भणित मिद मति शय मधु रिपु निधुवनशी

लं । सुख मुत्कंठित राधिकया कथितं वितनोतु स ।

रा.टी.
गी.

लीले ।१८॥ अष्टपदी। श्लोक ॥ दृष्टिव्याकुल गोकुला

वनवशा उद्धृत्य गोवर्द्धनं । बिभ्रद्बल्लव सुंदरीभि रा

धिका नंदाधिरं चुंबितः । दर्पेणैव तदर्पिताधरतटी

सिंहर मुद्रांकितो । बाहुर्गोपतनो स्तनोतु भवतः श्रे

योसि कंसद्विषः ४३ अथ कथमपि यामिनी विनीयस्म

र शरजर्जरितापि सा प्रभाते । अनुनयवच १

३

नं वदंतं मग्रे प्रणत मपि प्रिय माह साभ्यसूयं ४४

अष्टपदी ॥ रजनि जनित गुरु जागर राग कषायित

मलस निमेषं । वहति नयन मनु राग मिव स्फुटमु

दित रसाभिनिवेशं । याहि माधव याहि केशव माध

व कैतववादं । तामनुसर सरसीरुह लोचन यातव

हरति विषादं । कज्जल मलिन विलोचन चुंबन ।

रा टो· विरचित नीलमनूपं दशन वसन मकरणं नवकुल ।

गी· तनोति नतरत रूपं २ वपु रत हरति नवस्मरसं

गराव रन रवरतनरेखं । मरकत शकल कलित का

ल धौतलिपेरिव रति जय लेखं ३ चरण कमल गल

दलक्त कसिक्तमिदं तव हृदय मुदारं । दर्शयतीव ब

हिर्मदन द्रुम नव किसलय परिवारं ४ दशनपदं

भव दयद्गतमम जनयति चेतसि विहं । कथयति

कथ मधुनापि मया मह तव वपुरे तद भेदं ५ वहि

रिव मलिन तरंतरंतव कुसु मनोपि भविष्यति तूनं ।

कथ मथ मंचयसे जन मऊ गतम मम शर ज्वरहूतं

६ भ्रमति भवान वला कवलाय वनेषु किमत्र वि ।

विवं प्रथयति भूतलि कैववधू वथ निर्दयवालवरि

रा ते·
गी·

ते ७ श्रीजयदेव भणितमति वंचित खंडित युवति
विलापं । शृणुत सदामधुरं विबुधा विबुधालयतो ।
पि । ८ । अष्टपदी । श्लोक ॥ तवेदं पश्यंत्याः प्रस
र दनुरागगवहिरिव । प्रिया पादालक्त छुरितमरु
ण छायति हृदयं । ममाद्य प्रख्यात प्रणय भर
भंगेण कितवत्वदालोक ः शोका दपि किम

पि लग्नं जन यति ४७ पद्मापयो धरतटी परिरम्भल
ग्नकाश्मीर मुद्रित मुरो मधुसूदनस्य । व्यक्तानुराग
मिव खेलद नंगखेद स्वेदांबुपूर मनु पूरयतु प्रिय
म्वः ४८ प्रज्ञान्तरे मसृण रोष वशा ससीमनिः
श्वासनिस्सह मध्वीं समगवी मुपेत्य सव्रीडमीलि
त सावी वदनं दिनांते सानंद गद्गदपदं हरिरिति ।

गी·टी·
गी·

सबाधा। परि हर कृतातंक शंकां त्वया सततं घन
स्तन जघनया क्रांते स्वांते परानवकाशिनि विशति
वितनो रन्यो धन्यो न कोपि ममांतरं स्तनभर प
री रंभारंभे विधेहि विधेयतां ॥ ८ मुग्धे विधेहि म
यि निर्दय दंत दंश दोर्वल्लि बंध निबिड स्तन पीडना
नि चंडि त्वमेव मुद मंचय पंचबाण चांडाल कां।

उ दलना दमव: प्रयांतु ॥ शशि मगिव नव भाति भंगु
र भइव जन मोह्न कराल कोल मयी नड दिनि भय
भंजनाय मनोल्वद यरमोधु मयैव सिद्धिमंत्र: वाय
यति हृथामैनं नल्विप्रपंवय पंव मंतनहा मधुरा
लापे स्लापं विनोदय हशिभि: समगवि विमवी
भावनान्ना वहि मंवन मंवमा स्वय मनिशय ।

गी·गो·
गी·

स्निग्ध मधुरे प्रणीय मधुरिपुरितः । अष्टपदी । वद
सि यदि किंचिदपि दन्तरुचि कौमुदी हरति दर
ति मिरमतिघोरम् स्फुरदधर सीधवेतव वदन चं
द्रमा रोचयति लोचन चकोरं १ प्रियेचारु शीले मुं
चयति मानमनिदानं । सपदि मदनानलो दहति
मम मानसंदेहि मुखकमलमधुपानं । सत्यमेवा

सि यदि सुदति मयि कोपिनी देहि खर नखर शरघा।
तं । घटय भुज बंधनं जनय रद खंडनं येनवा भवति
सुखजातं २ त्वमसि मम भूषणं त्वमसि मम जीवनं
त्वमसि मम जलधि रत्नं । भवतुभवतीह मयि स
तत मनुरोधिने तत्र मम हृदयमति यत्नं ३ नील
नलि नाभमपि तन्वितवलोचनं धारयति कोकन

गी·टी·
गी·

दन्तरूपं। अभ्रम शरवाण भावेन यदिरंजयसि हृा
ल मिदमेन दन्तरूपं ४ स्फुरत अव अंभयोतपति
मणि मंजरी रंजयत नव हृदय देशं। रमत रस
नापि तवघन जघन मंडले घोषयत मन्मथनिदे
शं ५ स्थलकमल गंजनं मम हृदय रंजनं जनि
तरति रंगपरभागं। भण मसृण वाणि करवा

36

णि चरण हृयं सरस लसद लक्तकरागं ६ स्मर ग
रल खंडनं मम शिरसि मंडनं देहि पदपल्लव मुदा
रं। ज्वलति मयि दारुणो मदन कदना नलो हरतु
तदुपाहित विकारं ७ इति चटुल चाटु पटु चारुमु
र वैरिणो राधिका मधि वचन जातं। जयति पद्मा
वती रमण जयदेव कवि भारती भणित मति शं

ग·टी
गी·

तं । श्लोक ॥ वंधूक द्युतिबांधवोय मधुरः स्निग्ध
मधूक छविः गंडे चंडिचकास्तिनीलनलिन श्रीमो
चनं लोचनं । नासाभ्येति तिल प्रसून पदवीं कुं ।
दाभदंति प्रिये प्रायस्त्वन्मुखसेवया विजयते विश्वं
सपुष्पायुधः ५१ दृशौतवमदालसेवदनमिंदुसं ।
दीपनं गतिर्जन मनोरमा विजित रंभ मूरुद्वयं ।

रतिकल्प कलावती रुचिर चित्र लेखे आवा वहोवित्र

य यौवने वहाति तन्वि पृथ्वी गता पर भूपलवे य

न्न पांगतरंगितानि वाणायणः श्रवण पालि चिति

स्मरेण । नत्मा मनेग जय जंगम देवताया मन्त्रा

णा निर्जित जगंति किमर्पितानि । ५२ । अवापे ।

निहता कटात्त विशिखो निर्मात मर्म व्यथाश्पा ।

गा·टो·
गी·

मातस्ता जटिलः करोतु कवरी भारोपि मारोद्यमं । मो
हंता वदयेव तल्लिनजनते विंवाधुरोगगवान् सहृतः
स्तन मंडल स्तवकथं श्रागीर्मम क्रीडति ५४ मा
निनी मान विध्वंसदक्षो जयति सांप्रतं । म्रडवेण
समहृतः श्रीमद्गोपालकयतिः ५५ नामदयमत्त
घ खिन्नां रतिरति रस भिन्नां विषाद सम्प ।

78

न्नां । अनुचिंतित हरि चरितां कलहान्तरितामुवाच
रहः सखी ५८ स्निग्धे यत्परुषासि यत्प्रणमति स्त।
ब्धासि यद्रागिणि द्वेषस्थासि यदुन्मुखे विमुखतां
यातासि तस्मिन्प्रिये । तद्युक्तं विपरीतकारिणि त
व श्रीखंड चर्चा विषं शीतांशुस्तपनो हिमं हुत वहः
क्रीडा मुदो यातनाः ५९ ॥ अष्टपदी ॥ हरिरभि ।

गा·टो·
गी·

सरति वहति मधु पवने किम परमधिक सुखंसखिव
भवने १ माधवे माकुरु मानिनि मान मये । ताल फ
ला दपि गुरुमति सरसं । किमु विफली कुरुषे कु
च कलशं २ कति न कथित मिद मनु पद मचिरं ।
मापरि हरि हर मति शय रुचिरं । किमिति विषीद
सिरो दिषि विकला । वहसति युवति सभातव वि ।

कला ४ जनयसि मनसि किमिति गुरु खेदं । शृणु
मम वचन मनीहित भेदं ५ हरिरुपयाति वहुमधु
रे किमिति करोषि हृदय मति विधुरं ६ सजल नलि
न दल शीतल शयने । हरिमवलोकय सफल
य नयने ७ श्रीजयदेव भणित मति ललितं । सुखय
तु रसिक जनं हरि चरितं ८ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

रा·गो·
गी·

श्रीराधिकाजीके वचन रिपु रिव सखी संवासोयंस
खी वहिमानिलो विषमिव सुधारश्मिर्यस्मिन् नो
ति मनोगते । हृदय मदये तस्मिन्नेव पुनर्वलते व
लात कुवलय दृशाम्वामः कामो निकाम निरंकुशः
पद ॥ गणयति गुणग्रामं भ्रामं भ्रमा दपिनेहते व
हतिचपरि तोषं दोषं विमुंचति दूरतः । युवति

भ्रु वल्लनत्र्पाणे क्रमो विह्वारिणि मोविना धनरपि
मनोवामे कामं करोति करोमि किं ५८ प्रीतिस्वलन
तोहरिः कुवलया पीडेन मार्द्दवाणे शयापीनपयोध
रमल्लराग हाकुंभेन संभेदवान्। यत्रखियति मील
ति लाणमघ्य तिष्ठे द्विपे तन्तणात कंसस्यालमभ्द
जितमितिव्यामोह कोलाहलः ६· सकविमन।

रा·दो
गी·

नयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षी गतवति कृतवेषे केश
वे कुंजशय्यां रचित रुचिरभूषां दृष्टिमोषे प्रदोषे स्फु
रति निरवसादां कापि राधां जगाद ॥१॥ सा मां द्रक्ष्य
ति वक्ष्यति स्मरकथां प्रत्यंग मालिंगनैः। प्रीतिं यास्य
ति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकुलः। स त्वां पश्य
ति वेपते पुलकयत्यानंदति स्विद्यति। प्रत्युद्गच्छ

ति मूर्च्छति स्थिर तमः पुंजे निकुंजे प्रियः ॥ ६२ ॥ त्वद्धाम्ये
न समं समग्र मधुना निर्म्मांश्चरत्नं गतो । गोविंदस्य
मनोरथेन च समं प्राप्तं तमः सांद्रतां । कोकानां करुण
स्वनेन सदृशी दीर्घा मदभ्यर्थना । तन्मुग्धे विफलं
विलंबनमसौ रम्योभिसारक्षणः ॥ ६३ ॥ आश्लेषादनु
चुंबनादनु नखोल्लेखादनु स्वान्तज । प्रोद्बोधादनु

स॰टी
गी॰

संभ्रमा दनुरतारंभादन शीतयोः । अन्यार्थं गतयोश्च
मान्मिलितयोः संभाषणौर्जीननतो । दंपत्योरिह को ।
न कौन तमसि व्रीडाविमिश्रोरसः २४ अहलोति
त्तिपदं जनं श्रवणयो स्तापिछ गुछाली । मृहिं ।
श्यामसरोज दाम कुचयोः कस्तूरि कापत्रक ।
म् ॥ धूर्ता नामभि सार सत्वर हृदां विष्वङ्नि ।

८२

५२

ऽंजेमसीव । ध्वांतनील निचोल चारु सुहशः प्रत्यंग ।
मालिंगते ४५ काश्मीर गौर वपुषा मभिसारिकाणा
माबद्धरेख मभितो रुचिमंजरीभिः । एतत्तमाल द
ल नील तमंत मिस्रं तत्प्रेमहेम निकषो पलतांत ।
नोति ४६ ध्रुवपदी ॥ विरचित चाटु वचन रचनं चर ।
णेरचित प्रणिपातं । संप्रति मंजुल वंजुलसीमनि ।

गी·टी· केलिशयन मनुयातं । मुग्धे मधुमथन मनुगतम ।

गी· नुसरराधिके । घन जघन स्तनभारभरे दर मन्थरच

रणविहारं । मुखरितमणि मंजरी मुपैहि विधेहिम

राल विकारं २ शृणु रमणीय तरं तरुणी जन मोह

न मधुरिपुरावं । कुसुम शरासन शासन वंदिनि पि

क निकरे भज भावं २ अनिल तरल किसलय निक

रेण करेण लता निकुरंबं । प्रेरण मिव कर भोरुकरी
ति गति भ्रति मंच विलंबं ४ स्फुरित मनंगतरंग व
शादिव सूचित हरि परिरंभं । हृद्धमनोहरहार वि
मल जलधार ममुंजच जंभे ५ अधिगत मखिल
सखी भिरि दंतव वपुरपि रति रण सज्जं । चंडि रणि
त रशना रव डिंडिम मभि सरसमलज्जं ६ स्मर श

गी·टी·
गी·

व सुभग स्रवेन साबी मवलंब्यकरेण सलीलंव।
ल वलय क्वणितै रवबोधय हरिमपि निज गति
शीलं ७ श्रीजयदेवभणित मधुरी कृत हार मदा
सित वामं। हरिविनिहित मनसा मयि निष्ठत कंठ
तटी मविरामं ८॥ अष्टपदी॥ श्लोक॥ सा मामत्र द
क्ष्यति वक्ष्यति प्रियकथां प्रत्यंग मालिंगतै॥ श्री

४८
५५

ति यास्यति रंस्यति सीति समा गत्येति चिंता कुलः सत्वा
म्पश्यति वेपते पुलकय त्यानंदति स्विद्यति। प्रत्युद्गछ
ति मूर्छति स्थिरतमः पुंजे निकुंजे प्रियः ९९ अष्टप
दी ॥ रतिसुख सारे गत मभिसारे मदन मनोहरवे
षं। नकुरु नितं बिनि गमन विलंबन मनुसरतं हृद
येषं १ धीर समीरे यमुनातीरे वसति वनेवनमा।

रा॰हो
गी॰

ली । गोपीपीन पयोधर मर्द्दन चंचल करयुगशा

ली । नामसमेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुंब

हु मनुते ननु ते तनुसंगतपवन चलित मपिरेणुं २

पतति पतत्रे विचलित पत्रे शंकित भवदुपयानम्

रचयति शयनं सचकित नयनं पश्यति तवपंथानं २

माखरमधीरं त्यजमंजीरं रिपुमिवकेलिसुलोलं ।

चल सखि कुंजे सतिमिर पुंजं शीलय नील निचोलं
४ उरसि मुरारे रुपहित हारे घनइव तरल बलाके।
तडिदिव पीतेरति विपरीते राजसि सुकृतविपाके
विगलित वसनं परिहृतरशनं घटयजघनं मपिधा
नं किसलय शयने पंकज नयने निधिमिव हर्षनिधा
नं ६ हरिरभिमानी रजनिरिदानी मियमपियाति

गा·टी·
गी·

विरामं । जय ममवचनं नवर रचनं प्रणयमधुरित्र
कामं ७ श्रीजयदेव कृत हरिसेवे भणति परमरम
णीयं । प्रमुदित हृदयं हरिमपि सदयं नमत सुकृ
त कमनीयं ८ । अष्टपदी । श्लोक । सभय चकितं वि
न्यसंतीं दृशौ तिमिर पथि प्रति तरुमुहु: स्थित्वा म
न्दपदानि वितन्वंतीं कथमपि रह:प्राप्तामंगैरनंगैरत

रंगिभिः सममीव सभगः सत्वाम्यथयन्नुपैतकत्वारो
तं ७ हारावली तरल कांचन कांचिदाम मंजीरकं
कण मणि द्युति दीपितस्य द्वारे निकुंज निलयस्य
हरिं निरीक्ष्य व्रीडावतीं मथसखी निजगाद राधां
६८ ॥ अष्टपदी ॥ मंजुतर कुंजतल केलिसदने
विलस रति रभस हसित वदने १ प्रविश राधे

गी·टी·
गी·

माधव समीप मिह नव भवद शोकदल शयनसारे
विलस कुच कलश तरलहारे २ कुसुम चयरचि
त शुचिवासगेहे । विलस कुसुम सुकुमारदेहे ३
चल मलय वन पवन सुरभिशीते । विलस रसिव ।
लित ललित गीते ४ वितत बहु वलि नव पलव घ
ने । विलस चिर मलस पीन जघने ५ मधु मुदित

मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रस सरस भावे

६ मधुर तर पिक निकरनि नद मुखरे। विलस दश

न रुचि रुचिर शिखरे ७ विहित पद्मावती सुख

समाजे। भणति जयदेव कविराजराजे ८ अष्टप।

दी ॥ श्लोक ॥ सान्द्रा नंद पुरंदरा दिदि विषद्वृंदैर

मंदादरा दानम्रै मुकुटेंद्रनील मणिभिः संदर्शितें

रा·टी·
गी·

दीवरं। स्वछंदं मकरंद संदर गलन्मंदाकिनी मेदुरं
श्रीगोविंद पदार विंदम शुभस्कंदाय वंदामहे ६१
श्रहमिह निवसामि याहि राधा मनुनय मद्वचनेन चा
नयेथाः। इति मधुरिपुणा सखी नियुक्ता स्वयमिद
मेत्य पुनर्जगाद राधां ७· त्वांचितेन चिरं वहन्नय
मति श्रांतोभृशंतापितः। कंदर्पेणव पातु।

मिव्रुति सखा मंवाय विंवाधरं । अस्यांकं नदलंक
रण मिह धूवेप लक्ष्मीलव। क्रीते दास इवोप से
वित पदां भोजे कुतः संभ्रमः ॥ सा ससाध्वससा नं
द गोविंदे लोल लोचना सिंजान मंजु मंजीरं प्रवि
वेश निवेशनं ॥ श्रुति क्रम्या पांगं श्रवण पथ पर्यं
त गमन प्रवासे नैवाक्ष्णो स्तरल तरतारम्पतितयोः

रा·टी·
गी·

। तदानीं राधायाः प्रियतम समालोकसमये । पपा:
त स्वेदांबु प्रसर इव हर्षाश्रुनिकरः ७३ भजंत्यास्त
ल्पांतं कृत कपट कराडूति विहितः ॥ स्मितेया।
ते गेहाद्बहिरवहितालीपरिजने । प्रियास्यंपश्यं
त्याः स्मरशरसमाकूत सुभगं । सलज्जायालज्जा
व्यगमदिवदूरंमृगदृशः ॥ ७४ ॥ अष्टपदी ॥

राधावदन विलोकन विकसित विविध विकार विभं
गे । जलनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुं
ग तरंगं । हरि मेकरसं चिर मभि लषित विलासं
। सा ददर्श गुरु हर्ष वशं वद वदन मनंग विकासं ।
हारममल तर तार मुरसि दधतं परिलंब्य विदूरं ।
स्फुटतर फेन कदंब करंबित मिव यमुना जल

गी·टी·
गी·

शूलं २ श्यामलमदृल कलेवर मंडल मधिगत गौर
दुकूलं नीलनलिन मिव पीत पराग पटल भरव
लयित मूलं ३ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन
जनित रतिरागं। स्फुटकमलोदर खेलित खंजनयु
गमिव शरदि तडागं ४ वदन कमल परिशीलन मिलि
तमिहिरसमकुंडलशोभं। स्मितरुचि कुसुम समु।

लसिता धर पल्लव कृत रति लोभे ५ शशि किरण

छुरितो दरजलधर सुंदर सकुसुम केशं तिमिरो

दित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक निवेशं ६

विपुल पुलक भरदंतुरितं रति केलि कला भिरधी

रं। मणि गण किरण समूह समुज्वल भूषण सुभग

शरीरं ७ श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणी कृत भू

रा॰टी॰
गी॰

षणभावं । श्रवणमन हृदि विनिधाय हरिं सविरंसक
तो दय सारं । ८ ॥ अष्टपदी ॥ श्लोक ॥ गतवति स
खीवृंदे मंदत्रपाभर निर्भर स्मर पर वशाकूतस्फीत
स्मितस्नापिताधराम । सरस मलसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहु
र्नव पलव प्रसर शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः प्रि
याम । किशलय शयने तले कुरुकामिनि चरण ।

कमल विनिवेशं । नवपद पलव वैर परा भव मिद

मनभवन सवेशं । नग मधुना नारायण मनगत

मनसर राधिके । ध्रु० । कर कमलेन करोमि चरण

मह्ना मागमितासि विदूरं । नग सप उरु शयनो

परमा मिव नूडर मनगति सूरं २ वदन सुधानिधि

गलित मम्रत मिव रचय वचन मनकूलं । विरह ।

रा·दो·
गी·

मिवापन यामि पयोधररोधक मुरसिदुकूल ३ प्रिय
परिरंभण रभस वलित मिव पुलकित मतिदुरवा।
पं। मधुरसि कुच कलशं विनिवेशय शोषय मनसि
जतापं ४ अधर सुधारस मुपनय भामिनि जीवय
मृत मिव दासं। त्वयि विनिहित मनसं विरहानल
दग्ध वपुष मविलासं ५ शशिमुखि मुखरय।

मणि रशना गुणमनुगुण कंठनिनादम् श्रुतियु

गुले पिककलत ममशमय चिरादव सादं ६ मामति

विफल रुषा विफली कृत मवलो कितमधुनेदं।

मीलति लज्जित मिव नयनं तव विरमवि सृजरति

विदम् ७ श्रीजयदेव कवेरिद मनु पदनि गदि

त मधुरिपु मोदम्। जनयतु रसिक जनेषुमनो

रा·दो
गी·

रम रति रस भाव विनोदं प अष्टपदी ॥ श्लोक ॥

प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निविड़ाश्लेषैर्निमेषेण च

क्रीड़ाकूत विलोकिते धरसुधा पाने कथानर्मभिः

आनंदाधिगमेन मन्मथ कला युद्धेपि यस्मिन्नभू

दुद्भूतः स तयोर्वभूव सुरता रंभः प्रियं भावुकः

७८ मीलद्दृष्टि मिलत्कपोल पुलकं सीत्कार धाराव

शादव्यक्ता जलकेलि काकविक सहंता क्रयो नाथरं
खसोत्काम्य पयोधरं भ्रशापरिष्वंगात जवंगी दृशोद्द
षोत्कर्ष विमुक्त निः सहनतोर्यन्योयथयन्यानतं ७८
दोर्भ्यां संयमितः पयोधरभरेणापीडितः पाणिजैरा
विद्धोदशनैः क्षताधरपुटः श्रोणी तटेनाहतः हस्ते
नानमितः कचेधर मधुस्पंदेन संमोहितः कांतः का

मपि त्वयि मापत दृष्टो कामस्य वामागतिः ७८ वा
मांके रतिकेलिसंकुलरणारंभातया साहसप्रायं
कांतजयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्रमांनिस्पंदा
जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लिरुत्कंपितं वक्षो
न्मीलितं मक्षि पौरुषरसः स्त्रीणां कुतः सिध्यति ७९
तस्याः पाटलपाणिजांकितमुरो निद्राकषाये दृशौ

मृतिर्हृंतो यत्र शोणिमा विलुलिता स्वस्तस्त्रजो मूर्द्धजाः
कांचीदामदरश्लथांचलमिति प्रातर्न्निखातैर्हृशोरेभिः
कामशरैस्तदद्भुतमभूत्पत्युर्म्मनः कीलितं ८- श्रष्य
कांतं रति श्रांत मपि मंडनं वांछया निजगाद निरावा
धाराया स्वाधीन भर्तृका ८। इति मनसा निगदंतं व्र
रतांते मानितांतखिन्नां गीराधा जगाद सादर मिदमा

रा·दो·
गी·

नंदेन गोविंदं पद अष्टपदी । जय यदुनंदन चंदन
शिशिर तरेण करेण पयोधरे । मृग मद पत्र कमत्र
मनो भव मंगल कलश सहोदरे १ निजगाद सा यदु
नंदने क्रीडति हृदयानंदने । रचय कुंचन लोचिनक
जल मज्जलय त्रिपलोचने अलि कुल गंजन मंजनकं
रतिनायक मोचने २ नयन कुरंग तरंग विकासिनि

वामकरे कृतमंडले । मनसिज पाश विलासकरे श्रु

भवेष निवेशय कुंडले ३ भ्रमर चयं रचयंतमपरिरु

चिरं सुचिरं ममसन्मुखे । जितकमले विमले परि

कर्मय नर्म जनकमल कंमुखे ४ मृगमद रसललि

तं ललितं कुरु तिलकमलिकरजनीकरे । विहितक

लंक कलं कमलानन विश्रमित श्रमशीकरे ५

गी·टी·
गी·

मम रुचिरे चिकुरे कुरु मानद मानस जध्वज चामरे

रतिगलिते ललिते कुसुमानि शिखंडि शिखंडक

डामरे ७ सर सघने जघने ममशंबर दारण कंदरे।

मणिरसना वसना भरणानि शुभाशय वासय सुं

दरे ८ श्रीजयदेव वचसि जयदे सदयं हृदयं कुरु मंड

ने हरिचरणस्मरणा मृतकृत कलिकलुषज्वरखंडने ९

श्लोक । रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयोर्घट
य जघने कांचीमंच स्रजा कवरीभरं । कलय वलय
श्रेणीं पाणौ पदे कुरु नूपुरा विति निगदितः प्रीतः
पीतांबरोपि तथाकरोत् ८४ प्रातर्नीलनिचोलमच्यु
तमुरः संवीतपीतांशुकं राधायाश्चकितं विलोक्य
हसति स्वैरं सखीमंडले । व्रीडाचंचलमंचलं नयत

रा.टी.
गी.

योगाभ्याय नायानते स्वैरं मेरु मावां वुजोस्तु जगदानं
दाय नंदात्मजः ८४ पर्यंकी कृतनाग नायकफ
णा श्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्रति विंब संवलन
या विभ्रद्विभु प्रक्रियां । पादांभोरुह धारि वारिधि
सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः । कायव्यूह मिवाचरं न्नु
पचिती भूतो हरिः पातु वः ८५ तिर्यक्कंठ विलो

त्समीलितनत्खोतं मस्यवंशोहर । जीतिस्थानकृताव
धान ललना लक्षेण संत्तितना: श्रेमणाकंदलिता:
समगय मधुदेशाया मृविंदैस्तथा । मारेवोमधुसूदन
स्म ददन हेमं कटाक्षोमेय: ८७ ॥ अष्टपदी ॥
संचर दधर सुधा मधुरध्वनि मुखरित मोहनवंश:
वलित दृगंचल चंचल मौलिकपोल विलोलवतंसे- १

रा·टो·
गी·

रासे हरि मिह विहित विलासं । स्मरति मनो मम कृत
परिहासं चंद्रकचारु मयूर शिखंडक मंडल वलयि
तकेशं । प्रचुर पुरंदर धनुरनुरंजित मेदुर मुदिर सु
वेशं २ गोप कदंब नितंब वती मुख चुंबन लंभित
लोभं । बंधुजीव मधुराधर पलव मल सितास्मित
शोभं ३ विपुल पुलक भुजपलव वलयि ।

न वलव युवति सहस्रं। करचरणोरसि मणि गण भूष
ण किरण विभिन्न तमिस्रं ४ जलद पटल वलदिंदु
विनिंदक चंदन तिलकललाटं। पीन पयो धर परि सर
मर्दन निर्दय हृदय कपाटं ५ मणि मय मकर
मनोहर कुंडल मंडित गंड मुदारं। पीत वसन मनुग
त मुनि मनुज सुर असुर वर परिवारम् ६। विशद

रा·टी·
गी·

कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं शमयंतं । माम
पि किमपि तरंग दनंग दृशा मनसा रमयंतं ७ श्री
जयदेव भणित मति सुंदर मोहन मधुरिपु रूपं ।
हरि चरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्यवता मनु रू
पम् ॥ ८ ॥ श्लोक ॥ हस्त स्रस्त विलास वंशम ।
नृजु भ्रूवल्लि मद्बल्लवी वृंदोत्सा ॥ ॥

ति हगंत वीक्षितं मति खेदाश्री गंडस्थलं । माध्वीक
विलज्जितस्मित मया मुग्धाननं कानने । गोविंदं
व्रज सुंदरी गण हतंपश्या हव्यामिव दद श्रेतमौह
न मौलि घूर्णन चलन्मंदार विस्रंसनः स्तब्धाक।
र्णा दृष्टि हर्षेणामद्धा मंत्रे कुरंगीदृशां । इच्छदा
नव दृयमान विविध दुर्वार दुःखापदाम् ॥

रा·टी·
गी·

ध्वंसः कंसरिपो व्यपो हतु वो श्रेयांसि वंशीरवः ८४
यद्गांधर्वं कलासु कौशल मनु ध्यानंच यद्वैष्णवं यत्
शृंगार विवेक तत्व मपि यत्काव्येषु लीलायितं तत्स
र्वं जयदेव पंडित कवेः कृष्णैकतानात्मनः । सानं
दाः परिशोधयंतु सुधियः श्रीगीत गोविंदतः ८५
साध्वी माध्वीक चिंता न भवति भवतः शार्करैक ।

कैशा सिद्राक्षे द्रक्ष्यंतिकेत्वा ममृतं मृत मसि क्षीर नी
रं रसस्ते । माकंदं क्रंद कांता धर धरणितलं गछ
यछंति यावद्भावं शृंगार सारस्वत मय जय देवस्य
विष्वग्वचांसि ॥४॥ श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी
सुत श्रीजय देवस्य । परा शरादि प्रिय वर्ग कंठे
श्रीगीत गोविंद कवित्वमस्तु । जय श्रीविन्यलैमीह

रा·टी·
गी·

न इव मंदार कुसुमैः स्वयं सिंदूरेण द्विपरण मुदा
मुद्रित इव । भुजापीड क्रीडाहत कुवलया पीडक
रिणः । प्रकीर्णा सृग्बिंदु र्जयति भुजदंडो मुरजि
तः ९३ ॥ इति राग देव शाखस्य गीत गोविंद प
विबंदः समाप्तम् ॥

कारण वेधौ ।६। स्फुरदति मुक्तलता परिरं
भण मुकुलित पुलकित वृन्ते । वृंदावन
विपिने परिसर परि गत यमुना जल पूते ।
श्री जय देव भणित मिद मुदयति हरि चर
ण स्मृति सारं । सरस वसंत समय वर्णन
मनुगत मदन विकारं ।८। दर विदलित

गी
गो

मल्ली वल्लि चंचत्पराग प्रकटित पटवासै वी
सयन्काननानि । इहहि दहति चेतः केतकी
गंधबंधुः । प्रसर दसम बाण प्राण वद्गंधवा
हः ।।२।। उन्मीलन्मधु गंधलब्ध मधुप व्याधू
तचूतांकुर । क्रीडत्कोकिल काकली कलक
लै रुद्गीर्ण कर्ण ज्वराः । नीयंते पथिकैः क

थेकथ मपि थ्याना वथान दाण । प्राज्ञ प्रा
ण समा समा गम रमोलासे रमो वासताः ।
२२ । डरा लोक स्लोक लव कन वकाशोक
लनिका । विकाशः का सारे पवन पवमो
नोयं थ्ययति । ग्रपिभ्रामाईंगी रणिन रम
णीयान मङ्गल । ग्रसनि सूतानो सपिव

गो शितविशिखैर्ये हावयति। ३३। राग ललित।

गो ताल । निंदति चंदन मिंदु करण मनुविंद

ति खेद मधीरं। व्याल निलय मिलनेन ग

रल मिव कलयति मलय समीरं।१। माध

व सा विरहे तव दीना मनसिज विशिखभ

या दिव भावनया त्वयि लीना। ध्रु। अवि

79

(८

रलति पतित मदन शरादिव भवदव नाय
विशाले। स्वहृदय मर्म्मणि वर्म्म करोति स
जल नलिनी दलजाले।२। कुसुम विशि
ख शरतल्प मनल्प विलास कलाकमनी
यं। व्रतमिव तव परि रंभ सुखाय करोति
कुसुम शयनीयं।३। वहति च गलित विलो

गी॰ घन जलधर मानन कमल मुदारं । विधु मिव
गो॰ विकट विधुन्तुद दंत दलन गलिमा मृतधारं ।
४ । विलिखति रहसि कुरंगम देन भवंतम
समशर भूतं । प्रणमति मकर मधो विनि
धाय करे च शरे नव चूतं । ५ । प्रति पद
मिद मपि निगदति माधव तव चरणे

पतिताहं। त्वयि विमुखे मयिस पदि सुधा
निधि रपितनुते तनुदाहम्॥६॥ ध्यान लये
न पुरः परिकल्प्य भवंत मतीव दुरापे वि
लपति हसति विषीदति वेवति मुंचति
तापे॥७॥ श्री जयदेव भणित मिद मधि
कं यदि मनसा नटनीयं। हरि विरहा कु

गी ल वल्लव युवति सखीवचने पठनीये ।८।
गो आवासो विपिनायते प्रिय सखी मालापि
जालायते। तापोपि श्वसितेन दावदहन
ज्वाला कलापायते । सापित्वद्विरहे
ण हंत हरिणी रूपायते हाकथं।
कंदर्पोपि यमायते विरचयन् शार्दूल

विक्रीडितो ।२४। रागललित । ताल ।

स्तन विनि हित मपि हार मदारे सा मनुते

कृश तनु रिव भारे राधिका विरहे तव के

शव,ध्रु०। सार सम सृण मपि मल यज पं

के पश्यति विष मिव वपुषि सशंकम ।१।

श्वसित पवन मनुपम परिणाहे। मदन दह

गी
गो

न मिव दहति सदाहम्।३। दिशि दिशि कि
रति सजल कण जालम्। नयन नलिन
मिव विगलितनाले। ४ नयन विषय
मपि किशलयतल्पम्। कलयति वि
हित हुताशन कल्पं। ५। त्यजति
न पाणि नलेन कपोलं। बाल

विशन मिव साय मलोले ।६। हरि रिति ह

रिरिति जपति सकामम् । विरह विहित म

रणे वनिकामम् ।७। श्री जय देव भणित

मिति गीतम् । सुखयतु केशव पद मुप

नीतम् ।८। स्मरा तुरा दैवत वैद्य हृद्य त्वदं

ग संगा मृत मात्र साध्याम् विमुक्त बा

गी
गो

पंकरुहेन तथा सुपेंद्रवज्रा दपि दारु
णोसि ।२५। मारोमंचति सीत्करो
विलप त्युत्कम्पते ताम्यति । ध्यायत्युद्
भ्रमति प्रमीलति पत त्युद्याति मूर्छत्य
पि । एतावत्य तनुज्वरे वरतनु र्जीवेन्न
किन्तेरसात् । स्वर्वैद्य प्रतिम प्रसीदसि

ननश्लक्ष्णो मथा हस्तकः।२६। कंदर्पज्व
र संज्वरा तुरतनो राश्चर्य मस्याश्चिरम्। चेत
श्चंदन चंद्रमः कमलिनी चिंतासु संताम्य
ति। किंतु क्षांति रसेन शीतलतरं त्वामेक
मेव प्रियम्। ध्यायंती रहसि स्थिता कथम
पि क्षीणा क्षणं प्राणिति।२७। क्षाम

पि विरहः शुतनमेहे नयन निमीलित खि
न्नया नयाते । स्मसिति कथमसौ रसाल शा
खां चिरविरहेण विलोक्य पुष्पिताग्रां ।२८।
सख्या सुमुख सुखाद विंद मधुप सैलोक्य मौल
स्यली । नेपत्थ्ये चित नीर त्न मवनी
भारावतारांतकः । स्वच्छंद व्रजसे

दरी जन मन शोक प्रदोषस्थिरम् । केस
धेसन सुमकेन रवन न्तोदेवकी नंदनः
।२९। अपनो गेन मशनो विर मत रनो
लना गदेह दस नवरिने गोविंदे मनसिज
मेदे सुलीशाह ।३०। श्रेगेसा भयने कनेनि
वहसः पतेपि मेचानिनि । सामेनामपनिपे

गी
गो

कते वितनुते शय्यां चिरं ध्यायति । इत्या क
ल्प विकल्प तल्प रचना संकल्प लीलाशत
व्यासक्तापि विना त्वया वरतनु नैषा निशां
नेष्यति ।११। विपुल पुलक पालिः स्फीत
सीत्कारमंतर्जनित जडिमकाकुव्याकु
ले व्याहरंती । तव कितव विधायामंद कंद

धविंता ।रस जल निधि मग्ना ध्यान लग्ना
मृगाक्षी ।३३। राग ललित। ताल ।पश्य
ति दिशि दिशि रहसि भवंतम त्वदधर म
धुर मधूनि पिबंतम।१। नाथ हरे सीदति
राधा वासगृहे।ध्रु०। त्वदभि शरण रभसे
न वलंती। पतति पदानि कियंति चलंती

गी
गो

२। विहित विशद बिष किश लय वलया ।
जीवति पर मिह तव रति कलया ।२। मुहु
रव लोकित मंडन लीला । मधुरिउ रहमि
ति भवन शीला ।४ त्वरित मुपैति न कथ
मभि सारं । हरि रिति वदति सखी मनुवारं ।
५। श्लिष्यति चुंबति जलधर कल्पं । हरि रुप

गत इति तिमिर मनल्पे। ६। भवति विलंबि
नि विगलित लज्जा। विलपति रोदति वास
क सज्जा। ७। श्री जयदेव कवेरिद मुदितं।
रसिक जनं तनु तामपि मुदितम्। ८। किं
विश्राम्यसि कृष्ण भोगि भवने भांडीर भूमी
रुहे। भ्रातर्यासि न दृष्टि गोचर मितः सानन्द

गी नंदात्मजम्। राधाया वचनन्नदधग मुखो यं

गो दंति केरोपनो। गोविंदस्य जयंति सायम

तिथिः प्राशस्त्य गर्भा गिरः। ३। अत्रांतरे च

कुलटा कुल वर्त्म पात संजात पातक इव स्फु

टलांछन श्रीः। वृंदावनां तर मदीपय दं

शुजालै दिक सुंदरी वदन चंदन बिंदु

विंदुः । ३४ । प्रसरति शशधर बिंबे विहित
विलंबेच माधवे विधुरा विरचित विविध
विलापंसा परितापम् चकारोच्चैः । ३५ ।
विरह पांडु मुरारि मुखांबुज द्युति रयंति
रयंनपि वेदनाम् । विधुरतीव तनोति म
नोः भुवः सुहृदये हृदये मदन व्यथाम् । ३६

गी
गो

मनोभवानंदन चंदनानि प्रसीदरे दक्षिण
मुंच वामताम्। क्षणं जगत्प्राण विधाय मा
धवं पुरो मम प्राणहरो भविष्यसि।२०। बा
णान् विधेहि मलयानिल पंचबाण प्राणान्
गृहाण न गृहं पुनराश्रयिष्ये। किंते कृतां
तभगिनि क्षमया तरंगै रंगानि सिंच मम

शाम्पत देह दाहः ।२८। राग ललित ।ताल
।कश्चित समयेपि हरि रहहन ययौ व
ने । मम विफल मिद ममल रूप मपि यौ
वनं ।१। यामि देह मिह धारणं सखी जन
वचन वंचिता । ध्रु॰ । यदनु गमनाय नि
शि गमन मपि शीलिते । तेन मम हृदय

गी मित मसम शर कीलितं । २ । मम मरण
गो मेव वरमति वितथ केतना । किमिह विस
हामि विरहानल मचेतना । ३ । मा महह
वियु रयति मधुर मधु यामिनी । कापि हरि
मनु भवति कृत सुकृत कामिनी । ४ । ग्रह
ह कलयामि वलयादि मणि भूषणं । हरि

२८

29

विरह दहन वहनेन बहुदूषणे ।५। कुसुम
सुकुमार तनु मतनु शर लीलया । स्रग
पि हृदि हंति मामति विषम शीलया ।६।
अह मिह निवसामि न गणित वन वेतसा ।
स्मरति मधुसूदनो मामपि न चेतसा ।७।
हरि चरण शरण जय देव कवि भारती ।

गी
गो

वसन्त हरि युवति तिव कोमल कलावती ।
८। त्वाम प्राप्य मपि स्वयंवर परे हीरे दती
रेदरे। शंके सेदरि काल कूट मपिवन् महो
महानी पतिः। इत्यं एबं कथाभि रस्य मन
सो विद्विष्ण वहो वले। तयाया स्तन को
रको परि मिल ते ओ हरि पान्तुवः। ३९।

३०

30

ननु किं कामपि कामिनी मभिसृतः किं
वा कला केलिभि। बंद्धो बंधुभि रंधका रि
णिवना भ्यर्णे किमुद् भ्राम्यति । कांतः क्लां
त मना मना गपि पथि प्रस्थातुमे वाक्षमः ।
संकेती कृत मंजु वंजुललता कुंजेपि य
न्नागतः । ४० । अथा गता माधव मंतरेण

३०

गी सखी मियं वीक्ष्य विषाद मूकां । विशंकमा

गो ना रमितं कयापि जनार्द्दनं दृष्टवदे तदाह

।४।। राग ललित । ताल ।स्मर समरोचि

त विरचित वेशा गलित कुसुम दर विल

लित केशा ।।१।। कापि मधुरिपुणा विलसति

युवति रधिक गुणा । ध्रु० । हरि यरि रेमण

वलित विकारा उच्च कलशो परि तरलि
त हारा ।२। विचल दलक ललिता ननचं
द्रा । नदधर पान रभस कृत तंद्रा ।३। चं
चल कुंडल ललित कपोला । मुखरित
रशन जघन गति लोला ।४। दयित विलो
कित लज्जित हसिता । बहुविध कूजित

रति रस रसिता ।५। विपुल पुलक पृथुवे
पथुभंगा । श्वसित निमीलित विकसदने
गो ।६। श्रमजल कण भर सुभग शरीरा ।
परि पति तोरसि रति रण धीरा ।७। श्री
जय देव भणित हरि रमितम् । कलिक
लुष जनयतु परिशमितम् ।८। ।गग ।

ललित। ताल ।समुदित मदने रमणी
वदने चुंबन वलिता धरे। मृग मद तिलकं
लिखति सपुलकं मृग मिव रजनी करे।१।
रमते यमुना पुलिन वने विजय मुरारि
रधुना। ध्रु॰। घनचय रुचिरे रचयति चिकु
रे तरलित तरुणानने। कुरुवक कुसुमं

गी
गो

चापला हावभे रति पतिमृग कानने ।२। घ
टयति सुघने कुच युग गगने मृगमद रुचि
रुषिते । मणिसर ममलम् तारक पटलम्
नखपद शिशभूषिते ।३। जित विस शकले
मृदुभुज युगले करतल नलिनी दले । मर
कत वलयं मधुक[illegible]र निचयं वितरति हिम

3

शीतले ।४। रति गृह जघने विपुला पघने
मनसिज कनकासने । मणिमय रशनं तोर
ण हसने विकरति कृतवासने ।५। चरण
किसलये कमला निलये नखमणि गण
पूजिते । बहिरप वरणं यावक भरणं जन
यति हृदि योजिते ।६। रमयति सुभृशं का

गी गो

सपि महेशे खेल हलधर सोदरे । किमफल
वमसेविर मिह विरसे वद सखि विटपो दरे
।७। इह रस भणने कृतहरि गुणने मधुरिपु
पदसेवके । कलियुग चरितं न वसतु दुरि
तम् कविनृप जयदेवके ।८। राग ललित ।
ताल । अनिल तरल कुवलय

नयनेन। तपति न सा किसलय शयनेन।
॥१॥ सखि या रमिता वनमालिना। ध्रु। वि
कसित सरसिज ललित मुखेन। स्फुटति
न सा मनसिज विशिखेन।२। अमृत मधुर
मृदुतर वचनेन, ज्वलति न सा मलयज पव
नेन।३। स्थल जल रुह रुचि कर चरणेन।

गी
गो

लदति नसा हिमकरकिरणेन।४। सजल
जलद समुदय रुचिरेण। दहति नसा हृ
दि विरहभरेण।५। कनक निकष रुचि
शुचि वसनेन। श्वसिति नसा परिजन ह
सितेन।६। सकल भुवन जनवर तरुणे
न। वहति नसा रुजमतिकरुणेन।७। श्रीजयदेव

भणित वचनेन । प्रविशतु हरि रपि हृदय

मनेन ।८। १२। नायातः सखि निर्द्दयो यदि

शठ स्त्वन्दूति किं दूयसे । स्वछंद बहुवल्ल

भः स रमते किं तत्र ते दूषणं । पश्याद्य प्रि

य संगमाय दयित स्याकृष्य माणं गुणै रु

त्कंठार्त्ति भरा दिव स्फुट दिदं चेतः स्वयं या

गी
गो

स्थानि ।४२। राग ललित । ताल । निभृत
निकुंज गृहं गतया निशि रहसि निलीय व
सन्ते । चकित विलोकित सकल दिशा रति
रभस वशेन हसन्ते ।।। सखि हे केशि मदन मु
दारे । रमय मया सह मदन मनोरथ भावितया
सविकारे । ध्रु । प्रथम समागम लज्जितया

पटु चाटु शतै रनु कूले । मृदु मधुरस्मित
भाषितया शिथिली कृत जघन दुकूले ॥२॥
किसलय शयन निवेशितया चिरमुरसि
ममैव शयाने । कृतपरिरंभण चुंबनया
परिरभ्य कृताधर पाने ॥३॥ अलस निमीलि
त लोचनया पुलकावलि ललित कपोले ।

गी
गो

श्रमजल शकल कलेवर यावर मदन महा
दिति लोले। कोकिल कलरव कूजितया
जित मनसिज तंत्र विचारे। स्फुट कुसुमा
कुल कुंतलया नख लिखित घनस्तन
भारे।५। चरन रणित मणिनूपुरया परि
पूरित सुरत वितानं। मुखर विशृंखल मे

मेखलया सकच ग्रह चुंबन दाने ।६। रति
सुख समय रसाल सया दर मुकुलित नद
न सरोजे । निःसह निपतित तनुलतया
मधुसूदन मुदित मनोजे ।७। श्री जय दे
व भणित मिदमति शय मधु रिपु निधुव
न शीले । सुखमुत्कंठित राधिकया कथि

गी गो

न विनोदन सलीले । ८ । हरि व्याकुल गोकु
ला वनवश ऊठूल्य गोवईने । विभ्रहलव से
हरीभि रधिका नेदाचिरंतु विनः । दर्पणेव
नदर्पिना परनटीसिंहर मुद्रांकिनो । बाह्यगो
पतनो स्तनोतु भवनः श्रेयांसि कंसद्वि
षः ॥ ५३ ॥ अथ कथमपि यामिनी

विनीयस्मर शर जर्जरितापि सा प्रभाते ।
अननय वचनमव दंत मग्रे प्रणत मपि प्रि
य माह साभ्यसूयं । ४४ । राग ललित ।
ताल । रजनि जनित गुरु जागर राग
कषायित मल सनिमेषं । वहति नयन
मनु राग मिव स्फुट मुदित रसाभि निवे

गी
गो

शे ।१। याहि माधव याहि केशव मा वद कै
तव वादं ता मनु सर सरसीरुह लोचन या
तव हरति विषादम् ।ध्रु। कज्जल मलिन
विलोचन चुंबन विरचित नीलिम
रूपं । दशन वसन मरुणं तव कृ
ष्ण तनोति तनो रनुरूपं ॥ २ ॥

वपु रनु हरति नवस्मर संगर खरन खरक्ष

तरेखं। मरकत शकल कलितलि पेव

रतिजय लेखं।३। चरण कमल गलदल

क्त क सिक्त मिदं तव हृदय मुदारं। दर्शय

तीव बहि मदन द्रुम नव किसलय परि

वारं।४। दशन पदं भ दधर गत मम

गी जनयति चेतसि खेदं । कथयति कथम
गो पुनापि मया सह तव वपुरेव दमेदं ।५ व
द्धिविवमलिन नरेतव कुल मनोपि भवि
ष्यति नूनम् । कथ मथ वेवयसे जन मनु
गतम समशरज चर हनम् । ६ । भ्रमति
भवानवला कवलाय वनेषु किमत्र

५।

40

विविते। प्रथयति भूतनिकै ववयवय निर्द
य वाल चरिते।१। श्री जय देव भणितमरति
वंचित खेडित युवति विलापे। स्मरसमदा
मधुरे विवुधा विवुधालय तोपि दुरापे।८।
।५। नवेदे पश्यंत्याः भ्रमर दत्तवागाम्बहि रि
व प्रियापादालक्त छुरित महसण योति रूद

गी
गो

यं समाय प्रख्यात प्रणय भर भंगेन कित
व त्वदा लोकः शोका दपि किमपि लज्जो
जनयति । ४५ । पश्चापयो यर नदी परिवेम
लग्न काश्मीर सुद्दिन सुरोमध्य स्फन्दनम ।
अकात्तराग मिव खेलद नेग खेद खेदोत्त
सूव मत्तपूर यत्न प्रियेवः । ४८ । अत्रान्तरे मम

ण रोषवशा मसी मनिःश्वास निःसह मुखी

मुपेत्य सव्रीड मीक्षित सखी वदनं दिनांते सा

नंद गद्गद पदं हरि रित्युवाच ५९ परि हर कृता

तंके शंका त्वया सततं घन । स्तन जघनया का

न्ते स्वान्ते परा नवकाशिनि । विशति वितनो

रन्यो धन्यो न कोपि ममांतरं । प्रणयिनि परी रं

गी
तो

भारंभे विपेहि विपेयनाम।४८।सुमये विपेहिम
सि निर्दय दन्त देश दोर्वलि बंध निविड स्तन पीड
नानि।चेतसि मेव सुदमेचय पंचबाण चेडलको
उ दलनादसवः प्रयोह।४९।व्याप्य यति हृष्या
मोनं नलि मचंचय पंचमे।नहणिमधुरा लापे सला
पे विनोदय हष्टिभिः।सखि विभावी भावना व

हिमुंचन मुंचमां । स्वय मतिशय स्निग्ध मुग्धे

प्रियेयाय मुपस्थितः ॥१९॥ राग ललित । ताल

॥ वदसि यदि किंचिदपि दन्त रुचि कौमुदी

हरति दरति मिर मति घोरं । स्फुर दधर सीधवे

तव वदन चंद्रमा रोचयति लोचन चकोरं । प्रि

ये चारुशीले मुंचमयि मानमनिदानं । सपदि

गी
गो

मदनानलोदहति मम मानसं देहि मुखकमलमधु
पानं ॥ध्रु॥ सत्यमेवासि यदि सुदति मयि कोपिनी देहि
खर नयन शरघातं । घटय भुज बंधनं जनय रदखंडनं
येन वा भवति सुखजातं ॥२॥ त्वमसि मम भूषणं त्वम
सि मम जीवनं त्वमसि मम भव जलधि रत्नं भ
वतु भवतीह मयि सततम नुरोधिनी तत्र

मम हृदय मति यत्ने।।३।। नीलनलि नाभ मपि त
न्वि तव लोचनं धारयति कोक नद रूपं। कुसुम
शरबाण भावेन यदि रंजयसि कृष्ण मिदमेत
दनुरूपं।।४।। स्फुरतु कुच कुंभयो रुपरि मणि मंज
री रंजयतु तव हृदय देशं। रसतु रसनापि तव
घन जघन मंडले घोषयतु मन्मथ निदेशं ५ स्थल

कमल षंजन मम हृदय रंजन जनित रतिरंग प
रभागे । भण मसृण वाणि कर वाणि चरण द्वये
सरसलदस लक्तक रागे ।६। स्मरगरल खंडनं म
म शिरसि मंडनं देहि पद पल्लव मुदारं । ज्वलति
मयि दारुणो मदन कदनानलो हरतु तदुपाहि
तविकारं ।७। इति चटुल चाटु चारु मुरवैरिणो

राधिका मधुर वचन जातं । जयति पद्मावती र

मण जयदेव कवि भारती भणित मति शातं ।

८ १९ । बंधूक द्युति बांधवोय मधरः स्निग्धोमधू

कच्छविः । गंडे चंडि चकास्ति नील नलिन श्री

मोचने लोचने । नासाभ्येति तिलप्रसून पदवीं

कुंदाभ दंति प्रिये । प्रायस्त्वन्मुख सेवया विजय

गी
गो

ते विश्वं सशुष्पा शुषः ॥ ५ ॥ हश्यौनव मदालसेव दन

सिंदुसंदीपने ॥ गतिर्जित मनोरमा विजित रंभ भ्रू

हये ॥ रतिरत्नव कलावती रुचिर विडलेखे अवा ॥

वहो विडुपयौवने वहसि नलि रथीगता ॥ ५ ॥ स्रूप

ह्लवं पत्ररपेगा नरंगिनामिनि वाणागुणः श्रवणाणा

लिति निसरेणा नसा मनंग जय जंगम देवनाया म

हासि नि जितं

जगेति किमर्पितानि । ५२ । भ्रूचापे निहितः कटा
क्ष विशिखो निर्मातु मर्म व्यथां । श्यामात्मा कु
टिलः करोतु कबरी भारोपि मारोद्यमं । मोहंता
वदयंच तन्वि तनुतां बिंबाधरो रागवान् । सद्वृ
त्तः स्तन मंडलस्तव कथं प्राणैर्मम क्रीडति ५३
मानिनी मान विध्वंस दक्षो जयति सोयं मे मऊ

गी
गो

वेल समुद्भूतः श्रीमज्ञेपालकथनिः ५५ ना
मथ मन्मथ खिन्नो रतिरसभिन्नो विषादसम्पन्नो ।
अनुचिन्तित हरिचरितो कलहान्तरिता मुवाच
रहः सखी ५९ स्त्रिये यत्न कथासि यत्न गमासि स्त
धासि यद्रा गिणि । द्वेषयासि यद्धन्मुखे विमुखि
नं यानासि नमसि स्त्रिये । नयुकं विपरीतकारिणि

नव श्रीखंड चर्चा विषं शीतांशु स्तनयो र्हिमे

हुतवहः क्रीडा मुदो यातनः ७ राग ललित

ताल । हरि रभि सरति वहति मधु पवने

किमपर मधिक सुखे सखि भवने ॥ १ ॥ माध

वी माकुरु मानिनि मानमये । ध्रु । ताल

फला दपि गुरुमति सरसं । किमु विफली

गी
गो

ऊरुषे ऊव कलशे ।२। कनिन कथिन मिद
मनु पद मचिरे । मापरि हर हरि मनि शाय रु
चिरे किमिति विषीदसि रो दिषि विकला । वि
हसति युवति सभा तव विकला ४ जनयसि म
नसि किमिति गुरु खेदम । शृणु मम वचनम
नी हित भेदम ।५। हरि रुपयात वद

गी
गो

ऊरुषे ऊच कलशे ।२। कतिन कथित मिद
मत्रु पद मचिरं । मापरि हर हरि मति शय ह
चिरे किमिति विषीदसि रे दिषि विकला । वि
हसति युवति सभा तव विकला ४ जनयसि म
नसि किमिति गुरुखेदम । श्रृणु मम वचनम
नी हित भेदम ।५। हरि रूपयात वद

४६।

नवद्व मधुरे। किमिति करोषि हृदय मति वि
धुरे।६। सजल नलिन दल शीतल शयने ह
रि सव लोकय सफलय नयने।७। श्री जय
देव भणित मति ललितं। सुखयतु रसिक
जनं हरि चरितं।८।७। श्री राधिकाजीके
वचन दिये रति सखी समझा मोयं सखी वाह

गी
गो

मानिनी विषमिव सुधारश्मि यस्मिन् दुनोति म
नोगते। हृदय मदये तस्मिन् नेव पुनर्बलसे बलात्।
कुवलयदृशां वामः कामो निकामनिरंकुशः।
५८। गणयति गुणग्रामं भ्रामं श्रमादपि नेहते।
वहति च परितोषं दोषं विमुंचति दूरतः। यु
वतिषु वलत्तृष्णे कृष्णे विहारिणि मां

विना पुनरपि मनो वामे कामे करोति करोमि
किं ५९ प्रीतिं वस्तनुतां हरिः कुवलयापीडेन
सार्द्धं रणे। राधा पीन पयोधर स्मरण कृत्
कुंभेण संभेदवान्। यत्र स्विद्यति मीलति क्ष
णमथ क्षिप्ते द्विपे तत्क्षणान्। कंसस्यालम
भूज्जितं जितमिति व्यामोह कोलाहलः ।६०। स

गी
गो

सुचिरमनुनयेन प्रीणयित्वा मृगाक्षीं गतवति
कृतवेषे केशवे कुंजशय्यां । रचितरुचिरभूषां दृ
ष्टिमोषे प्रदोषे । स्फुरति निरवसादां कापि राधां ज
गाद ।१। सामां द्रक्ष्यति वक्ष्यति स्मर कथां प्र
त्यंग मालिंगनैः । प्रीतिं यास्यति रंस्यते सखि स
मागम्येति चिंताकुलाः । स त्वां पश्यति वेपते

पुलकयमा नेदति स्विद्यति। घयङ्क्वति मूर्छे
ति स्थिरतनमः शंजे निकुंजे प्रियः ।९। त्वद्वामे
न सखे समग्र मधुना निर्गमोत्र स्थले गतो ।
गोविंदस्य मनो रथे नच सखे प्राणे नमः सो
ढतो। कोकानो करुण स्वनेन सदृशी दीर्घा
मदभ्यर्थना। तन्मध्ये विकले विलंबन मसौ

गी
गे

रम्योऽभि सारवत्पोः ।६३। आश्लेषा दत्त चुंबना दत्त
नाबोलेबोदत्त सान्तज शोकोधा दत्तसंश्रमा दत्तर
ता ऐभा दत्त पीनयोः । अन्यासे गनयो श्रेमान् मि
लितयोः संभावयोर्जीवनतो । देपतो विहकोन
कोन नमस्सि श्रीउ विमिश्रो रमः ।६४। अवलोकिति
पदेजनं अवणयो स्वाधिक्ष रत्नावली भूहिरणा

50

मसरोज दाम कुचयोः कस्तूरिका पत्रके ।
धूर्त्ताना मभिसार सत्वरहृदां विष्वङ् निकुंजे
सखि । ध्वांतनील निचोल चारु सुदृशां प्रत्यंग
मालिंगति ।८५। काश्मीर गौर वपुषा मभि
सारिकाणा माबद्ध रेख मभितो रुचि मंज
रीभि । एतत्तमाल दलनील तमं तमिस्रं त

गी
गो

ष्येमहेमनिकषोपलतां तनोति ।८८। रागल
लित । ताल । विरचित चाटु वचन रचने चर
णे रचित प्रणिपाते । संप्रति मंजुलसी मनि
केलिशयनमनुयातं । मुग्धे मधु मथन मनुगत
मनुसर राधिके ध्रु॰ घन जघन स्तन भारभरे दरमन्थ
र चरण विहारे । मुखरित मणिमंजीर मुपैहि विधेहि

मगाल विकारे ।२। स्फुट रमणीय नवंनकली

जनमोहन मधुरिपु रावे । कुसुम शरासन शा

सन वंदिनि पिकनिकरे भजभावे ।३। अनिल

तरल किसलय निकरेण करेण लतानि कु

रंबं । प्रेरण मिव करभोरु करोति गति प्रति

मुंच विलंबं ।४। स्फुरित मनंग तरंग वशादि

गी
गो

वसचित हरि परिवेशे । एकमनोहरहारविम
लजलधारममुंकुचकुंभे ५ अधिगतमखिलस
खीभिरिदंतव वपुरपि रतिरणसज्जे । चंडि रणि
त रसनारवडिंडिम मभिसर सरस मलज्जे ६ स्म
रशरसुभग नखेन सखी ममलेख्य करेण सलीलं ।
चल वलय क्वणितै रवबोधय हरिमपि निजगतिशी

ले ।७। श्री जय देव भणित मधुरी कृत हारमु

दा सित वामे । हरि विनि हित मनसा मधि

तिष्ठतु कंठ तटी मविरामे ।८। ९। सा मां द्रक्ष

ति वक्ष्यति प्रियकथां प्रत्यंगमालिंगनैः । प्रीतिं

यास्यति रंस्यते सखि समागत्येति चिंताकुलः ।

स त्वां पश्यति वेपते पुलकयत्यानंदति स्विद्यति

गी
गो

प्रत्यक्षति मूर्छति स्थिरतमः कुंजे निकुंजे शिव :
१८ राग ललित । ताल । रतिसुखसारे गतम
भिसारे मदन मनो हर वेशं । नकुर नितं बिनि
गमन विलंबन मनु सरतं हृदयेशं । धीर समी
रे यमुना तीरे वसति वने वन माली गोपी पी
न पयोधर मर्दन चंचल कर युग शीली ।

क। नाम समेतं कृतसंकेतं वादयते मृदुवेणुं

बहु मनुते ननुते तनुसंगत पवन चलित मपि

रेणुं ।२। पतति पतत्रे विचलति पत्रे शंकित

भवदुपयानं। रचयति शयनं सचकित नय

नं पश्यति तव पन्थानं ।३। मुखरमधीरं

त्यजमंजीरं रिपुमिव केलि सुलोलं, चलसखि

गी
गो

कुंजे सति स्थिर कुंजे शीलय नील निचोले ।४।३४
सि भुजगे रूपहितहारे घन इव तरल वलाके नदि
हिवपीते रति विपरीते राजसि सुकृत विपाके ५
विगलित वसने परिहृत रशने घटय जघन
मपिधाने । किसलय शयने पंकज नयने निधिमि
व हर्ष निधाने ।८। हरिरभिमानी रजनि रिदानी

मिय मधियानि विगामे । कुरु मम वचनं सत्वर
रचनं पूरय मधु रिपुकामं ।७। श्री जय देव कृ
त हरि सेवे भणति परम रमणीयं । प्रमुदित
हृदयं हरिमति सदयं नमत सुकृत कमनी
यं ।८। ।११। समय चकितेन विन्यसंती दृशो ति
मिर पथिप्रति रुत मुहुः स्थित्वा मंद पदानि

गी
गो

वितन्वतो । कथमपि रहः प्राप्तामंगै रनंगतरं
गिभिः सुरति सुभगः सत्ताम्यपश्यत्युपैतु कृता
र्थताम् ९७ हारावली तरल कांचन कांचिदाम मं
जीर कंकण मणि द्युति दीपितस्य द्वारे निकुंज
निलयस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडावतीम् अथ सखी
निजगाद राधाम् । ९८ । राग ।

ललित । ताल । मंजुतर कुंजतल केलि
सदने विलस रति रभस हसित वदने ॥ प्रवि
श राधे माधव समीप मिह । ध्रु । नव भवद
शोकदल शयन सारे । विलस कुच कलश
तरल हारे ॥२॥ कुसुम चय रचित शुचि वासगेहे
विलस कुसुम सुकुमार देहे ॥३॥ चल मलयव

गी
गो

न पवन सुरभि शीते । विलस रति वलित ललि
तगीते ।४। विनत बहु वलिनव पल्लवघने ।
विलस चिर मलस पीन जघने ।५। मधुमुदि
त मधुप कुल कलित रावे विलस मदन रभस
भावे ।६। मधुर तरपिक निकर निनदमुखरे । विल
स दशन रुचि रुचिर शिखरे ।७। विहित पद्मा

वती हरति समाजे। भणति जयदेव कवि
राजराजे।।८।। सान्द्रा नन्द पुरन्दरादिदिविषद्वृंदै
रमंदा दरा। दानम्रै र्मुकुटेन्द्र नील मणिभिः
संदर्शितेंदीवरम्। स्वछन्द मकरन्द सुंदरग
लन मन्दाकिनी मेडरं। श्री गोविंद पदारविं
द मशुभ स्कंदाय वन्दामहे।।९। अहमिव नि

गी व सामि याहि राधा मनुनय मद्वचने चा नयेथाः

गो ।इति मधु रिपुणा सखी नियुक्ता स्वय मिद मे

त्य पुन जेगाद राधां।७०। ह्नोचितेन विरेवहत्र

यमति श्रान्तो भयं नापिनः केदर्पेणाव पा

त मिकृति सथा संवाय विंबायरे।ग्रसांक

न्नदले ऊरु चरण मिह भु देप लक्ष्मी लवङ्गीने

दाम इवोप सेवित पदांभोजे जनः संभ्रमः ७

सा ससाध्वस सानंद गोविंदे लोल लोचना । सिं

जान मंजु मंजीरं प्रविवेश निवेशनम ।८।। अ

तिक्रम्या पांगं श्रवण पथ पर्यन्त गमन । प्रया

सेनै वाक्ष्णो स्तरल तर तारम्पतितयोः । इदानीं

राधायाः प्रिय तम समालोक समये । पपात स्वे

गी
गो

दोनु भ्रमर पिव हर्षो मुनिकरः ।७३। भजन न्ता
न्तल्तान्ते कृत कपट केडू निविहित स्मिते या
ने गेहा हरिहरव हिनाली परिजने । भ्रियासेप
शेपन्ता ऽस्मर शर समा कृत सुभगे । सलज्जाया
लज्जा व्यगम दिव हरे मृग हशः । ७४ ।
राग ललित । ताल । राधा वदन वि

५८

58

लोकन विकसित विविध विकार विभंगे । ज
लनिधि मिव विधु मंडल दर्शन तरलित तुंग
तरंगे ॥१॥ हरि मे कर संचिर मभिलषित विला
सं । सा ददर्शि गुरु हर्ष शशम्वद वदन मनंग वि
कासं । ध्रु॰ । हार ममल तरतार मुरसि दधतं प
रिलंब्य विडम्बम । स्फुट तर फेन कदम्ब करं

गी
गो

विन मिव यमुना जल पूरे ।२। श्यामल मडल
कलेवर मंडल मधि गत गौर दुकूलं नील न
लिन मिव पीत पराग पटल भर वलयित मू
ले ।३। तरल दृगंचल चलन मनोहर वदन ज
नित रति रागं । स्फुट कमलोदर खेलित खंज
न युग मिव शारदित डागम ।४। वदन क

मल परिशीलन मिलित मिहिर सम कुंडल

शोभं । स्मित रुचि कुसुम समुल्लसिताधरप

ल्लव कृत रति लोभम् ।७। शशि किरण च्छु

रितो दरजलधर सुंदरस कुसुम केशे । तिमि

रोदित विधु मंडल निर्मल मलयज तिलक

निवेशे ।८। विपुल पुलक भर दंतुरितं रति

गी
गो

केलि कला भिर धीरं। मणि गण किरण समूह
समज्वल भूषण सुभग शरीरं ।७। श्री जय देव भ
णित विभव द्विगुणी कृत भूषण भारं। प्रणमत
हृदि विनिधाय हरिं सुचिरं सुकृतोदय सारं ।८।२।।
गणिवणि सखी हृदे मंद त्रपा भर निर्भर म
र परवशा कृतसखी नस्मि न स्मापि

60

८

नाधराम् । सरसमनसं दृष्ट्वा दृष्ट्वा मुहुर्नवपल

व । प्रसव शयने निक्षिप्ताक्षी मुवाच हरिः प्रि

यां ।७५। राग ललित । ताल । किशलय

शयन तले कुरु कामिनि चरण कमल वि

निवेशं । तव पद पल्लव वैरि पराभव मिद

मनु भवतु सुवेशं ।।१।। क्षण मधुना नाराय

गी
तो

ए मञगन मञमर गधिके। फ:। कर कम

लेन करोमि चरण महमा गमिना सि विहरंत

ए मुपऊरु शयनो परिमा मिव नुपुर मञग

नि सुरं ।२। वदन सुधानिधि गलित ममन मि

व रचय वचन मनु कूले। विरह मिवापन या

मि मयोपर तोयक मुरसि उकूले।३।

प्रिय परिरंभण रभसवलित मिव पुलकित

मतिदुरवापम् । मधुरिपु कुच कलशे विनिवे

शय शोषय मनसिज तापम् ४ अधर सुधारसमु

पनय भामिनि जीवय मृतमिव दासम् । त्वयि

विनि हितमनसं विरहानल दग्ध वपुष म

विलासम् ।५। शशि मुखि मुखरय मणि र

गी
गी

शना गुण मनु गुण कंठ निनादम । श्रुति युग
ले पिक रुत मम शमय चिरादव सादम ।८। मा
मति विफल रुषा विफली कृत मव लोकित
मधुनेदम । मीलति लज्जित मिव नयनं तव
विरम विसृज रति खेदम ।९। श्री जय देव क
थित मनुपद निगदित मधुरिपु मोदम । जन

नव रसिक जनेषु मनोरम रति रसभाव वि
नोदरम् ।८। २२। प्रत्यूहः पुलकांकुरेण निबि
डाश्लेषैर्निमेषेण च क्रीडाकूत विलोकिते पर
सुधा पाने कथा नर्मभिः । आनंदाधिगमेन म
न्मथकला युद्धेपि यस्मिन्नभूत् । उद्भूतः स तयो
र्बभूव सुरतः रंभः प्रियं भावुकः ।१। मीलद

गी थिलिना दोर्वलि हल्कम्पिनं वहो मीलिन मद्दिपौ
गो रुष रसः स्रीणं ऊनः सिप्पति ।७९। त्रसाः पाटल
पाणिजो किन गुरो निद्रा कषाये ह्रशौ । निर्इनो थर
शोणिमा विललिना स्तस्तजो मूर्द्धजाः । कोची
दामहस्लष्णो वलमिनि थानमिलोनै हेशो रोभिः
कामथौरे स्लद्धुनमथु ममर्म्मनः कोलिनं ।८०। आ
लोलाः केश

69

पाश स्खलित मलकैः स्वेदलोलौ कपोलौ । दृष्टा
बिंबाधरश्रीः कुच कलश रुचा हारिता हारयष्टिः
कांची कांचिद्गताशा स्तन जघन पटं पाणिना
च्छाद्य सद्यः। पश्यंती सत्रपंसा तदपि विलुलित
स्रग्धरेयं धुनोति ।८।। अथ कांते रतिश्रांत म
पि मंडन वांछया। निजगाद निराबाधा राधा

गी
गो

स्वाधीनभर्तृका ।८२। इति मनसा निगदंतं सुरतां
ते सा नितांते खिन्नांगी राधा जगाद सादर मिद
मानन्देन गोविन्दम् ।८३। राग ललित । ताल ।
कुरु यदुनंदन चंदन शिशिर तरेण करेण प
योधरे । मृगमद पत्र कमत्र मनो भव मंगल क
लश सहोदरे । निजगाद सायदु नन्दने क्री

इति हृदया नंदने । ध्रु । दयर त्रेवन लोचनि क

ज्जल मुञ्जलय प्रियलोचने । श्रलि ज्ञल गंजन

मंजन कं रति नायक मोचने ।१। नयन कुरंग

विकासिनि वासकरे ऋति मंउले । मनसिज

पाशा विलासकरे शुभवेष निवेशय मंउले ।२।

भ्रमर चये रचयेन सुपरि रुचिरं रुचिरे ममसे

गी
गो

मुखे। जिन कमले बिमले परिकलय नमेजन

कमलकेमुवे ।४। म्रग मद रस ललितं ललितेक

क तिलक मलिक रजनीकरे। विहित कलंक क

लेक मलानन विश्रमित श्रमशीकरे।५। ममरुगवे

रे विजरे जरुमानद मानस जघज बामरे। रतिगलि

ते ललिते जरुमानि पिरवेरि पिरवेउ कउामरे

९। सरस घने मम शंबर द्वारण वारण कंदरे
मणि रसना वसना भरणानि शुभाशय वा
सय सुंदरे।७। श्री जय देव वचसि जयदे सद
यं हृदयं कुरु मंडने। हरि चरण स्मरणा मृत
कृत कलि कलुष ज्वर खंडने।८। रचय कुच
योः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोलयो। घटय जघने

गी
गो

कांची मेच स्रजा कवरी भरं । कलय वलय श्रेणी
पाणौ पदे करु नूपुरा । इतिनिगदितः प्रीतः पी
तां वरोपि तथा करोत् । २४ । श्यामनीलनिचोल
मधुनशुरा मेवीन पीनोशुके । गायायाश्वकिने वि
लोकाहसिति सैरं सावी मेडले । श्रीउ चेचल मेचले
नयनयो गायाय गायानने । सैरं स्मेर सुखंबजो स्त

जगदानंदाय नंदात्मजः ।८५ पर्यंकीकृत
नागनायकफणा श्रेणी मणीनां गणे । सं
क्रांत प्रतिबिंब संकलनया विभ्रद्विभु प्रक्रियाम ।
पादांभोरुह धारि वारिधि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः
शतैः । कायव्यूह मिवाचर न्नुपचिती भूतोहरिः
पातुवः ।८६ । तिर्यक् कंठ विलोल मौलि तरलो

गी तैसस्य वंशोद्भव कीर्तिस्थान कला वधान लल
गो नालवेण केदलितः सुगुण मधुरे राधा सुके
लै सुधासारेवो मधुसूदनस्य ददतन्ते मे कहालो
मयः ।८७।८८। राग ललित । ताल   । संचर द
धर सुधा मधुरध्वनि मुखरित मोहन वंशं वलित
दृगंचल मौलि कपोल विलोल वतंसं

रासे हरि मिह विहित विलासं। स्मरति मनो
मम कृत परिहासं।ध्रु०। चंद्रक चारु मयूरशि
खंडक मंडल वलयित केशं। प्रचुर पुरंदर धनु
रनुरंजित मेदुर मुदिर सुवेशं।२। गोप कदंब
नितंबवती मुखचुंबन लंभित लोभं। बंधुजी
व मधुराधर पल्लव मुल्लसित स्मित शोभम्।३।

गी
गो

विपुल पुलक भुजपल्लव वलयित वल्लव युवति सह
स्रं। करचरणोरसि मणिगण भूषण किरण वि
भिन्नत मिस्रं।४। जलद पटल वलदिंदु विनिंदक
चंदन तिलकललाटं। पीन पयोधर परिसर मर्दन
निर्दय हृदय कपाटं।५। मणिमय मकर मनो
हर कुंडल मंडित गंड मुदारं। पीन वसन

मत्त मुनि मनुज सुरा सुरवर परिवारे । विशद
कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं शमयं
तं मामपि किमपि तरंग दनंग दृशा मनसा
रमयंतं ।७। श्री जय देव भणित मति सुंदर मो
हन मधुरिपु रूपं हरि चरण स्मरणं प्रति संप्र
ति पुण्यवता नुरूपम ।८। २४। हस्त स्रस्त

गी
गो

विलास वेशमनज्ञ भुवलिमहलवी हेदोन्मा
रि हगेनवीलित मति सेदाइगेउस्यले। माउ
हीला विलजित स्मित सुधा मुग्धानने कानने।
गोविंदे व्रत सुंदरी गणहृतं पश्यामि हृष्या
मिव।८८। श्रेनमोहन मौलि हूर्ग ननलन
मेदार विसंसमनः स्तब्धा कर्षणा दृष्टि हर्षणमहासे

द्रे कुरंगी दृशां । दृप्यद्दानव दूयमान दिविषद्दुर्वा
र दुःखापदां । भ्रंशः कंस रिपो व्यपोहयतु वो श्रे
यांसि वंशीरवः ।८९। यद्गांधर्व कलासु कौश
ल मनुध्यानंच यद्वैष्णवं । यच्छृंगार विवेक त
त्व मपियत् काव्येषु लीलायितं । तत्सर्वं जय
देव पंडित कवेः कृष्णैकतानात्मनः । सानं

दाः परि शोध यंतु सुधियः श्रीगीत गोविंदतः
८०। साध्वी माध्वीक चिंता नभवति भवतः शर्करे
शर्करासि। द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वा ममृत मृतमसि
क्षीरनीरं रसस्ते। माकंदं क्रंद कांता धरणि त
ले गच्छयच्छंति यावद्भावम् शृंगार सार स्वत
मय जय देवस्य विष्वग्वचांसि ॥ ८१ ॥

श्री भोज देव प्रभवस्य रामा देवी सुत श्री ज
य देवकस्य । पाराशरादि प्रियवर्ग कंठे श्री
गीत गोविंद कवित्व मस्तु ।१२। जय श्री वि
न्यस्तै महित इव मंदार कुसुमैः । स्वयं सिंदू
रेण द्विपरण मुदा मुद्रित इव । भुजा पीड
क्रीडा हत कुवलया पीडक रिपोः । प्रकीर्ण

गी

गो

सरिंवत्र जैयति भुजदंडो मुरारिनः ।१२। इति ग

गललित गीतगोविंद समाप्तः ॥ शुभमस्तु॰

रागिनी बेगाली ताल ४ झवपद ॥ जागोहो मेरेज
गार उजारे ॥ इनमम्याई ॥ कोटिक मन्मथ वारौं मम
कनि पर कमल नयन श्रीवियनके नोरे ॥ इसंनरा ॥
संग ग्वाल बछ्र सब लेके जमुनाके तीर बन जाउमवारे।
परमानंद कहति नंदरानी हर जिन जाऊ मेरे ब्रजराखे
वारे ॥ रागिनी बेगाली ताल ४ झवपद ॥

उठो नंद कुमार भयो भिंनु सारज गावत नंदरानी ॥ दंत
झ्याई ॥ झारीके जल वदन पखारत सुत कहि सारंग
पानी ॥ इंतनरा ॥ मांखन रोटी अरु मधु मेवा भावे
सो लीजे हो आनी ॥ सूर श्याम मुख निरखि जसोदा
मन ही मनजु सिहानी ॥ रागिनी बंगाली ताल ४
झवपद ॥ खेलिये आंगनमें कुगन मगन कोसिये

कलेवा ॥ इतस्याई ॥ छीकेतैं सारी दधि ऊपरतैं का
ढि पटी पहिर लेउ जगली फेटा बांधि लेहु मेवा ॥ इतयेन
ा ॥ ग्वालनके संग खेलन जाहु खेलन के मिस भूषन
ल्याउ कौंन परी प्यारे ललन निस दिना की टेवा ॥ सूरदा
स मदन मोहन घरहीं खेलो प्यारे ललन भंवरा चकडो
र देहो हंस चकोर परेवा ॥ रागिनी बंगाली ताल चंचल ॥

बे॰रा॰
२४
२५

मदन मोहन पीयकी जे कलेऊ ॥ [इतिस्थायी] हथमें रोटी माखनी मा

खन मिसरी आनी जोई जोई भावे सोई सोई लेऊ ॥ श्रेय

नरा ॥ खांड खीर और हत मिठाई मेवा आप खाऊ

और ग्वालन कौं देऊ ॥ व्रज पति पीय फेर खेलन को

जाउ वन सखल श्रीदामा कौं संग करि लेऊ ॥ ॥

रागिनी बेंगाली ताल एक ॥ नागरी नव लाल से

ग रंग भरी बाजे ॥ इत्यस्थाई ॥ श्याम अंस बाहु दियें

झंवरि झलकि झलकि हिये मंद मंद हसनि पिया को

टि मदन लाजे ॥ इत्यंतरा ॥ नकनमाल श्याम लाल ल

पटी अंग अंग वेलि निरखि सखी छबि सों केलि नूपुर

कल बाजे ॥ दामोदर हित सुवेस सोभित सखि सब

सुदेस नवनि कुंज भंवर गुंज कोकिल कलगाजे ॥८

बं॰ रा॰ २५
25

रागिनी बंगाली ताल झंप ॥ अथ खंडिता ॥ नव कुं
ज नैन रति रंग रंगे ॥ अस्थाई ॥ प्रिया प्रेम वली
रस रास रस मसे आलस वस माधुरी श्रंग श्रंगे ॥ अंत
रा: ॥ रूप जोवन चपलता गुमान आगरे मधुप खंज
न मीन मान भंगे ॥ कहै हुलराम कामिनि उरसिम
या गति गिरधरन खावद प्रति विवे संगे ॥ १५ ॥

रागिनी वेंगाली ताल एक ध्रुवपद ॥ प्रात काल पा
वे लाल आवनी वनी ॥ इत्यस्थाई ॥ उरसि मरगजी व
माल डगमगी स्वेदस चाल चरण हंदि मदन जीति क
रन होमनी ॥ इत्यंतरा ॥ प्रिया प्रेम अंग राग सगाबगी
स्वेंग पाग गलित वकरू हड अमज वारि कणसनी॰
हलदास प्रभु गिरधर कंठ स्वरन पत्र लिख्यो करज

बे॰रा॰
२६

लेखनी खनि खन राधिका रानी ॥ रागिनी बेगाली
ताल एक ध्रवपद ॥ आजनीके बने नेद नेदा ॥
इमपस्थाई ॥ वदन इंदु कीज्योति निरखिनभ चंद्रमा हा
र अंबुधि परन मवन वेदा ॥ इश्यंतरा ॥ श्रम खेदकण
गात लाल गिरवर धरन खवेदन मलयजख पवन
मेदा ॥ कमलदास नाथ डग मगत पग चलत मानों के

वर मेरे प्यारो प्रेम फंदा ॥ रागिनी बंगाली ताल ४ झवप

ट ॥ ललित वदन गलित कुसुम वलित केस श्रुति स्वेदस

नयन नलिन रंग मगे शशि सरद सवेरी ॥ रमाप्याई ॥

मरगजी उरमाल सिथिल कछू कछू चंदन की रेख रस

भरे लपटात गात मधुप अवेरी ॥ रत्नेंनरा ॥ सोभित

उर उरज लखि मनो परसनहिं परत पश्चिम नख छवि

वे·गा·
२७
27

परवारि डारी वेद रवैवरी ॥ बासुदेव लाल कल्यान गि
रि धरको सुजस गावत श्रीविठ्ठल पद कमल रज धना
प गावैरी ॥ रागिनी बेगाली ताल चंचत ॥ सोभित
सुभग लटपटी पाग भीने रसिक प्रिया अनुराग ॥ श्या
स्याई ॥ कुंकुम तिलक अलक मैं हरु छवि प्रहन सुम
न निसि जागा ॥ अंपनग ॥ कछु जंभात उबमाल मर

राजी पीक कपोल अधर मसि दागा ॥ चनभेज अभ्र गि
रधर नीके लागत आलस बस सब अंग विभाग ॥
रागिनी बंगाली ताल झंप ॥ भोर नमत्रुर बोले दी
नो जू रसमना ॥ इनपष्याई ॥ आनंदहै उठि थाप उगात
चरण आप आलस मैं नैन बैन अटपटी रसना ॥ इनपे
नरा ॥ संध्या जू कहि सिधारे वचन जीय में संभारे सक

चि के मंद मंद प्रकटित दसना ॥ वनभंज प्रभु गिरधर
न सिधारे तहां जहां रति रंग रस लपटाए वसना ॥
रागिनी बंगाली ताल चंचर ॥ झूमत मत गजज्यों च
लत डगमगे ॥ अस्थाई ॥ वतियां कहत सैन भरव
न आवत बैन आलस उनींदे नैन सोभित रंग भरे ॥
अंतरा ॥ नागर नंदकिसोर नीकी छवि प्राप भोर

अंग अंग रति रंग चिन्ह जगामगे ॥ चतुर्भुज प्रभु गिरि
धर नहीं लागी पलक चारि जाम जोति काम रहे ज्यूठ
उगामगे ॥ रागिनी बंगाली ताल चंप ॥ आज
छबि देत नयना आलस भरे रगामगे ॥ इत्यस्थाई ॥
रैन पलकन परी रार तरन जैकरी भोर आए लाल घर
न पगा उगामगे ॥ इत्यंतरा ॥ तन औरै गति भांति कहू

वे·रा·
२९

ने कहीन जाति कांति अद्भुत सकल अंग अंग जग मगो॰
वनभंज प्रभु गिरिधरन भली करी पलटि आप् वसन
सोंधे मिले मग मगो ॥ ॥ रागिनी वंगाली ताल फेप
भोर उग गगन पग जीति मनमथ चले ॥ अस्थाई ॥
सकल रजनी जगे नयन नहिं पल लगे अरुण आलस
चलन नयन लागन भले ॥ अंतरा ॥ करिव नगर

नटन चिन्ह प्रकटित करत बसन आभूषन ख्वरतरन
दल मले ॥ बनभंज दास प्रभु गिरिधर छवि बढी अ
धर काजर कुंकुम अंग अंग रले ॥ ॥ रागिनी बेंगा
ली ताल तीन ॥ उग मगात आपन नट नागर ॥ अस्थ
स्थाई ॥ कछु जंभात अलसात भोर भए अरुण नयन
घूमत निसि जागर ॥ अंतरा ॥ रसिक गोपाल ख्वर

वे·रा·
३·
30

नरनको जस सकल चिन्ह लाये उर कागर ।। चत्रभुज
प्रभु गिरिधरन कुंजगाढ़ रति पति जीतो रस हृवे
सागर ।। रागिनी बेंगाली ताल एक ।। भोरभ
ए आपहो ललन नीकी बनियें ।। इत्यस्थाई ।। जा
वक के उर चिन्ह नील पट प्यारी दीनें नयन आलस भी
ने जागे सब रनियें ।। इत्यंतरा ।। कुटी ग्रीवा वनदा

मन रचित अभिराम कैसें केउराम श्याम उरा मगी रा

तियां ॥ केशव दास अभ्रनंद सबन काहे लजान भले

जू सावरे गान जानी सब रतियां ॥ रागिनी बंगाली

ताल एक ॥ आउये जू भले आप कन सजवनहो ॥

इत्यस्थाई ॥ सरन संग्राम कीनैं सोतिनको सबदी

नैं पाहीरम भीने होयें मोको नो सवनहो ॥ इत्यंतरा ॥

वे॰ रा॰
३२

31

न मदेव बिसराई उपजी है प्रीति नई मोनो भई सवकारे
यों सोवनहो ॥ नारायण मोहि जानों बड़े वेरी करि मा
नो कहा जीयपनो अभिलाष जू सोवनहो ॥ ॥
रागिनी बेंगाली ताल ३१ ॥ अथ समदाय पद ॥
भोर भावतो श्रीगिरिधर देखों ॥ इतपस्याई ॥ सुभ
ग कपोल लोल लोचन छवि निरखिके नयन सुफल

करि लेखौं ॥ अंतरा ॥ नव सिव रूप अनूप विराज
न अंग अंग मन्मथ कोटि विसेखौं ॥ वनभंज प्रभु रस
रास रसिक को वडे भाग वल इकटक पेखौं ॥ रागिनी
वेगाली ८ ॥ श्याम सुंदर मोर भवन आगे होय
आवे ॥ अस्थाई ॥ कवहूं ख्वाव मंद हास मेरे साखि
खवकी रास कवहूं वैन कवहूं नैन सैन ही जनावे ॥

वे·रा·
३२

रहेनरा ॥ मेरी दृष्टिमयन वार उनकी उठनि स

वार रही नेनँ माट समेन सकलहो विसरावे ॥ वनमें

ज प्रभु गिरिधर अंग अंग कोटि मदन मूरति वलन

वनको नन क मनको विनेही भुरावे ॥ रागीनी

वंगाली ताल २॥ भोर भये नीको मावे हेस

न दिखाइये ॥ हनस्थाई ॥ रानिके दरसके विछुरे

दोऊ पलक मेरे वारि फेरि डारो नेकु नयननि सिराइ
ये ॥ अंतरा ॥ कोमल उन्नत बाहु पर अमित
भाव मेरी नेरी छाती छवि अधिक बढ़ाइये । श्री
न स्वामी गिरिधर सकल गुण निधान कहा कहे
सबेकरि आगाहीनें पाइये ॥ रागिनी बंगाली
ताल ३ ॥ तोहि ध्यान लाग्यो सजनी री वा

एक दृष्टि परे मोहन ॥ इनाप्याई ॥ देखियत बिदलि
खीसी टाढी सदन सिंधु जल हेद सनी ॥ इन्येनरा ॥
रूप निधान कमल लोचन नोहि मिले आज की रज
नी ॥ कृस दास प्रभु गोवर्द्धन धर रसिक जुवति डाव
हरनी ॥ रागिनी बेंगाली ताल १ ॥ अंखिन
में डरा यथ्या रो काहू देखन न दीजिये ॥ इनाप्याई ॥

हिये लगाइ सबै पाइ सब गुण निधि हरन जोई जोई

मन इच्छा होइ सोई सोई कोंन कीजिये ॥ मधुर मधु

र वचन कहन श्रवणनि सबै दीजिये ॥ निरमल प्र

भु नंद नंदन निरखि निरखि जीजिये ॥ ॥ रागि

नी बंगाली ताल ॥ पलना जागो भयो भो

र ॥ अस्थाई ॥ दूध दही पकवान मिठाई लीजिये

बे-रा
३५
34

माखन चोर ॥ अंतरा ॥ विकसे कमल विमल वा
नी सी बोलन लगे पंछी चहुंओर ॥ रसिक प्रीतम सो
कहति नंदरानी सुनि आवो बैठो गोद हाहा नंद किशोर
रागिनी बंगाली ताल ८॥ वृंदाबन नवनि कुंज
ठाढे उठि भोर ॥ अस्थाई ॥ बांह जोरि वदन मोरि
हंसत सखनरनिको करि चितवत पुनि कछु लजाइने

ननिकी केर ॥ इत्यंतरा ॥ करत कवहुं वेणुनाद ग्रथ
रतिपाई ॥ सुधा स्वाद पंछीगण प्रभ दिन मन वोलत
वडु शोर ॥ रसिक प्रीतम छवि निहारि थकल्यो घन
जिय विचारि वारवार उमगि नहो नाचत है मोर ॥
रागिनी वेंगाली ताल ८ ॥ श्री विठलेश विठले
श रसना जपमेरी ॥ इतस्थाई ॥ ग्रेथनि कोपही सार

वे. रा.
३५
35

याही मैं होत पार वार वार वार कहत तोसों नंदहित मेरी

श्रंवनता ॥ अनत ऊत भलो तोर वेरा कह्यो करहि मोरम

जिले सिरमोर नाथहिं सकल सवेदकेरी ॥ जगत ज

नक सहाय प्रेम पुंज सुजस गाय हर करो अमद वान

विषया अक फेरी ॥ रागिनी बंगाली ताल ठं १ ॥

श्री विठल नाथ ज्हके चरण शरणे ॥ इनपस्थाई ॥ श्रीव

फा. 13

ल्लभ नंदने कलि कल्मष खंडने परम प्रकर्षे वेणापहरने ॥

इत्यंतरा ॥ सकल दखदारणं भवसिंधु तारणं जनहित

लीला देहधरणं ॥ कान्हरदास प्रभु सब सुख सागरं भू

तले दृढ भक्ति भाव करणं ॥ रागिनी बेगाली ताल ८

नैन भर देखौ गिरधर को कमला सुख ॥ इत्यस्थाई

मंगल आरती करी मानही वारत निरखत होत परम सु

चै.रा.
३६
36

खे ॥ धनंतरा ॥ लोचन बिसाल छबि संचि हदे मेंय
रो कृपा अव लोकन चार मकरंदिन राखे ॥ चत्रभुज
दास प्रभु आनंद निधि रूप निरखि करो दूरि सब है
नि को बिरह दुख ॥ रागिनी बेंगाली ताल ३
मंगल आरती गोपाल की ॥ धनयश्राई ॥ नित उठि
मंगल होत निरखि मुख चित वन नैन बिसालकी.

इत्यंतरा ॥ मंगल रूप स्याम सुंदर को मंगल छवि
भृकुटि भाल की ॥ ब्रजभूषन दास सदा मंगल निधि
बानिक गिर धर लाल की ॥ रागिनी बंगाली ताल ३
प्यारी ग्रीवा भुज मेलि न्रत्यत पीय सुजान ॥ इत प्यारी
मुदित परस्पर लेत गति में गति गुण रासि गाये गिरि
धरन गुण निधान ॥ इत्यंतरा ॥ सरस मुरली धुनि सो

मिले सप्त स्वर गावत भैरव राग ध्रुव धरतान वंधान·
वनभंज ध्रुव श्याम श्यामा की नटन देखि रीझे ख
ग मृगावन थकित व्योम विमान ॥ रागिनी वं
गाली ताल ८॥ नितत गुपाल संग राधिका
वनी ॥ इति ध्रुवस्थाई ॥ वाजू देउ भजत मेलि मंड
ल मधि करत केलि सरस गान श्याम करैं संग भा

मिनी ॥ इत्यंतरा ॥ मोर मुकुट कुंडल छबि कांछ
नी बनी बिचित्र झलकत उर हार बिमल चांकित
चांदनी ॥ परम मुदित सुरनर मुनि बरषत सब कु
सुम निवारति तन मन प्राण कृस्न दास स्वामिनी
रागिनी बंगाली ताल ८ ॥ झवपट ॥ ॥
मोरनके मंडल मैं नाचत पिय प्यारी ॥ इतिश्रस्थाई

वे॰रा॰
३८
38

सिखवत सब तान मान सी खेति लखि डरनि मुरनि
हो हो हो होके धाए देनहैं कर नारी ॥ इत्यंतरा ॥
मधुरे सुर राग लेत रागिनी सो मिले तान रीझत
लपटात दोऊ भरि भरि अंकवारी ॥ श्रीविठ्ठल
मेवा खेलत बोलत तता थेई थेई विहरत गिरि
धारी लाल सुंदरि नवनारी ॥ इति श्रीभैरवः ॥

रागिनी बेंगाली ताल ३ ध्रुवपद कुंभजीका ॥
मंगल माधो नाम उचार ॥ मंगल वदन कमल कर मंग
ल मंगल जनहि सदा संभार ॥ इति अस्थाई ॥ देखत मं
गल पूजत मंगल गावत मंगल वाचत उदार ॥ इत्यंतरा ॥
मंगल श्रवण कथारस मंगल मंगल तन वसुदेव कुमार ॥
गोकुल मंगल मधुवन मंगल मंगल रुचि वृंदावन चंद ॥

वे॰गा॰
३९
39

मंगल करन गोवर्द्धन धारी मंगल भेष यशोदानंद ॥
मंगल धेनु रेनु भुव मंगल मंगल मधुर बजावत बेनु
मंगल गोप वधू परिरंभन मंगल कालिंदी पय फेनु
मंगल चरण कमल मणि मंगल मंगल कीरति ज
गत निवास ॥ अब दिन मंगल ध्यान धरत मुनि
मंगल मति परमानंद दास ॥ इति श्री भोगाः ॥

रागिनी बेगाली ताल ॥ उठो हो गोपाल काल
हहो थोरी गैया ॥ इतिअस्थाई ॥ मघ हूध मषि पीव
डु मैदा ॥ भोर भयो वननभवर बोले ॥ घरघर थोव
हार सब खोले ॥ तमरे सखो बुलावन आय् ॥ कु
ल कुल कहि मंगल गाय् ॥ गोपी गई मथ निदा थो
वै ॥ अपनै अपनौ दधी विलोवै ॥ भूषन वसन प

वे॰ग॰
४॰
५०

लटि पटि गाऊ । वेदन तिलक ललाट बनाऊ ॥ चार भुजा गोवर्द्धन धारी ॥ मदन छवि पर बलि गइ महतारी ॥ रागिनी बेगाली ताल ८ ॥ उठे नंद लाल खनत जननी मधुर बानी ॥ इमप्याई ॥ आलस भरे नैन उठे सोभा की खानी ॥ इसंतरा ॥ गोपी जनन्य किनहियें चित बनि सब दासी ॥ नैन कवि चकोर

चंदन वदन प्रीति बाढी ॥ माता जल झारी लियें कम
ल मुख पखारिव ॥ नीमही की परस करत आलस विसा
रेव ॥ सखा हार बाढे सब टेरत हैं तमकें ॥ यमुना
तट चलो श्याम चारन गोधन कूं ॥ सखा सहित जें
वड़वलि भोजन कछु कीनें ॥ सूर श्याम हलधर
संग सखा बाल लीनें ॥ रागिनी बंगाली ताल ८

वे॰रा॰
५८

जैये वह देस जहां नंद नंदन भेटिये ॥ इत्यादि ॥ निर
खिये मुख कमल कांति विरह ताप मेटिये ॥ इत्यंतरा
सुंदर मुख रुप सुधा लोचन पुट पीजिये ॥ लंपट ल
व निमिष रहित अंचय अंचय जीजिये ॥ नख सिख
सुड अंग अंग कोमल कर परसिये ॥ सुक सनक भाव
सो भजि मन क्रम वच सरसिये ॥ रास हास सुव विलास

लीला सुखे पाइये ॥ भक्तनके हृदय सहित रस निधि

अवगाहिये ॥ इह अभिलाष अंतर गति श्रानंनाथ हरिये

सागर करुणा उदार विविध ताप हरिये ॥ छिन छिन

पल कोटि कलप बीतत अति भारी ॥ परमानंद कल्पत

हृदीनन उरवे हारी ॥ रागिनी बेंगाली ताल ३ ॥

विललित करपल्लव मउबैंन ॥ सम्याई ॥ हरषित

डेकुन आवत येन ॥ इत्यंतरा ॥ कोटि मदन द्युति श्याम
शरीर ॥ विपनि कलप तरु यमुना तीर ॥ दहिणा चर
ण चरण परधरे ॥ बांम अंशशम्भू कुंडल चले ॥ वक्षह वे
द वनधातु प्रवाले ॥ मणि मुक्ता गुंजा फलमाल ॥ देख
न चलउ हेम नंदलाल ॥ ललित त्रिभंगी मदन गोपाल॰
रागिनी बंगाली ताल १ ॥ श्रीकृष्ण जीको ध्यान

मेरे निश दिनारी माई ॥ इत्यस्थाई ॥ मनके महल
प्रीति अंजनासैं यडराई ॥ इत्यंतरा ॥ सांवरे बरन
कोमल चरण नख देखे चकचोंधी होत पायनेउर पै
जनी सो विधिने बनाई ॥ दाहिने पद पद्मनातें टेढे य
रत आलीरी ऐसे चरण डखके हरनहे सदा सुखदाई ॥
लाल इजार ताके बीच कंचन केनार लगे कांकनी पर्वरे